

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 नवम्बर, 2022
डाक प्रेषण तिथि 10 नवम्बर, 2022

वर्ष : 80 अंक : 11
मार्गशीर्ष, 2079 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नवम्बर, 2022



Website : www.jinwani.in

व्यसनमुक्त भारत सुखी एवं समृद्ध भारत बन सकता है।

— आचार्यश्री हीरा

अंक सौजन्य

श्री महावीरय नमः

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणभयो नमः

॥ जय गुरु हीरा ॥

॥ जय गुरु महेंद्र ॥

॥ जय गुरु मान ॥

ज्ञान, विवेक, शुभभाव एवं शुभ रुचि के अभाव में मानव बाह्य पुण्य का फल
पाकर श्री नीचे गिर जाता है।
-आचार्यश्री हस्ती

अमान के लिए सहयोग करना व्यक्ति का कर्तव्य है, सहयोग से ही संस्थाएँ चलती
हैं। जो देगा, वह तिरेगा।
-आचार्यश्री हीरा



उदारमना, दृढ़निष्ठावान, श्रावकरत्न
स्व. श्री बजरंगलालजी सर्राफ
स्वर्गवास : 2012



धर्मनिष्ठ, श्रद्धाशील, श्राविकारत्न
स्व. श्रीमती सूरजदेवीजी जैन
स्वर्गवास : 1991

:: श्रद्धावन्त ::

सुपुत्र-सुपुत्रवधू :: स्व. महावीर प्रसाद-श्रीमती चमेली देवी
सुबाहु कुमार-श्रीमती सन्तोष देवी
हेमन्त कुमार-श्रीमती अनुराधा

सुपौत्र-सुपौत्रवधू :: मनोज-संगीता, मनीष (सी.ए.)-मीनू
विजय-कनिका, विकास-मीनाक्षी

प्रपौत्र-प्रपौत्रियाँ :: मनस्वी, प्रतीक, ईनिका, पर्व, मोक्ष, युग, उत्सव,
चिरायु एवं समस्त रोहिल्या परिवार

निवास स्थान :: 82, बालमन्दिर कॉलोनी, बजरिया, सवाईमाधोपुर-322001 (राज.)

अंक सौजन्य

॥ जय गुरु हीरा ॥

श्री महावीराय नमः

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः

॥ जय गुरु महेन्द्र ॥

॥ जय गुरु मान ॥

अपशब्द के प्रत्युत्तर में निरुत्तर रहना, अपशब्द बोलने वाले को हराने की सर्वोत्तम कला है।

-आचार्यश्री हस्ती

घर-परिवार में संस्कार होंगे तो वह घर स्वर्ग-सा बन सकता है, अन्यथा आज कहीं जाकर देख लेना न शान्ति है, न समाधि है।

-आचार्यश्री हीरा



परम गुरुभक्त, उदारमना श्रावकरत्न
श्रेष्ठिवर्य श्री उमरावमल सा सुराणा
जन्म 01-04-1929, स्वर्गवास 02-11-2016

:: श्रद्धावन्त ::

धर्मसहायिका

:: श्रीमती सायरदेवी सुराणा

सुपुत्र-सुपुत्रवधू

:: श्रीपाल मल - मधु सुराणा

सुपौत्र-सुपौत्रवधू

:: चिराग - लक्ष्या सुराणा

सुपुत्री-कँवर सा

:: श्रीमती सन्तोष - श्री राजेन्द्र कुमार सा ढड्डा, मुम्बई

सुपौत्री-कँवर सा

:: श्रीमती अंकिता - श्री विनयचन्द्र सा बैद, कलकत्ता

सुपौत्री-कँवर सा

:: श्रीमती करिश्मा - श्री ऋषभ सा दुग्गड, कलकत्ता

(नागौर वाले, हाल निवासी - चेन्नई)

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrjssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, 2705088
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

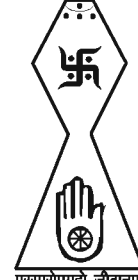
नौरतनमल मेहता, जोधपुर
त्रिलोकचन्द जैन, जयपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्पररोफ़ाहो जीवनाम्

ब्रह्म ब्रह्महिं ठाणेहिं,
सिक्खिआसीलेत्ति वुच्चइ।
ब्रह्मस्सिरे सया दंते,
न य मम्ममुदाहारे

-उत्तराध्ययन सूत्र, 11.4

आठ गुणों से युक्त मनुज,
शिक्षा का होता अधिकारी।
ना हास्यशील और दान्त सदा,
ना मर्म प्रकाशे दुःखकारी।।

नवम्बर, 2022

वीर निर्वाण सम्वत्, 2549

मार्गशीर्ष, 2079

वर्ष 80

अंक 11

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 8000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/सहयोग राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में NEFT/RTGS से जमा कराकर जमापत्री के साथ पेन नं. भी (काउन्टर-प्रति) श्री अनिलजी जैन के व्हाट्स एप नं. 9314635755 पर भेजें।

जिनवाणी में प्रदत्त सहयोग राशि पर आयकर में 80G की छूट उपलब्ध है।

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	निर्व्यसनता का अभियान	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-डॉ. धर्मचन्द जैन	10
विचार-वारिधि-	विचारशुद्धि के सूत्र	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	आत्मबोध प्राप्त करें आध्यात्मिक शिक्षण के उद्देश्य : ज्ञानार्जन एवं आत्मोन्नयन निर्दोष बनने की साधना हेतु पुरुषार्थ अभिनिष्क्रमण यात्रा और शुभ प्रवृत्तियों का पोषण पुस्तकों की उपयोगिता	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. -भावीआचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. -तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. -श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. -श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.	12 16 19 22 26
60वाँ दीक्षा-दिवस- शोधालेख-	संघनायक पूज्य गुरुदेव का प्रभावी व्यक्तित्व जैन परम्परा में रात्रिभोजन-त्याग : वसुनन्दि श्रावकाचार के विशेष सन्दर्भ में	-श्री नौरतनमल मेहता -श्रीमती वर्षा जैन	30 34
जीवन-व्यवहार-	अनमोल मोती (8) क्रोध विजय ही क्षमा धर्म लोभ	-श्री पी.शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ' -डॉ. विमलचन्द्र जैन	39 42
अध्यात्म-	आचार्य सिद्धसेन दिवाकर एवं सन्मतितर्क	-डॉ. अनिल कुमार जैन	40
इतिहास-	अपने लक्ष्यों से भटक गए हैं कुछ स्था	-श्रीमती उज्ज्वल डागा	44
युवा-स्तम्भ-	Social Peace with special reference to the Jaina concept of Ananta.....	-श्री जयदीप ढहा -Kashmira Ketan Shah	46 47
English-section	बढ़ती असहिष्णुता और घटते मानवीय मूल्य कठिन दौर में भी नहीं मानेंगे हार	-श्री पारसमल चण्डालिया -श्री गौतम पारख	54 58
परिवार-स्तम्भ-	शोध एवं सृजन में सातत्य आवश्यक	-डॉ. दिलीप धींग	60
प्रासङ्गिक-	सुरों की सरगम : गुरु हीरा का जीवन	-सौ. अनिता किशोर लुंकड़	61
शोध-स्वाध्याय-	पीने योग्य शक्तिवर्धक पानी कैसा हो?	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	63
भावाभिव्यक्ति-	कल्याण तुम्हारा चाहो तो	-श्री सुशील चाणोदिया	15
स्वास्थ्य-विज्ञान-	में मूढ़ व्यक्ति	-डॉ. रमेश 'मयंक'	25
गीत/कविता-	गुरु गुणगान भावी आचार्यश्री महेन्द्र गुणगान स्वयं से वार्तालाप दीक्षा दिवस गणिवर का मुझे ज्ञान दो, वरदान दो प्रभु	-श्री विजेन्द्र जैन -महासती श्री रुचिताजी म.सा. -श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक' -श्री मनमोहनचन्द बाफना -श्री मोहन कोठारी 'विनर'	33 45 66 89 89
विचार/चिन्तन-	बुढ़ापे को कीजिए सार्थक	-श्री नवरतन डागा	62
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	67
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित -संकलित	69 90
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

निर्व्यसनता का अभियान

डॉ. धर्मचन्द्र जैन

सद् विचारों एवं सत्प्रवृत्तियों को सम्पूर्ण देश एवं विश्व तक प्रसारित-प्रचारित करने में तथा सर्व हित के कार्य करने में जैन समाज एक अग्रणी एवं शक्ति सम्पन्न समाज है। आवश्यकता है कार्य को निष्ठापूर्वक हाथ में लेने की। जैन समाज के लोग बुद्धिसम्पन्न एवं गुणसम्पन्न होने के साथ सकारात्मक सोच के धनी भी हैं। वे अपने तीर्थंकरों एवं गुरुओं के उपदेशों का आदर करते हैं। प्रायः जैन समाज के लोग अपने काम-धन्धों में व्यस्त होने के कारण सर्व हितकारी कार्यों के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाते हैं, किन्तु यदि वे ठान लें तो दुनिया की दिशा को बदल सकते हैं। नई पीढ़ी दिशाविहीन है; उसे सद्विचारों के साथ दिशा देने की आवश्यकता है।

जैन आचार संहिता के अनुसार उन धन्धों को करने का निषेध है जिनसे मनुष्य मदिरा, मांस, जुआ आदि कार्यों में संलग्न होता है। ऐसे सात कुव्यसन माने गये हैं, जिनके कारण मनुष्य विपत्ति में पड़ता है-1. मद्य 2. मांस 3. जुआ 4. चोरी 5. शिकार 6. परस्त्री-गमन एवं 7. वेश्या-गमन। ये प्रवृत्तियाँ मनुष्य के शरीर एवं चित्त दोनों को विकृत बनाती हैं। वचनों में भी वह अविश्वसनीय बनता है। ये सातों व्यसन स्वयं को एवं परिवार को बर्बाद करने वाले हैं। एक बार इनकी गिरफ्त में आने पर इनके जाल से निकलना दृढ़ संकल्प शक्ति के बिना सम्भव नहीं है। सन्त-महात्माओं के समक्ष प्रतिज्ञा लेकर कोई इनसे मुक्त हो सकता है। इनके छूटने पर स्वयं का जीवन तो सुखी होता ही है परिवार भी प्रसन्नता का अनुभव करता है।

व्यसनमुक्ति की प्रबल प्रेरणा करने वाले करुणानिधान पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 60वाँ दीक्षा दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी विक्रम

सम्बत् 2079, 30 अक्टूबर, 2022 को उपस्थित हुआ। एक वर्ष पश्चात् उनकी पावन प्रब्रज्या को 60 वर्ष पूर्ण हो जायेंगे। सामायिक-स्वाध्याय की प्रबल प्रेरणा के साथ बालकों में संस्कार, रात्रिभोजन-त्याग, आजीवनशील व्रत आदि विभिन्न अभियानों के साथ आपकी व्यसनमुक्ति हेतु प्रबल प्रेरणा रहती है। श्रावकों द्वारा आपके अभियान को उद्घोष के रूप में इस प्रकार उच्चारित किया जाता है-“गुरु हीरा का यह सन्देश : व्यसनमुक्त हो सारा देश।”

गुरु हीरा के इस संदेश को इस बार श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जयपुर ने जन-जन तक पहुँचाने का अभियान प्रारम्भ किया है। पूज्य आचार्यप्रवर के आज्ञानुवर्ती सेवाभावी श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा., साध्वीप्रमुखा परम विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. की सत्प्रेरणा से जयपुर रत्नसंघ के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत के नेतृत्व में संघ के सदस्यों एवं प्रबुद्ध तथा समर्पित कार्यकर्ताओं के सहयोग से जयपुर में दो प्रकार के कार्य हाथ में लिये गये-1. विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्रों को निर्व्यसनता की प्रभावी प्रेरणा 2. व्यसनमुक्ति हेतु शहर में जागरूकता रैली।

20 अक्टूबर, 2022 को सुबोध बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय साँगानेरी गेट से जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। इस रैली में विद्यालय की छात्राओं एवं सुबोध शिक्षा समिति के अन्य विद्यालयों तथा आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के छात्रों के हाथों में व्यसनमुक्ति अभियान से सम्बन्धित उद्घोष वाक्यों से अंकित तख्तियाँ थीं तथा सभी नारे लगा रहे थे-घर-घर गूँजे एक ही नारा : व्यसनमुक्त हो देश हमारा, गुरु

हीरा से प्रेरणा पायें : व्यसनमुक्त जीवन अपनायें, एक दो एक दो : सिगरेट पीना छोड़ दो, एक दो एक दो, शराब पीना छोड़ दो आदि। उनके पीछे श्राविका मण्डल, युवती मण्डल, युवक परिषद् एवं श्रावक संघ के सम्पूर्ण जयपुर के अनेक सदस्य भी निर्व्यसनता से सम्बद्ध नारे लगाते हुए चल रहे थे। रैली में चलने वालों की संख्या लगभग 1700 हो गई थी। सभी अनुशासन के साथ चल रहे थे। इस रैली का यू-ट्यूब चैनल पर सीधा प्रसारण हो रहा था, जिससे देश-विदेश में इस रैली को सीधे देखा गया। अभी भी यह यू-ट्यूब पर उपलब्ध होने से पुनः देखी जा सकती है। इस जागरूकता रैली से जयपुर शहर में एवं देश में सकारात्मक सन्देश गया। लोगों को यह अनुभव हुआ कि ऐसा भी समुदाय है जो जनहित में इस तरह की रैली का आयोजन करता है। प्रायः रैलियों का आयोजन अपनी माँगों हेतु अथवा विशेष दिवसों पर किया जाता है, किन्तु यह रैली मादक पदार्थों-गुटखा, शराब, अफीम, गाँजा, हेरोइन, सिगरेट, हुक्का आदि के प्रयोग से होने वाली हानियों के प्रति लोगों को सचेत कर रही थी। इसके साथ ही मांसाहार से होने वाली हानियों को उजागर कर शाकाहार अपनाने की प्रेरणा कर रही थी। मांसाहार जहाँ शरीर में रोगवर्धक होता है वहाँ निरिह पशुओं के प्रति क्रूरता का भी द्योतक है। पशु-पक्षी भी त्रस पञ्चेन्द्रिय प्राणी हैं, वे भी जीना चाहते हैं। उनको अपने भोजन का अंग बनाना मानवता के विरुद्ध है। अन्य व्यसन भी मानवता के विनाशक हैं। श्रावक संघ के द्वारा अपने अभियान में विशेष बल मादक पदार्थों एवं मांसाहार के त्याग पर दिया गया। सबने बढ़-चढ़कर रैली में भाग लिया तथा पूज्य गुरुदेव के सन्देश को जन-जन तक पहुँचाने में अपनी भागीदारी निभायी।

विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में व्यसनमुक्ति की प्रेरणा हेतु 10 अक्टूबर, 2022 से कार्यक्रम का शुभारम्भ सुबोध महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय सांगानेर से हुआ। सुबोध शिक्षा समिति के अन्तर्गत कार्यरत लगभग 10 संस्थाओं में समस्त छात्र-छात्राओं को व्यसनमुक्ति हेतु प्रेरित किया जा चुका है। इन

संस्थाओं में कुशल वक्ताओं के द्वारा छात्र-छात्राओं को रोचक शैली में व्यसनों की हानियाँ प्रस्तुत करते हुए इनका सेवन नहीं करने हेतु प्रेरित किया गया। प्रेरणाप्रद वक्तव्यों को सुनकर उसी समय प्रसन्न मन से छात्र-छात्राओं द्वारा इन व्यसनों का सेवन नहीं करने हेतु संकल्पपत्र भी भरे गये। सूचना के अनुसार अब तक लगभग 2400 छात्र-छात्राओं ने संकल्प पत्र भरे हैं। इस अभियान की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। सुबोध महिला पी.जी. महाविद्यालय रामबाग, सुबोध बालिका विद्यालय सांगानेरी गेट, सुबोध पब्लिक स्कूल रामबाग, सुबोध ग्लोबल कॉलेज सीतापुरा, सुबोध महिला पी.जी. कॉलेज सांगानेर, सुबोध पी.जी. कॉलेज रागबाग, सुबोध पब्लिक स्कूल सांगानेर, सुबोध लॉ कॉलेज मानसरोवर आदि संस्थाओं में श्री मनीषजी मेहता-कार्याध्यक्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री रितुलजी पटवा-कोषाध्यक्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, श्री निपुणजी डागा-उपाध्यक्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री दिलीपजी जैन-अधिष्ठाता आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, श्रीमती शिपिकाजी जैन, श्रीमती नीलिमाजी गोखरू, श्रीमती शिखाजी, श्रीमती खुशबूजी कर्णावट, श्रीमती संगीताजी लोढ़ा-सचिव युवती मण्डल आदि युवा वक्ताओं के द्वारा छात्र-छात्राओं के मनोविज्ञान को समझते हुए प्रभावी ढंग से प्रस्तुति दी गई। कहीं प्रश्नोत्तर शैली में तो कहीं विश्लेषणात्मक ढंग से विषय का प्रतिपादन किया गया। सभी संस्थाओं के प्राचार्यों ने भी इस प्रेरणा का समर्थन किया। बालक-बालिकाओं ने प्रश्न भी किये, जिनके वक्ताओं द्वारा समुचित समाधान किये गये। रत्नसंघ के कतिपय पदाधिकारी भी वक्तव्य के समय उपस्थित रहे। इन वक्तव्यों की सफलता को देखते हुए संघ आगे भी इस अभियान को जारी रखना चाहता है।

मादक पदार्थ शरीर में नशा उत्पन्न करते हैं तथा चेतना भी उससे प्रभावित होती है। अधिक एवं निरन्तर सेवन से शरीर में अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। मादक पदार्थों के अन्तर्गत शराब, हेरोइन, स्मैक, अफीम,

तम्बाकू आदि का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। शराब भी देशी एवं अंग्रेजी के भेद से वाइन, बियर, ठर्रा, दारू आदि मिलती हैं। इन दिनों शराब की दुकानों पर नशाखोरों की लाइन लगी रहती है। मादक पदार्थों से होने वाली हानियों से प्रारम्भ में लोग परिचित नहीं होते, इसलिए साथियों की कुसंगति में आकर इन पदार्थों का सेवन करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। बाद में वे नशे के आदी हो जाते हैं। फिर पैसा पास में न होने पर चोरी का सहारा लेते हैं। नशे के बिना तड़फन का अनुभव करते हैं। इस एक नशे से अनेक बुराइयाँ प्रवेश कर जाती हैं। झूठ बोलना, चोरी करना, व्यभिचार करना आदि बुराइयाँ भी नशाखोरों में आसानी से स्थान बना लेती हैं। मादक पदार्थों के सेवन से होने वाली कतिपय हानियाँ इस प्रकार हैं- 1. धन का अपव्यय। 2. शरीर में लीवर, किडनी, हृदय आदि पर दुष्प्रभाव एवं कैंसर जैसा रोग भी उत्पन्न हो सकता है। 3. परिवार में कलह एवं अशान्ति। 4. पति-पत्नी में विवाद, कभी स्थिति तलाक तक पहुँच जाती है। 5. सामाजिक प्रतिष्ठा में हानि। 6. नशे के कारण कुछ भी गलत कार्य करने की आशंका। 7. जिन घरों में आय कम होती है वहाँ संकट की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। 8. चित्त असन्तुलित रहता है। 9. निर्णय गलत हो सकते हैं। 10. एक बुराई के साथ अनेक बुराइयाँ आ धमकती हैं। मदिरा का कोई भी ब्राण्ड हो, सभी हानिकारक होते हैं।

गुटखा खाने वाले तम्बाकू के कारण कैंसर के शिकार हो जाते हैं। प्रतिदिन जेब भी ढीली होती रहती है। हेरोइन, स्मैक, अफीम आदि का नशा ऐसा प्रभाव डालता है कि उससे नर्वस सिस्टम भयंकर प्रभावित होता है। उस नशे के बिना व्यक्ति को तनिक भी चैन नहीं मिलता। इसलिए नशा त्याज्य है। बुद्धिमान व्यक्ति अपने शरीर, मन, परिवार एवं प्रतिष्ठा को हानि पहुँचाने वाली आदतों से दूर रहता है।

मांसाहार का सेवन भी एक दुर्व्यसन है। यह मनुष्य की शारीरिक प्रकृति के प्रतिकूल है। अभी अमेरिका में तेजी से लोग मांसाहार को छोड़कर शाकाहार की ओर

प्रवृत्त हो रहे हैं। यूरोप के देशों में भी शाकाहारियों की संख्या बढ़ रही है। नई पीढ़ी रेस्टोरेंट में जाकर मांसाहार का सेवन करने लगी है। घर वालों को ज्ञात नहीं होता, किन्तु युवा लोग अपने साथियों के साथ ऐसे होटलों में जाते हैं जहाँ मांस भी परोसा जाता है। मांसाहार भी अनेक कारणों से त्याज्य है। इससे होने वाली प्रमुख हानियाँ हैं-

1. मांसाहार के लिए निरपराध मूक पशु-पक्षियों के प्राणों का नाश होता है।
2. मांस शरीर में अनेक रोगों को जन्म देता है। कभी रोग ग्रस्त पशु-पक्षियों का मांस भी खाया जाता है जिसका दुष्प्रभाव शरीर पर देखा जाता है।
3. मांसाहार का सेवन अनुकम्पा एवं करुणा भावना को समाप्त करता है।
4. कत्लखानों में पानी की अधिक खपत होती है, जिससे जल संकट भी बढ़ता है।
5. आर्थिक दृष्टि से मांस का उत्पादन अनाज उत्पादन की अपेक्षा महँगा पड़ता है। पशु-पक्षी पहले अनाज आदि का सेवन कर हृष्ट-पुष्ट होते हैं तब उनका आहार किया जाता है। इसकी अपेक्षा सीधे अनाज का सेवन सस्ता एवं पौष्टिक होता है।
6. शाकाहारियों का जीवन मांसाहारियों की अपेक्षा सात्त्विक होता है।

नई पीढ़ी अज्ञान, स्वाद, विज्ञापन एवं कुसङ्गति के कारण दुर्व्यसनों की शिकार हो जाती है। एक बार लत लगने पर छूटना मुश्किल हो जाता है। व्यसनग्रस्त युवा अपने घर वालों से नज़रे चुराता है। उसे कभी अपराध बोध भी होता है, किन्तु उन गन्दी आदतों को छोड़ नहीं पाता है। सोशियल मीडिया पर भी निर्व्यसनता को प्रसारित किया जा सकता है। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, युवती मण्डल जयपुर एवं यूटर्न के संयुक्त आयोजन में 'व्यसनमुक्त भारत' शीर्षक से श्री नमनजी एवं निपुणजी डागा ने संयुक्त रूप से प्रेरक वक्तव्य दिए। निर्व्यसनता में निर्विकल्पता हो, इसमें कोई चोइस न हो। जीवन का लक्ष्य हो एवं सिद्धान्त हो तो विषम परिस्थितियों में भी मादक पदार्थों एवं मांसाहार के सेवन से बचा जा सकता है। व्यसनों से पीड़ित व्यक्ति को देखकर भी शिक्षा ली जा सकती है। इस प्रकार के अभियान को सम्पूर्ण देश में चलाने की आवश्यकता है।

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

दुज्जए काम-भोगे य, णिच्चसो परिवज्जए।
संका-ठाणाणि सव्वाणि, वज्जेज्जा पणिहाणवं॥

-उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 16, गाथा 14

अर्थ-स्थिरचित्त वाला होकर मुनि दुर्जय काम भोगों का सदैव त्याग करे और ब्रह्मचर्य में दोष लगने वाले शंका (भय) स्थानों से दूर रहे।

विवेचन-कामभोगों एवं ब्रह्मचर्य पालन में शंका उत्पन्न करने वाले स्थानों का परिवर्जन करने हेतु इस गाथा में साधु को सजग किया गया है। इस अध्ययन में 10 ब्रह्मचर्य समाधि स्थानों, 9 ब्रह्मचर्य गुप्तियों तथा ब्रह्मचर्य समाधि-भङ्ग के कारणों का निर्देश किया गया है।

आत्मसाधक के लिए ब्रह्मचर्य की साधना आवश्यक है। ब्रह्मचर्य का पालन आसान नहीं है, इसलिये बाह्य निमित्तों से बचने हेतु सावधानियों का उसी प्रकार निर्देश किया गया है, जिस प्रकार कोरोनाकाल में संक्रमण से बचने के लिए निर्देश किया गया। बाह्य निमित्तों से बचने में ब्रह्मचर्य की सुरक्षा सरल हो जाती है। हर एक को अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity Power) की परीक्षा करने हेतु संक्रमितों के बीच रहने की आवश्यकता नहीं है। इसी प्रकार ब्रह्मचर्य की पालना में अपने को सुदृढ़ समझने वालों को भी विघ्नकारक निमित्तों से बचाए रखना हितकर है।

जो भी निमित्त ब्रह्मचर्य की साधना में विघ्नकारी हों उनसे बचने का निर्देश आगमों में किया गया है। स्त्रियों के साथ अधिक समय रहने, उनके हावभाव एवं अङ्गों को रागभाव से देखने, स्त्रियों के सम्बन्ध में बातचीत करने, शरीर की विभूषा करने, प्रणीत भोजन-पान, पूर्वभुक्त भोगों का स्मरण करने आदि से अब्रह्मसेवन की सम्भावना रहती है। कभी-कभी दिगम्बर-श्वेताम्बर मुनियों के द्वारा ब्रह्मचर्य भङ्ग के उदाहरण आज भी सुनने-देखने को मिल जाते हैं। जो

आत्मसाधना का लक्ष्य भूलकर बाह्य रंगराग में आनन्द मानते हैं, विरोधी लिङ्ग के स्त्री-पुरुषों के साथ एकान्त में मिलने में संकोच नहीं करते हैं, उनके साथ अधिक समय बैठते हैं, उनके ब्रह्मचर्य की साधना दूषित होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

साधु को ब्रह्मचर्य की साधना मन, वचन एवं काया तीनों स्तरों पर करनी होती है। तीनों स्तर पर साधना में संलग्न साधक प्रणिधानवान् होता है। मन में उठने वाले भावों को ज्ञानपूर्वक एवं निमित्तों का परिहार करके जीता जा सकता है। काम-भोग 'मेरे जीवन का लक्ष्य नहीं' ये कामभोग नश्वर हैं तथा इनका परिणाम पतन का कारण है, यह जानकर मन को समझाया जा सकता है। वचन में भी इस प्रकार की भाषा का प्रयोग न हो, जिससे कामभोग की इच्छा प्रज्वलित हो। ऐसे वचनों को सुनने एवं बोलने से भी बचना चाहिए। काया के स्तर पर तो अपने को दृढ़ संयम में रखना ही है। काम का प्रादुर्भाव मन में होता है, अतः इसे मनसिज कहा जाता है। मनसिज पर विजय पाने हेतु आगम-वाक्यों एवं अनुभूत ज्ञान से मन को समझाना चाहिए। प्रारम्भ में अपने संयम को दृढ़ करने के लिए ब्रह्मचर्य में बाधक निमित्तों से दूर रहना आवश्यक है। इसलिये आगम में कहा है-साधक शंका-स्थानों से दूर रहे और मन, वचन, काया को आत्मजय के मार्ग में स्थिर रखे।

कामभोग दुर्जेय है, इसके अनेक कारण हैं-1. मनुष्य को पाँच इन्द्रियों के विषय प्रिय लगते हैं अतः उसको इन विषयों के प्रति आकर्षण होता है। 2. शरीर में ऐसे हार्मोन प्रवाहित होते हैं, जो विपरीत लिङ्गी के प्रति सहज आकृष्ट करते हैं। 3. शरीर में पुरुषवेद, स्त्रीवेद आदि के कारण विपरीत लिङ्गी के सहवास की इच्छा उत्पन्न हो जाती है। 4. मैथुन संज्ञा प्रायः प्रत्येक जीव में

(शेषांश पृष्ठ 15 पर)

विचारशुद्धि के सूत्र

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

- ॐ पेट की भूख तो पाव दो पाव आटे से मिट जाती है, मगर मन की भूख तीन लोक के राज्य से भी नहीं मिटती।
- ॐ एक अकिञ्चन निस्पृह योगी को जो अदभुत आनन्द प्राप्त होता है, वह कुबेर की सम्पदा पा लेने वाले धनाढ्य को नसीब नहीं हो सकता।
- ॐ अमर्यादित धन-सञ्चय की वृत्ति के पीछे गृहस्थी की आवश्यकता नहीं, किन्तु लोलुपता और धनवान कहलाने की अहंकार-वृत्ति ही प्रधान होती है।
- ॐ जो पूँजी पाकर स्वयं उसका सदुपयोग नहीं करता और दूसरों की सहायता नहीं करता प्रत्युत दुर्व्यसनों का पोषण करता है, वह इस लोक में निन्दित बनता है और परलोक को पापमय बनाकर दुःखी होता है।
- ॐ जीवन, धन और वैभव जाने वाली वस्तुएँ हैं, किन्तु इन जाने वाली वस्तुओं से कुछ लाभ उठा लिया जाय, अपने भविष्य को कल्याणमय बना लिया जाय, इसी में मनुष्य की बुद्धिमत्ता है, विवेकशीलता है।
- ॐ स्वेच्छापूर्वक अङ्गीकार किया हुआ व्रत का बन्धन साहस और शक्ति प्रदान करता है। प्रतिकूल परिस्थिति में इसके द्वारा अपनी मर्यादा से विचलित न होने की प्रेरणा प्राप्त होती है।
- ॐ परिग्रह को घटाने से हिंसा, असत्य, स्तेय, कुशील इन चारों पर रोक लगती है। अहिंसा आदि चार व्रत अपने आप पुष्ट होते रहते हैं।
- ॐ प्रमाद और कषाय दोनों सम्यग्दर्शन और विरतिभाव की निर्मलता में बाधक हैं।
- ॐ विचार-बल यदि पुष्ट हो तो साधक अहिंसा, सत्य आदि व्रतों का ठीक तरह से निर्वाह कर सकेगा।
- ॐ भोगोपभोग की लालसा जितनी तीव्र होगी, पाप भी उतने ही तीव्र होंगे।
- ॐ सामान्य लोग भौतिक पदार्थों की प्राप्ति के लिए साधना करते हैं, जबकि साधु उनके त्याग की और उनकी अभिलाषा न करने की साधना करता है। शुद्ध आत्मोपलब्धि ही उसकी साधना का उद्देश्य होता है।
- ॐ राग की स्थिति में मनुष्य का विवेक सुषुप्त हो जाता है। जिस पर राग भाव उत्पन्न होता है, उसके अवगुण उसे दृष्टिगोचर नहीं होते। गुणवान के गुणों का आकलन करना भी उस समय कठिन हो जाता है।
- ॐ यह सत्य है कि मन अत्यन्त चपल एवं हठीला है। यह शीघ्र काबू में नहीं आता। किन्तु इस पर काबू पाना असम्भव नहीं है। बार-बार प्रयत्न करने से अन्ततः उस पर काबू पाया जा सकता है।
- ॐ किसी उच्च स्थान पर पहुँचने के लिए एक-एक कदम ही आगे बढ़ाना पड़ता है।
- ॐ धर्म-शिक्षा या अभ्यास एवं वैराग्य के द्वारा मन को वश में किया जा सकता है।
- ॐ जो शरीर के प्रति ममतावान है, उसे शरीर के प्रतिकूल आचरण करने पर रोष उत्पन्न होता है, किन्तु जिसने शरीर को पर पदार्थ समझ लिया है और जिसे उसके प्रति किञ्चित् भी ममता नहीं रह गई है, वह शरीर पर घोर से घोर आघात लगने पर भी रुष्ट नहीं होता।
- ॐ ज्ञान अपने आपमें अत्यन्त उपयोगी सदगुण है, उसकी उपयोगिता विरतिभाव प्राप्त करने में है।

- 'अमृत-वाक्' पुस्तक से गृहीत

आत्मबोध प्राप्त करें

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा जयपुर में प्रदत्त प्रवचन का आशुलेखन श्री अशोककुमारजी जैन 'हरसाना', जयपुर द्वारा किया गया है। सम्पादन में सह सम्पादक श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन, जयपुर का सहकार रहा है।

-सम्पादक

अज्ञान रूपी अन्धकार को हटाकर, स्व-पर उपकारक ज्ञान को प्रकाशित करने वाले तीर्थंकर भगवन्त एवं स्वयं को जान लेने के बाद सामायिक साधना के माध्यम से स्व-स्वरूप को प्रकाशित करने का प्रयास करने वाले गुरु भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थंकर भगवान महावीर की अनमोल वाणी अपने आपको समझने के लिए आचाराङ्गसूत्र के माध्यम से उद्घोष करती है। 'मैं कौन हूँ?' अपने स्वरूप बोध के लिए यह प्रमुख प्रश्न है। जितनी भ्रान्तियाँ, जितनी नासमझी एवं जितना अज्ञान इस प्रश्न के पीछे रहा है, वह अन्य के पीछे नहीं है। अपने आपको शरीर मानकर आत्मबोध से वञ्चित आत्मा भव-भ्रमण कर रही है। इस आत्मा को देह मानना ही मिथ्यात्व है, मोह है, अज्ञान है और भ्रान्ति है। वास्तविकता में आत्मा का स्वरूप अवर्णा, अगन्धा, अरसा एवं अस्पर्शा है, परन्तु देह मानकर मानव ने विपरीत ही मान्यता पाल रखी है। यह कुमान्यता ही संसारवर्धक है, भटकाने वाली है। आत्मबोध के लिए ही आचाराङ्गसूत्र कहता है-

से आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई।

अर्थात् जो आत्मा के स्वरूप को समझ सकता है और विवेचन कर सकता है, वही लोक के स्वरूप को स्पष्टतः समझ सकता है। जो लोक के स्वरूप को समझकर अभिव्यक्त कर सकता है, वही कर्म के स्वरूप को बता सकता है। जो कर्म के स्वरूप को समझकर व्याख्या कर सकता है, वही वास्तव में क्रिया के स्वरूप को समझकर वास्तविक वर्णन कर सकता है। आत्मा के स्वरूप को जानने एवं सम्यक् रूप से कहने वाला आत्मवादी है। जो आत्मा को भवान्तर में गमनागमन

करने वाला, परिणामी नित्य, कर्ता, भोक्ता, स्वदेह-प्रमाण आदि लक्षणों से युक्त मानता है, वही सच्चा आत्मवादी है।

मैं छोटा, मैं बड़ा, मैं काला, मैं गौरा, मैं सुखी, मैं दुःखी आदि मानने वाला, संहनन-संस्थान आदि शारीरिक विविध पर्याय रूपों में अपने को मानने वाला अज्ञान अन्धकार में रह रहा है। यही कारण है जिसने अपने आपको शरीर के रूप में, शरीर की उपाधियों के रूप में समझ रखा है, उसकी जीवन चर्या का अधिकांश भाग उसकी सार-सम्भाल, सज्जा आदि क्रियाओं में ही बीत जाता है। दैहिक सुखों को प्राप्त करने के लिए वह दिन-रात लगा रहता है। लेकिन इन दैहिक, ऐन्द्रियक सुखों से तृप्ति कहाँ मिलने वाली है। इसलिए शास्त्र कहता है कि-हे मानव! तू आत्मबोध कर, आत्मा के कार्यों में अपने को लगा, अपने आपको पहचान और अपने आपका अध्ययन कर। 'स्वस्य अध्ययनं स्वाध्यायः।' अर्थात् अपने आपसे परिचित होना और अपने आप में लीन होना ही स्वाध्याय है।

'मैं कौन हूँ?' प्रश्न का समाधान हमने गलत रूप में जमा लिया है, अपने आपको जड़ रूप समझ लिया है। लेकिन प्रभु महावीर का कथन है कि छह द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ द्रव्य है आत्मा। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल और पुद्गलास्तिकाय ये पाँचों अचेतन द्रव्य हैं। एक मात्र जीव द्रव्य सचेतन है। इन पाँचों अचेतन द्रव्यों को जानने वाला यह आत्म द्रव्य ही ही है। पुद्गल अपने आप में बड़ा नहीं है, चाहे सोना, चाँदी, माणक, हीरा आदि ही क्यों नहीं हो। पुद्गल को

बड़ा बनाने वाला भी यह जीव ही है। यह जीव ही विभाव में जाकर पुद्गल का महिमा मण्डन करता है। लेकिन वास्तव में श्रेष्ठ द्रव्य है आत्मा और इसका गुण है ज्ञान-चेतना। यह गुण अन्य किसी द्रव्य में नहीं है। इस ज्ञान-चेतना का विकास ही मानव को हेय, ज्ञेय और उपादेय का बोधक बनाता है। क्या जानना है, क्या त्यागना है और क्या अपनाना है, यह बोध ज्ञान-चेतना सम्पन्न आत्मा ही करता है। छोड़ना क्या है? तो प्रभु कहते हैं जिससे जीव भारी होता है, बन्धन में बँधता है, अपने गुणों को ढकता है, ऐसे आस्रव द्वार छोड़ने योग्य हैं।

ग्रहण करने योग्य क्या है? जिनसे ज्ञान, दर्शन आदि गुणों का आदान होता है, आत्मिक विकास होता है, कर्म जन्य आवरण हटता है, ऐसी संवर-निर्जरा की प्रवृत्तियाँ ग्रहण करने योग्य हैं। ज्ञानार्जन के लिए ग्रहण करने योग्य को ग्रहण करने के लिए स्वाध्यायी शिविर आयोजित होते हैं। शिविरों के माध्यम से आत्मा के स्वरूप को समझाकर ग्रहण योग्य कृत्यों को करने की बातें सिखाई जा रही हैं।

सिखाना भी श्रेष्ठ तब ही है जब सीखने वाले को आत्मबोध हो और उसके द्वारा संवर-निर्जरा को अपनाया जाये। सिखाया तो रोहिण्येय चोर के पिता ने भी था। क्या सिखाया था कि बेटा! यदि तू अपना भला चाहता है तो भगवान महावीर के पास कभी मत जाना। चोरों का सरदार अपने पुत्र रोहिण्येय को प्रभु महावीर की वाणी नहीं सुनने की शिक्षा दे रहा है। लेकिन परवशता से सुनी भगवान की वाणी ने जब कैद से रक्षण कराया तब वास्तविक बोध हुआ। उसने जाना कि पिता का सिखाया सही नहीं था। सिखाया तो मंथरा ने कैकेयी को भी था। पर उस सिखाये गये ज्ञान से कैकेयी के अपने ही पति राजा दशरथ का मरण हुआ और मर्यादा पुरुषोत्तम राम को वनवास हुआ। क्या यह सिखाना सही हो सकता है। सिखाना अच्छा तभी है जब जीवन-निर्वाण की कला सिखाई जाये। आज स्थिति दूसरी है आत्मकल्याण की शिक्षा देने वालों के पास माता-पिता बच्चों को भेजने से कतराते हैं।

ऐसे भी साहूकार हैं जो बच्चों को सन्तों के पास जाने के लिए मना करते हैं। ऐसी मानसिकता वाले आज भी बहुत अधिक हैं। यदि सन्तों के पास भेजेंगे भी तो तब भेजेंगे जब वे सुनते नहीं हैं, मानते नहीं हैं, स्वच्छन्द हो गये हैं। उनका आचरण सही नहीं है, लड़ाई-झगड़ा करते हैं। थोड़े दिनों के बाद सन्तों के सान्निध्य में रहकर जब वह सुधर जाता है तो उसे वापस घर ले जाते हैं। उन्हें डर लगा रहता है कि वह कहीं महाराज नहीं बन जाय। सन्तों के पास सुधारगृह मानकर भेजते हैं। हमारे बच्चे बोध प्राप्त करके आत्म-कल्याण करने के लिए आगे बढ़े, इस भावना से माता-पिता आज नहीं भेजते हैं। विरले लोग हैं जो सन्तों के पास पुरुषार्थ फोड़ने के लिए, ज्ञान पाने के लिए, वैराग्य जगाने के लिए अपनी सन्तानों को भेजते हैं।

एक समय था जब लोग यह मानते थे कि गुरु के सान्निध्य में सन्तों के पास रहने से 7 पीढ़ियों का कुल खानदान पवित्र होता है। इन सन्त-भगवन्तों की सेवा परिचर्या में रहकर कल्याण मार्ग प्रशस्त होता है। हमने कल ही सुनी थी उत्तराध्ययन के चौदहवें अध्ययन की बात कि भृगु पुरोहित से सन्तों ने कह दिया कि तेरे होने वाले दोनों पुत्र भविष्य में सन्त बनेंगे। जब तक पुत्र नहीं थे सन्तों पर खूब श्रद्धा थी, लेकिन जैसे ही पुत्र हुए वह भयग्रस्त हो गया। उसे अपने पुत्रों के द्वारा भविष्य में दीक्षा लेने का भय सताने लगा। इस भय के निराकरण के लिए उसने जंगल में मकान बनाया, जिससे सन्तों का सान्निध्य ही दोनों पुत्रों को नहीं मिले। अब सन्तों के प्रति और सन्त जीवन के प्रति श्रद्धा नहीं रही और दोनों पुत्र सन्त नहीं बने इसका भरसक प्रयास भी किया, किन्तु वह निष्फल रहा।

इसलिए प्रभु महावीर कहते हैं कि आत्मबोध करो, जागृत बनो। सन्तों से ज्ञान प्राप्त करो और ज्ञान के फल विरति को अपनाओ। 'नाणस्स फलं विरई' अर्थात् ज्ञान का फल विरति है। ज्ञान की आराधना से विरति आ रही है या अहंकार, यह विचार करना है। बाहरी ज्ञान अहंकार बढ़ाता जाता है और जीव आत्मिक लक्ष्य से

बहुत दूर हो जाता है। आत्मा का ज्ञान अर्थात् बोध ही ऐसा है जो प्रेम, सद्भावना और अपनत्व का विस्तार करता है। उसके भीतर दुःखी जीवों को देखकर करुणा भाव जागता है और उनके दुःख को मिटाने का भाव भी पैदा होता है। यह करुणा भाव ही अपने आपको पहचानने का मापदण्ड है। जो स्व को प्रिय आचरण है वह ही पर के लिए आचरण हो, यही आत्मबोध है।

अपने समान दूसरों को समझना ही सम्यक् समझ है, यह ही सम्यक्त्व है, यह ही दृष्टि की पवित्रता है। जिस दिन इस सूत्र को जीवन में आत्मसात् कर लिया, मान लो सामायिक हो गई, स्वाध्यायी भी बन गये और वीतरागता के मार्ग पर क्रम भी रख दिया।

अपने समान दूसरों को समझने पर दूसरे की हिंसा नहीं हो सकती, उसे दुःख नहीं दिया जा सकता। हिंसा किसकी करते हैं, थप्पड़-मुक्का-लात आदि किस पर मारते हैं, तलवार किस पर चलाते हैं, जो पराया है। लेकिन जब पराये को भी अपना या अपने समान मान लिया जाता है तो उसके प्रति हिंसा बन्द हो जाती है। उस पर हमारा हाथ मारने के लिए नहीं, अपितु सहयोग के लिए उठता है। कोई अन्य उसे पीड़ित करे तो भी उसे बचाने का प्रयास रहता है। यदि आपने सभी जीवों को अपना मान लिया तो झूठ किसके साथ और चोरी किसके साथ करेंगे? यदि सभी अपने हैं तो बटुआ गिरने के साथ ही कहेंगे- “भाईसाहब! आपकी वस्तु गिर गई है, सजगता से सम्भाल कर रखा करो।” पराया मानने वाला तो चुपचाप जेब में रख लेगा और निकल जायेगा। गुस्सा किस पर करते हो अपने आप पर अथवा परायों पर। जब अपना मान लिया जाता है तो पाप कर्म होते नहीं हैं और आत्मा भारी भी नहीं होती है। पूर्व में बाँधे कर्म भी हल्के हो जाते हैं। यह ही तो लक्ष्य है इस आत्मा का। यह ही आत्मबोध है, यह ही सम्यक्त्व है। भगवान की वाणी (दशवैकालिकसूत्र 10.5) के माध्यम से भी यही शिक्षा दी गई है-

रोड़अ नायपुत्तवयणे, अत्तसमे मणिज्ज छप्पिकाए।

जो भी ज्ञातपुत्र प्रभु महावीर के वचनों पर रुचि, श्रद्धा और प्रतीति रखता है, वह पृथ्वी, अप, तेजस्, वायु, वनस्पति और त्रसकाय के जीवों को आत्मवत् समझता है। जीवन का श्रेय मार्ग यही है। इसे अपनाने से पापमुक्त जीवन जिया जा सकता है। अपनी आत्मा जैसी ही यदि दूसरों की आत्मा समझ लें तो ही सही मायने में आत्मबोध कहा जा सकता है। वैसे भी सभी आत्माएँ ज्ञान, दर्शन गुण की अपेक्षा एवं असंख्यात प्रदेशात्मक द्रव्य की अपेक्षा समान ही हैं। लेकिन पर्याय दृष्टि के कारण भिन्न-भिन्न प्रतीत होती है। जब जीव की दृष्टि आत्मा पर रहती है तो समानता व्यक्त होती है, लेकिन जब कर्म के कारण शरीर आदि पर्यायों पर दृष्टि होती है तो असमानता दिखाई देती है।

आत्म द्रव्य की अपेक्षा सिद्ध जीव और निगोद के जीव में कोई अन्तर नहीं है। ज्ञान, दर्शन गुण की सत्ता दोनों में है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अपेक्षा से लक्षण की समानता है। अन्तर क्या है? जो अन्तर बीज और वृक्ष में है, वही अन्तर निगोद और सिद्ध के जीव में है। बीज में पुष्प है, फल है, पत्ते हैं, परन्तु वे सभी अव्यक्त हैं, ढके हुए हैं। जब बीज वपन होगा तब अंकुरित होने के बाद ये सभी अवयव व्यक्त रूप से नजर आयेंगे, क्योंकि अब इन पर जो आवरण था वह हट चुका है। इसी प्रकार यह आत्मा वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श युक्त होकर बाहर में लीन बना हुआ है। जड़ को ही संवारने-सम्भालने में रत है। जब यह आत्मा जड़ के बजाय चेतन का चिन्तन करने लगेगा तो सिद्ध पथ पर आगे बढ़ जायेगा। निगोद के जीव में सिद्धत्व अव्यक्त है उसे व्यक्त करने के लिए आत्मबोध जरूरी है।

संसारस्थ जीव अपने सिर को स्वयं देख नहीं पाता है, लेकिन यदि कर्मावरण हट जाय तो यहाँ बैठे-बैठे ही समग्र लोक को देख सकते हैं। कर्मों के आवरण के कारण सीमित को ही जान पा रहे हैं, असीमित ज्ञान के लिए बोध करना आवश्यक है। बोध के अभाव में अपने को ऊँचे नाम वाला, आलीशान मकान वाला और प्रचुर

धन वाला मान रखा है। अपने आपका मूल्यांकन जड़ वस्तुओं से किया जा रहा है। भौतिक आकर्षण एवं सत्ता के सुखों में झूला जा रहा है। लेकिन जब आत्मबोध हो जायेगा, तब ज्ञान के प्रकाश में आत्मवादी होकर बाह्य सुख-सुविधा एवं वस्तुओं को नाशवान माना जा सकेगा। अतः अपने आप की पहचान करना है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र के लिए पुरुषार्थ करना है। ऐसे विरले ही मिलेंगे, लेकिन जो करेगा वही पायेगा। जिस दिन अपने आपकी पहचान हो जायेगी उपदेश या प्रेरणा की

जरूरत नहीं होगी। पिता के चले जाने के बाद बेटा अपने आप दुकान जाना, व्यापार बढ़ाना सीख जाता है उसी प्रकार बोध होने पर जीव आगे बढ़ ही जाता है। इसलिए सर्वप्रथम आत्मवादी बनने को कहा है। आत्मा है, आत्मा ज्ञानवान है, कर्मों को काटकर वह शुद्ध स्वरूप वाला बन जाता है। इस प्रकार का चिन्तन करके अपनी दृष्टि को आत्म-सापेक्ष बनाकर पुरुषार्थ करेंगे तो शान्ति-समाधि को प्राप्त करेंगे।



कल्याण तुम्हारा चाहो तो

श्री सुशील चाणोदिया

(तर्ज-उठ भोर भई टुक जाग सही)

कल्याण तुम्हारा चाहो तो, दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥
आनन्द की धारा चाहो तो, दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥
क्यों नश्वर पुद्गल कामी हो ?
तुम ध्रुव ध्येय के धामी हो,
अविचल सुख के तुम स्वामी हो,
दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥
क्या जग रहने के लायक है ?
यह पग-पग पर दुःखदायक है,
कहते शासन के नायक हैं,
दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥
जो भोग में मूर्च्छा लाएगा,
तो घोर नरक में जाएगा,
अवसर न फिर-फिर आएगा,
दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥

वीणा है वीणा के तार नहीं,
सोचो क्या यह बेकार नहीं,
संसार में कुछ भी सार नहीं।
दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥
निश्चय सुख का यह मार्ग महा,
भय-त्रासावर्त है मिटता जहाँ,
ऐसा मौका फिर और कहाँ ?
दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥
हे शब्द रूप रस बाहर के,
है गन्ध स्पर्श सब यहीं पर के,
अहो ईश अरूपी भीतर के।
दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥
यह देह तुम्हारा क्षीण हुआ,
भय रोगों के आधीन हुआ,
मृत्यु शैय्या आसीन हुआ।
दीक्षा ले लो, दीक्षा ले लो॥

-3-6-20, हिमायतनगर, हैदराबाद-500029

(शेषांश पृष्ठ 10 का)

न्यूनाधिक रूप में रहती है। अतः वह निमित्तों से प्रभावित होकर ब्रह्मचर्य पालन में दोष लगा सकता है। इसलिए आवश्यक है कि वह अपने भीतर उत्पन्न होने वाले काम-विकार को बढ़ने का अवसर न दे। काम-विकार की वृद्धि में आहार पर भी नियन्त्रण आवश्यक है तो साधु के द्वारा स्त्री के अङ्गों को निहारना, उनकी चर्चा करना तथा साध्वी के द्वारा पुरुष के अङ्गों को निहारना, उनकी चर्चा करना आदि त्याज्य है। प्रणिधानवान् अर्थात् सजग साधक मन, वचन एवं काया तीनों स्तर पर ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है।

आध्यात्मिक शिक्षण के उद्देश्य : ज्ञानार्जन एवं आत्मोन्नयन

भावी आचार्य श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के द्वारा घोषित भावी आचार्य, महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा 19 जून, 2022 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर, जोधपुर में शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है। -सम्पादक

कष्टों के बोध से, जीवन का शोधकर, मुक्ति में मोद करने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी तीर्थकर भगवन्तों को वन्दन! ज्ञान के ज्ञानेश्वर, दर्शन के दानेश्वर, चारित्र के चक्रेश्वर, तप के तपेश्वर और मम जीवन के सर्वेश्वर अनन्त-अनन्त उपकारी, पूज्य आचार्य भगवन्त के चरणों में भाव सहित कोटिशः वन्दन-नमन!

बन्धुओं!

विषम तत्त्वों के बोध और आत्म-तत्त्व की शोध में, ज्ञान का प्रकाश मुक्तिमार्ग में अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए ज्ञानीजन फरमाते हैं-

समझ सार संसार में, समझूँ टाले दोष।

समझ-समझ कर जीवझ, गया अनन्ता मोक्ष।।

समझ व्यक्ति को सत्य-असत्य का बोध कराती है। समझ व्यक्ति को सही-गलत का भान कराती है। समझ व्यक्ति को पुण्य-पाप का अन्तर कराती है, तो समझ व्यक्ति को जड़-चेतन का भेद बताती है। समझ जीवन को निर्दोष बनाने के रास्ते पर लेकर जाती है और एक दिन मोक्ष-द्वार को उद्घाटित भी कर देती है।

अज्ञानी जीव पाप करते हुए भी आनन्द की अनुभूति करता है, लेकिन ज्ञानी मजबूरीवश पाप करते हुए भी ग्लानि का अनुभव करता है।

मैं आपसे पूँछूँ-आप समझदार हो या नासमझ, ज्ञानी हो या अज्ञानी? आप स्वयं चिन्तन करें, क्या समझदार (ज्ञानी) संसरण करता है या संयम का आनन्द लेता है।

देखिए, ज्ञानी-पुरुष हिंसा करता हुआ डरेगा, झूठ बोलते हुए उसकी जुबान लड़खड़ायेगी, चोरी करते हुए

उसके हाथ काँपेंगे, प्रत्येक पापकार्य करते हुए उसे हिचकिचाहट रहेगी।

आपका नम्बर किसमें है? आपको समझदार कहना या नासमझ? आप कहोगे म.सा. समझ होते हुए भी मजबूरी से पाप करना पड़ता है। हाँ, आपका कथन यथार्थ है। समझदार है तब भी उसे पाप करना पड़ता है, बिना पाप किये गृहस्थ जीवन चल सके, ऐसा सम्भव नहीं है।

लेकिन भाई! ज्ञानी जीव को पाप करते हुए प्रसन्नता नहीं होती। जो पाप करते हुए खुशी मनाता है वह ज्ञानी नहीं हो सकता। यह मेरा बंगला है, यह मेरा पुत्र है, यह मेरी दुकान है, यह मेरी फैक्ट्री है, इस तरह अज्ञानी एक-एक चीज का नाम गिनाकर प्रसन्न होता है, आनन्दानुभूति करता है। क्या उसे समझदार कहना? ज्ञानी कहना?

पाप करके जो आनन्द का अनुभव करे तो वह ज्ञानी नहीं हो सकता। आपको ध्यान में ही है और आपने कई बार सुना है कि खंदक ने पूर्वभव में एक काचरा छीला। आज घर-घर में न जाने कितने-कितने फलों को, सब्जियों को, बहनें छीलती हैं। शादी-विवाह में लोगों को आकर्षित करने के लिए विभिन्न आकृतियों में सलाद तैयार कर लोगों को खिलाया जाता है। क्या कर रहे हैं हम, क्यों? हम 'अहिंसा परमो धर्मः' को भूल रहे हैं, क्यों दया धर्म को लजा रहे हैं? हाँ, तो प्रसंग चल रहा है खंदक का। खंदक ने काचरा छीलकर अपनी हथेली पर रखा और राजदरबार में उपस्थित लोगों से पूछा-मेरे हाथ में क्या है?

वह छिलका था, पर इतनी सफाई से, कुशलता से छीला गया कि वह हू-ब-हू काचरा दिख रहा था। कइयों ने तो कह दिया कि यह काचरा है।

वह काचरा नहीं था, छिलका था। सत्य प्रगट होने पर लोगों ने खंदक के कार्य कौशल की सभा में खूब प्रशंसा की। लोगों की प्रशंसा सुनकर खंदक का मन भी आनन्दित हो गया, वह खुशी से उछल रहा था। अपनी चतुराई एवं कौशल पर गर्व की अनुभूति कर रहा था, लेकिन अज्ञानता के वशीभूत होकर उसने गाढ़ रस वाले कर्मों को आमन्त्रण दे दिया।

परिणामस्वरूप उसे खंदक के भव में काचरा छीलने के बदले में अपनी खाल उतरवानी पड़ी। बस एक काचरा छीलने के बदले में उसे अपनी खाल उतरवानी पड़ी, ऐसा नहीं है। काचरा तो हमारी महिलाएँ न जाने कितनी संख्या में छीलती हैं, परन्तु उन्हें ऐसा फल प्राप्त होगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता। खंधक ने पूर्वभव में काचरा छीलकर अपने कौशल का अहंकार किया। अनन्तानुबन्धी मान कषाय का पोषण किया। अतः अपने कर्तृत्व के अभिमान के फलस्वरूप उसे खंधक के भव में खाल उतरवानी पड़ी थी। यह प्रसङ्ग हमें यही सन्देश देता है कि पाप कार्य को करते हुए अहंकार कर आनन्दानुभूति होने पर उसका परिणाम अन्त में कटु और दुःख से परिपूर्ण होता है।

इसी तरह संसारी प्राणी ज्ञान के अभाव में पृथ्वीकायिक, अप्कायिक आदि जीवों की विराधना करता हुआ प्रसन्न होता है और पाप की गठरी बाँध लेता है। लेकिन आप सभी सुज्ञ हैं, समझदार हैं, आगमवाणी के रसिक हैं। वर्षों से जिनवाणी श्रवण कर रहे हैं।

आज ज्ञान के ही उपक्रम आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला है। इस संस्था का जिनशासन की जाहोजलाली में महनीय योगदान रहा है, क्योंकि शासन रक्षा सम्यग्ज्ञान के बल पर ही हो सकती है और इस बोर्ड के माध्यम से बालक-बालिका ही नहीं, बड़ी उम्र के भाई-बहिन भी तत्त्वज्ञान से समृद्ध हो रहे हैं। परीक्षा देकर

अपने ज्ञान में वृद्धि कर अध्यात्ममार्ग में उन्नति कर रहे हैं।

आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. दूरद्रष्टा हैं, शासनहित-चिंतक है। आपश्री ने संघ में ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु चिन्तन करने की श्रावक संघ के समक्ष अपनी भावना रखी और पूज्य गुरुदेव की भावनाओं को साकार रूप देने के लिए संघ ने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के माध्यम से ज्ञान-यज्ञ को विधिवत् प्रारम्भ किया।

पूज्य आचार्य भगवन्त का इसके पीछे उद्देश्य यही रहा कि वर्तमान युग में साधन-संसाधन की अभिवृद्धि निरन्तर हो रही है, मानव की भौतिक कामनाएँ बढ़ रही हैं। इन परिस्थितियों में संस्कारों को सुरक्षित रखने के लिए सम्यग्ज्ञान का प्रकाश आवश्यक है। अध्यात्मज्ञान के अवलम्बन से ही व्यक्ति आज के युग में अपने जीवन को संस्कारित रख सकता है।

संघ ने इस उद्देश्य से यह संस्था प्रारम्भ की और आज पूरे भारत वर्ष में परीक्षा आदि के माध्यम से सम्यग्ज्ञान का प्रचार कर रही है।

ये परीक्षाएँ ईनाम के लिए नहीं हैं, अपितु जीवन निर्माण के लिए हैं। ईनाम के पीछे अपना ईमान नहीं छोड़ना है। आज लोग धार्मिक परीक्षाओं में भी नम्बर के लिए नकल कर रहे हैं। आपको इन दुष्प्रवृत्तियों से बचकर परीक्षाओं में सहभागी बनना है।

आज इस सभा में परीक्षार्थी कम हैं और परीक्षक अधिक हैं। आध्यात्मिक परीक्षा लेना या देना, दोनों कार्य ज्ञानवृद्धि में सहायक हैं। पढ़ने तथा पढ़ाने से स्वयं का ज्ञान तो बढ़ता ही है तथा ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय भी होता है, क्योंकि आप पढ़ाते हैं तो किसी की ज्ञानवृद्धि में सहायक बनते हैं, सहयोग देते हैं। सहयोग करना भी कर्म-निर्जरा का कारण है।

गौरवशाली रत्नसंघ में शिक्षण बोर्ड के माध्यम से ज्ञान वृद्धि हो रही है। जो ज्ञान करने में सक्षम हैं, वे ज्ञान सीखें। जो स्वयं सक्षम नहीं हैं, वे जो ज्ञान सीखने वाले

हैं, उनके सीखने में सहयोग करें। हमारे इतिहास में भी ऐसे उदाहरण प्राप्त होते हैं कि वृद्ध गुरु शिष्य का कार्य करते हैं और मेधावी शिष्य ज्ञानार्जन करते हैं, एक प्रसङ्ग मुझे ध्यान में आ रहा है।

इस गौरवशाली रत्नसंघ की दीप्ति को अनेक रत्नों ने वर्धापित किया है। उसी क्रम में हमारे एक सन्तरत्न हुए पूज्य श्री मुल्तानमलजी म.सा.। आप कोसाना ग्राम के बाघमार परिवार से दीक्षित हुए थे। एक बार आपकी प्रतिलेखना आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. कर रहे थे। एक श्राविका ने यह देखा, उससे रहा नहीं गया। उसने आचार्य पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म.सा. को निवेदन किया-गुरुदेव! आपके जवान शिष्य बैठे हुए हैं और आप उनकी प्रतिलेखना कर रहे हैं, बल्कि होना तो यह चाहिए कि आपके शिष्य आपकी प्रतिलेखना आदि साधुचर्या को सम्पन्न करने में सहयोगी बनें। आचार्यश्री ने फरमाया, बाईसा! मैं वृद्ध हो चुका हूँ, मेरी स्मरण शक्ति भी क्षीण हो रही है, मैं चाहते हुए भी नवीन आगम गाथाओं को कण्ठस्थ नहीं कर सकता। इसलिए मैंने सोचा कि मैं याद नहीं कर सकता, लेकिन युवा मुनि मुल्तानमलजी तीव्र ज्ञान के क्षयोपशम वाले हैं और मैं इनके ज्ञान सीखने में सहयोग करके कर्म-निर्जरा कर सकूँ, इस उद्देश्य से ही प्रतिलेखना के कार्य को सम्पन्न कर देता हूँ। श्राविकाजी ने कहा-गुरुदेव! इतना भी क्या ज्ञान सीख रहे हैं कि गुरु को प्रतिलेखना करनी पड़े, यदि ऐसा ही है तो गुरुदेव ये मुनिराज आज जितनी आगम गाथाएँ कण्ठस्थ करेंगे, मैं उतने उपवास करूँगी। मुल्तानमलजी प्रतिदिन 50-60

गाथाएँ याद करते थे और उस दिन उन्होंने कुछ समय में शताधिक गाथाएँ याद करके आचार्यश्री को सुना दी। वह श्राविकाजी इस दृश्य को देखकर गुरुचरणों में नतमस्तक हो गई और बारम्बार क्षमायाचना करने लगी और कहा-गुरुदेव! मुझ अल्पज्ञा से आपश्री की और ज्ञानी मुनिराज की आशातना हो गई, मैं आपके भावों को समझ नहीं पायी।

इस प्रकार के अनेक उदाहरण जिनशासन में प्राप्त हो जाते हैं। सेवान्रती साधक भोजराजजी महाराज भी भिक्षाचरी विशेषज्ञ सन्त थे। आपने अध्ययनरत लघुवयस्क आचार्य भगवन्त श्री हस्ती को ज्ञानाराधना में विपुल सहयोग दिया। आचार्यश्री जब कमरे में अध्ययन करते तो आप मानो प्रहरी बनकर बाहर विराजते, जिससे उनके अध्ययन में बाधा उपस्थित नहीं हो। भक्त समुदाय को बाहर से ही मौन दर्शन करने का संकेत करते। आप इस प्रकार का भी ध्यान रखते कि लघुवयस्क आचार्यश्री एवं अन्य अध्ययनरत सन्तों के लिए बौद्धिक रूप से क्या उपयोगी है। आचार्य हस्ती के जीवन-निर्माण में आपका विशेष योगदान रहा। ये उदाहरण ज्ञान की महिमा बताते हुए ज्ञान सीखने वालों को सहयोग प्रदान करने की जीवंत प्रेरणा कर रहे हैं।

इस तरह धर्म हमारे स्वभाव में आए, इसके लिए ज्ञान का होना आवश्यक है। आप ज्ञानवान बनकर दूसरों को सहयोग देते हुए ज्ञान को आचरण में उतारे, जिससे इस भव में, परभव में हमें आनन्द ही आनन्द का अनुभव होगा। इसी भावना के साथ...

सूचना-प्रतिमाह गजेन्द्र निधि, गजेन्द्र फाउण्डेशन और संघ सेवा सोपान के अन्तर्गत संघ के कई सदस्यों द्वारा निरन्तर फण्ड प्राप्त हो रहा है। संघ-सेवा में योगदान देने वाले प्रत्येक सदस्य को संघ साधुवाद ज्ञापित करता है। जो भी सदस्य अपना फण्ड सीधे बैंक में जमा कर सहयोग दे रहे हैं, वे अपनी जमापूँजी का पूर्ण विवरण (मय पता, पेन कार्ड, मोबाइल नं.) मोबाइल 9867325842 के व्हाट्स एप्प अथवा absjrhssangh@gmail.com पर भिजवाएँ, जिससे समय पर आपश्री की सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

-महेन्द्र कुम्भट, कोषाध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

निर्दोष बनने की साधना हेतु पुरुषार्थ

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा सुराणा कटला-महामन्दिर, जोधपुर में 13 अक्टूबर, 2017 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

बन्धुओं!

उत्तराध्ययनसूत्र के श्रेयस्कर अध्ययनों का पारायण चल रहा है। मोक्ष-मार्ग गति नामक अट्टाईसवें अध्ययन में साधक साध्य और साधन का कैसे उपयोग करता है, बन्धनों से कैसे छुटकारा पाता है इसको जानना जरूरी है। बन्धन क्या है? सचेतन या अचेतन द्रव्य को ममता-बुद्धि से ग्रहण करना बन्धन है। मार्ग या पथ क्या है? निर्मम-निरहंकार बनना मार्ग है, पथ है। पथ पर साधक का परिपूर्ण पुरुषार्थ उसकी गति है। मोक्ष-मार्ग गति में पथ, पद और पाथेय को समझना होगा।

पथ अर्थात् ज्ञान, पद यानी दर्शन और पाथेय का मतलब है-चारित्र्य। पथ में ज्ञान का अधिकार है। छह द्रव्यों का कथन है। उनके गुणों की चर्चा के बाद लक्षण और पर्याय का कथन समझने योग्य है। ज्ञान क्या है? निज स्वरूप में अचलता का बोध ही ज्ञान है। यहाँ अचलता और चञ्चलता को देखना होगा। चञ्चलता क्यों आई? चञ्चलता आने का कारण है-पुद्गल का संसर्ग। जड़ के सम्पर्क से स्थिरता नहीं रह सकती और कम्पनता से चञ्चलता आती ही है। हम महापुरुषों के भजन की कड़ियाँ देखें तब भी हमें ज्ञात होगा कि अचलता आवश्यक है। सिद्ध स्तुति में आप बोलते हैं-“अज अविनाशी अगम अगोचर, अमल अचल अविकार।” आचार्यश्री हस्ती के द्वारा रचित ‘मेरे अन्तर भया प्रकाश’ भजन में आप गुणगुनाते हैं-“सदा शान्तिमय मैं हूँ, मेरा अचल रूप है खास।” भजन की एक कड़ी जो प्रायः आपको याद है, उसे बोलते हैं, तो आता है-‘शक्ति का भण्डार भरा है, अचल अमल मम

रूप।’ भजन ही क्या, नमोत्थुणं के पाठ में आप बोलते हैं-सिवमयल अर्थात् अचल। भजन हों या सिद्धों की स्तुति, हर जगह अचल शब्द है।

जहाँ अचलता है वहाँ चञ्चलता नहीं हो सकती। चञ्चलता दोष है। दोष की जानकारी होने से ही साधक-भाव प्रस्फुटित होता है-पुष्ट होता है। दोष कहो या बुराई कहो अथवा पाप कहो, एक ही बात है। जिससे किसी की क्षति हो, अनादर हो या अहित हो वह दोष है, बुराई है, पाप है।

यहाँ थोड़ा विषय को गहराई में समझें। साधक जब भी साधना में आगे बढ़ता है तो वह पाप से दूर रहता है, किसी को नुकसान नहीं पहुँचाता। किसी का अहित करना तो दूर, अहित की सोचता तक नहीं है। साधक पाप-कार्य से दूर रहता है, बुराई से बचता है। साधक होने का अधिकारी वही है जो दूसरों के द्वारा अपने प्रति होने वाली बुराइयों को जानता है या जो अपने ज्ञान से अपने दोषों को जानता है वह साधक होता है। साधक होने का प्रश्न उसके सामने नहीं है जो सर्वांश में निर्दोष है। सिद्ध भगवान सर्वांश में निर्दोष होने से वे साधक नहीं हैं, वे तो साध्य हैं। साधक वह भी नहीं हो सकता जो दोष के ज्ञान से अपरिचित है। मतलब क्या? साधक होने का अधिकारी तभी होता है जब वह निज दोष के ज्ञान से व्यथित होता है और उसमें निर्दोषता की लालसा जगती है। निर्दोषता के बिना साधक को चैन नहीं मिलता। प्रथम श्रेणि का साधक निर्दोषता को वर्तमान की प्राथमिकता मानता है। ऐसा साधक सुगमता से साधन-निष्ठ होकर साधन-तत्त्व से अभिन्न हो

सकता है। साधन अर्थात् सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र। साधक ज्ञान-दर्शन-चारित्र रूप रत्नत्रय की आराधना में तल्लीन होकर मोक्ष रूपी साध्य की साधना करता है।

हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान् मैथिलीशरण गुप्त ने किसी साधक से पूछा-स्वामीजी! पथ-प्रदर्शन कीजिए। साधक से समाधान मिला-‘चलने की रुचि में पथ का दर्शन होता है।’ वहीं पर बैठे भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसादजी ने साधक से पूछा-स्वामीजी! चलना जानते हैं, चलना चाहते भी हैं, पर चल नहीं पाते? उत्तर मिला-‘नहीं चलने की वेदना में ही चलने का सामर्थ्य निहित है।’

उक्त संवाद में रुचि के विषय में कहा गया। मोक्ष-मार्ग गति नामक इस अध्याय में रुचि के लिए बारह गाथाएँ हैं। छत्तीस गाथाओं में से बारह गाथाएँ अर्थात् एक तिहाई भाग रुचि के लिए है। रुचि के कई प्रकार हैं। रुचि स्वभाव से जग सकती है, उपदेश से लग सकती है, रुचि का विस्तार हो सकता है तो रुचि संक्षेप भी की जा सकती है। आचार और जानकारी के द्वारा भी रुचि हो सकती है, यह रुचि थोड़ी भिन्न है। किसी को बन्धन से छुटकारे की रुचि है तो किसी दोषी को निर्दोष बनने की रुचि है। किसी की निज स्वरूप को अभिव्यक्त करने की रुचि है। यह रुचि उपादेय है वरना काषायिक रुचि से तो राग उत्पन्न होता है, राग से बन्धन की दृढ़ता होती है। राग जिससे होता है उससे जुड़ाव होता है। ममत्व होने से उस वस्तु, व्यक्ति के साथ बन्धन हो जाता है। बन्धन से जड़ता और पराधीनता का जन्म होता है। जड़ता से अपने में देह-भाव की दृढ़ता आती है और जीव अपने आत्मस्वरूप का भान भूलकर शरीरासक्त बन जाता है। पराधीनता से वस्तु, व्यक्ति आदि की दासता उत्पन्न होती है। ठीक इसके विपरीत एक अरुचि को छोड़कर अर्थात् सभी विषयों से अरुचि रूप निर्वेद को छोड़कर किसी वस्तु या व्यक्ति विशेष की अरुचि भीतर में द्वेष उत्पन्न करती है। द्वेष से भेद की दृढ़ता उत्पन्न होती है। द्वेष जिस वस्तु एवं व्यक्ति पर होता है

वह पराया ही माना जाता है। इसलिये द्वेष हमारे और जिससे द्वेष है उसके बीच में भेद डाल देता है। भेद से भय तथा संघर्ष का जन्म होता है। भय से प्राप्त शक्ति की हानि अर्थात् मानसिक रोग और संघर्ष से हिंसा आदि विकारों की उत्पत्ति होती है। अपने को शरीर अथवा शरीर को अपना मान लेने पर ही रुचि-अरुचि का द्वन्द्व उत्पन्न होता है। रुचि-पूर्ति का प्रलोभन देह में अहम्-बुद्धि दृढ़ करता है। परिणामस्वरूप प्राणी अपने को कर्म, चिन्तन और स्थिति में आबद्ध कर विषय-विकारों का भोक्ता हो जाता है। इन रुचि-अरुचि रूप काषायिक भावों का जागरण कैसे होता है? आत्मा की विमुखता के कारण ही रुचि-अरुचि काषायिक भाव जागृत होते हैं। लेकिन विकारों से त्रस्त एवं ग्रस्त होकर जब जीव इन विकारों से विमुख होता है तब आत्मा की रुचि पुष्ट होती है। जब जीव को आत्मा की रुचि होती है तब सभी विकारों से अरुचि हो जाती है। काषायिक रुचि-अरुचि का द्वन्द्व समाप्त हो जाता है और भीतर की रुचि अर्थात् सम्यग्दर्शन प्रकट हो जाता है। इस सम्यग्दर्शन रूप रुचि के 10 भेद ही इस अध्याय में वर्णित हैं, जो कि श्रद्धा प्रतीति-रुचि रूप हैं।

उत्तराध्ययनसूत्र के पच्चीसवें अध्ययन में हम देख चुके-‘भोगी भमइ संसारे...।’ उसी भोक्ता-भाव को समाप्त करने के लिए यह अध्याय अविचल आस्था की प्रेरणा कर रहा है। चलने की रुचि में पथ का दर्शन होता है। जो दोष को दोष नहीं जानता वह असन्नी है, वह साधक नहीं बन सकता। जो दोष को नहीं जानता, वह अपर्याप्त जीव भी साधक नहीं बन सकता। जो दोष को नहीं जानता, वह अल्प-प्रज्ञा वाला है, वह भी साधक नहीं बन सकता।

उत्तराध्ययनसूत्र के तेईसवें अध्ययन में कह दिया गया-‘पण्णा समिक्खए धम्मं’ अर्थात् प्रज्ञा प्रत्यक्षज्ञान, दोष की व्यथा एवं निर्दोष बनने की लालसा है।

मोक्ष-मार्ग गति अर्थात् साध्य में साधन के प्रति साधक का परिपूर्ण पुरुषार्थ। साध्य क्या है? साधन क्या

है? निर्दोषता साध्य है। ज्ञान-दर्शन-चारित्र साधन हैं। जिसमें सम्यग्ज्ञान और दर्शन हैं उसे बाहर से कुछ नहीं चाहिए। न बाहर से चाहिए और न बाहर का ही चाहिए। ये तो भीतर में हैं, बस इन्हें प्रकट करना बाकी है। एक चिन्तक ने ठीक ही कहा है-

“घर का मालिक घर से बाहर,
कहाँ गई भीतर की बहार?”

बाहर की बहार भी कोई बहार होती है? बहार तो भीतर की होती है जिसे बाहर की बयार नहीं लगती। बाहर जाने पर ही बाहरी तत्त्व भीतर में प्रवेश करता है। परिणामस्वरूप बाहर का द्रव्य भी आए बिना नहीं रहता। जो बाहर में रहता है, भोगों में रचा-पचा रहता है उसे ही बाहर के सम्बन्ध होते हैं।

ब्यावर के पण्डित शोभाचन्द्रजी भारिल्ल ने बताया- ‘द्रव्य का ज्ञान के क्षेत्र में और तत्त्व का दर्शन के क्षेत्र में वर्णन मिलता है।’

बिलगोट्स को एक अरब का नुकसान हुआ, आपको क्या फर्क पड़ा? और मुकेश अम्बानी को एक करोड़ का लाभ हुआ, आपको क्या फर्क पड़ा? आपको कोई फर्क नहीं पड़ा, इसका कारण बाहरी है। उनके लाभ-हानि से हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है, क्योंकि हमारा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

बस इसी तरह हमारा यह शरीर है। कभी दो किलो वजन बढ़ गया या घट गया। कोई फर्क पड़ा क्या? यह शरीर बाहरी है न? बस, यही बाहर वाला भीतर में बैठा हुआ है। यही तो अजीब तत्त्व है। इस अनित्य की ओर गतिशील होने पर ही विवेक भाव में बदलता है। भाव अर्थात् राग-द्वेष में बदलना भाव है और जब यह राग-द्वेष रूपी भाव कर्म में बदलता है तो कर्म परिस्थिति में परिवर्तित होता ही है। यह चक्र अनादिकाल से चल रहा है। चार गति रूप चक्र से बाहर निकलने के लिए मोक्ष-

मार्ग गति नामक यह अध्याय प्रगति की दिशा बता रहा है।

‘उपाय की उपस्थिति ही नहीं, उपादेय की प्राप्ति के लिए अपाय की अनुपस्थिति भी अनिवार्य है और वह अनायास नहीं, प्रयास-साध्य है।’ अपाय है-पाप, आस्रव और बन्ध-ये सब हेय हैं। जब पाप, आस्रव, बंध नहीं होंगे तो पुण्य, संवर, निर्जरा और आत्म-भाव स्वतः प्रकट होगा। यह है भीतर की बहार।

जिसे बाहर की बयार नहीं लगती तो फिर जीव का अजीब से पृथक्करण होगा अर्थात् लक्ष्य की प्राप्ति होगी, साध्य का प्रकटीकरण होगा।

पथ मिला अर्थात् दोष दिखने लगे। पद मिला अर्थात् निर्दोषता पर अविचल आस्था हुई। अठारह दोष से रहित-विह्वरयमला, निम्ममे, निरहंकार, वीयरागो, अणासवो-यही तो है निर्दोषता। हाँ, यह निर्दोषता सम्भव है। निर्दोषता अर्थात् दोष-मुक्ति सम्भव है, पर कब? जब दोष की प्रवृत्ति को तिलाञ्जलि मिलेगी।

दोष क्या? अभी आपने सुना था न! जिसमें किसी की क्षति हो, अनादर हो, अहित हो वह दोष है। इस दोषयुक्त प्रवृत्ति का त्याग ही पाथेय है।

ज्ञान से दोष को जाना, दर्शन से निर्दोषता में आस्था हुई, चारित्र से दोषयुक्त प्रवृत्ति को तिलाञ्जलि दी, फिर भी दुःख नहीं मिटा और समस्या का समाधान भी नहीं हुआ। क्रियमाण दोष अर्थात् 18 पाप से छुटकारा तो हुआ, पर कृत-दोष अर्थात् आठ कर्म के रूप में सञ्चित हैं। सञ्चित दोष को खदेड़ने के लिए बाह्य और आभ्यन्तर रूप ‘तप-मार्ग’ नामक तीसवें अध्याय में यथासमय देखा जाएगा। अभी तो हम निर्दोषता के लिए दोषों को जानें। निर्दोषता पर विश्वास करें और दोष-युक्त प्रवृत्ति को छोड़ें तो सञ्चित दोष का वमन हो सकता है। मोक्ष-मार्ग गति से हम भीतर के तत्त्व में लवलीन बनें।

मेरे प्रभु, प्रभु का हूँ मैं....।

गुरु द्वारा सारणा, वारणा, धारणा और शिष्य द्वारा ग्रहणा एवं आसेवना चलती रहे तो साधना में प्रगति हो सकती है।

-आचार्यश्री हस्ती

अभिनिष्क्रमण यात्रा और शुभ प्रवृत्तियों का पोषण

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा. द्वारा 29 जुलाई, 2022 को जैन स्कूल महामन्दिर, जोधपुर में फरमाये गए प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।
-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

सन्त आरम्भ का अनुमोदन नहीं करता तो शुभ-व्यय का निषेध भी नहीं करता। हमारी चर्चा नमिराज की अभिनिष्क्रमण यात्रा को लेकर चल रही है। नमिराज प्राप्त भोगों को छोड़ रहा है।

हमारे मन-मस्तिष्क में भाव आना चाहिए कि भगवान महावीर की अन्तिम देशना उत्तराध्ययनसूत्र का स्वाध्याय करने का पाँचवें आरे में भी सुयोग मिल रहा है। अतः हम उत्तराध्ययनसूत्र की शिक्षाओं का सम्यक् पालन करें।

जाइं सरित्तु भयवं सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे।

पुत्तं ठवेत्तु रज्जे अभिणिक्खमइ नमी राया॥

नवम अध्ययन की इस दूसरी गाथा के अन्तिम चरण का विवेचन चल रहा है। कल आपके समक्ष उत्तरदायित्व का वर्णन किया गया था, आज हम अभिनिष्क्रमण-यात्रा का विवरण-विवेचन सुनें और समझें।

नमिराज ने अपने पुत्र को राज-कार्य करने के योग्य माना तो राज्य का भार उसे सौंपकर अभिनिष्क्रमण करके श्रेष्ठ मुनिधर्म की आराधना के लिए निकल गये।

आप रोज घर से निकलते हैं। ऑफिस जाने वाले ऑफिस जाते हैं, व्यापार-व्यवसाय करने वाले दुकान जाते हैं, आप यहाँ धर्मस्थान पर भी आते हैं, लेकिन यह अभिनिष्क्रमण नहीं है। फिर, अभिनिष्क्रमण किसे कहना? अभिनिष्क्रमण यात्रा का मतलब होता है कि घर में धन-दौलत आदि जो भी हैं उन्हें छोड़कर घर से

निकलना द्रव्य से अभिनिष्क्रमण है। इसके साथ ही भाव से कषायों का त्याग करके निकलना भाव अभिनिष्क्रमण यात्रा है। ऐसा गमन कि दुबारा घर पर लौटना नहीं। वरना आप घर से प्रायः प्रतिदिन निकलते ही हैं और लौटते भी हैं।

विरक्त का मूल लक्ष्य क्या है? वह द्रव्य संसार का तो त्याग करे ही, कषाय का त्याग भी करके घर से निकले, वह होती है उसकी अभिनिष्क्रमण यात्रा। जो अभिनिष्क्रमण करता है वह घर पर रहने के लिए पुनः नहीं आता। सम्मुख रखकर चलना अभिनिष्क्रमण है। क्या सम्मुख रखना है? चारित्र का पालन, कषाय का प्रक्षालन, मुक्ति का आसन। जिसके लक्ष्य में उक्त भाव हैं वह सम्मुख है।

आप सबका लक्ष्य क्या है? आप इस पर विचार करें। आपको भी प्रभु का कथन अपनाकर प्रभु बनना है तो अभिनिष्क्रमण करके साधुत्व स्वीकार करना होगा।

अब प्रश्न होता है कि अभिनिष्क्रमण यात्रा करने पर आडम्बर कर सकते हैं क्या? आडम्बर का तात्पर्य है धन-दौलत का प्रदर्शन। क्या दीक्षा के लिए प्रदर्शन जरूरी है? नहीं। जरूरी नहीं है, पर कोई करता है तो सन्त उसका निषेध भी नहीं करता। क्योंकि वह भी एक प्रभावना का कारण बन सकता है। इतना वैभव, सुख-सुविधाएँ छोड़कर भी वैराग्य धारण कर रहे हैं, यह विशिष्ट कार्य है। दीक्षार्थी का इस प्रदर्शन से कोई सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। उसे आत्मदर्शन में रुचि होनी चाहिए। यह तो परिवार वालों का मोह है जो अनेक कार्यक्रम कराता है। अगर कोई साधारण तरीके से आता

है तो उसे भी प्रभु संयम का दान देते हैं, तो कोई वैभव बिखेरता हुआ आता है तो उसे भी प्रभु अपने पथ का पथिक बनाते हैं। घर वाले विचारते हैं कि राग के बाजे तो हर पीढ़ी में बजते हैं, पर वैराग्य के बाजे तो कई पीढ़ियाँ बीत जाती हैं तब बजते हैं। हरेक के हर पीढ़ी में दीक्षा हुई हो ऐसा जरूरी नहीं, पर हर पीढ़ी में शादी-विवाह तो हुए ही हैं। इसलिये अगर वे अपने पुत्र-पुत्री के अभिनिष्क्रमण पर धन व्यय करते हैं तो यह उनका विषय है। इसलिये आपको पहली पंक्ति बोली थी-“सन्त आरम्भ का अनुमोदन नहीं करता तो शुभ में खर्च का निषेध भी नहीं करता।”

ज्ञानीजन कहते हैं-संसार में घर-गृहस्थी के लिए कमाना पड़ता है। आप न्याय-नीतिपूर्वक कमार्थें, कोई हर्ज नहीं है, लेकिन जो अभिनिष्क्रमण के लिए निकला है वह धन को धूल समान समझता है। वह अपने धन-वैभव का उपयोग धार्मिक-सामाजिक उन्नति के लिए व्यय करे, तो कोई हर्ज नहीं है। वह जब साधुत्व ग्रहण करने के लिए निकला है तो धन-दौलत को शुभ कार्य में लगाये, यह तो ठीक ही है।

अभिनिष्क्रमण यात्रा पर निकलने वाला चाहे एक है या एक से अधिक हैं, उनका पावन प्रब्रज्या अङ्गीकार करके साधना-आराधना द्वारा मोक्ष प्राप्त करना ही एकमात्र उद्देश्य है। आपको ध्यान होगा कि अर्जुन मालाकार भगवान के चरणों में पहुँचा और उसने संयम स्वीकार किया। जो धन-वैभव का त्याग करके संयम पथ पर अग्रसर होता है तो वह शुभ कार्यों में खर्च करके शासन की प्रभावना ही करता है। संघ-समाज सुकृत कार्य की अनुमोदना करता है, कर सकता है। संयम-ग्रहण करते समय विरक्त बाजे-गाजे से आता है तो इसे एकान्त आडम्बर नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इससे शासन की प्रभावना भी होती है। जो आज देखते हैं, हो सकता है कल उनका मन भी संयम-ग्रहण करने की ओर बढ़े। भावी पीढ़ी के लिए भी यह अवसर प्रेरणा देता रहेगा। देखने वाले लोग कहेंगे-देखो भोगने की उम्र में त्यागने चले।

कई लोग हैं जो अभिनिष्क्रमण यात्रा की तरह तपस्या में भी धन-खर्च करने को आडम्बर नहीं मानते। अभिनिष्क्रमण यात्रा और तपस्या में खर्च करना एक समान नहीं है। अभिनिष्क्रमण में द्रव्य का उपयोग प्रेरणा के प्रयोजन से है जबकि तपस्या के अवसर पर व्यय किया गया धन प्रदर्शन और आडम्बर की श्रेणि में है। क्यों? तो कहना होगा-अभिनिष्क्रमण पर जाने वाला पुनः घर नहीं आता, जबकि तपस्वी तप करके घर-गृहस्थी में बना रहता है।

मान लीजिए-एक भाई या बहिन ने मासक्षपण का तप किया। सभी की आर्थिक स्थिति एक जैसी नहीं होती। धनाढ्य-वर्ग खर्च कर सकता है, पर जो मध्यम वर्ग या निम्न वर्ग में हैं, वे खर्च करने की स्थिति में नहीं होते। वे मासक्षपण करने के बजाय एक-दो दिन पहले पारणक कर लेते हैं। कोई पूछता है तो कह देते हैं कि स्वास्थ्य में अनुकूलता नहीं रही।

महापुरुषों ने तपाराधन में फिजूल खर्च और आडम्बर का निषेध किया है। गुरुदेव हीरा तो स्पष्ट फरमाते हैं कि आपने शादी-विवाह तो महँगे कर दिये, अब तपस्या को तो महँगा मत करो।

तप श्रावक-श्राविकाएँ करते हैं तो सन्त-सती भी तपाराधन में पुरुषार्थ करते हैं। सन्त-सती भी यदि आडम्बर-प्रदर्शन में उलझने लग गया तो क्या स्थिति होगी? क्या तपस्या पर खर्च करना उचित होगा? सन्त-सती वर्ग ने संयम-पथ अपनाया है उसके पीछे एक ही लक्ष्य है कि ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की साधना करके सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बनें।

जब सन्त-सती बनते हैं तब प्रदर्शन भी प्रभावना का एक निमित्त बनता है। जो भी देखता है उसके दिल-दिमाग में दीक्षा की भावना बन सकती है। लेकिन सन्त-सती तपस्या में दिखावा करे, आडम्बर-प्रदर्शन को प्रश्रय दे और संघ-समाज को मना नहीं करे तो वह ग़लत है और फिजूल का खर्च है, उससे किसी को कोई लाभ नहीं होता है।

सन्त-सती वर्ग तप करे, तप करना चाहिए, किन्तु

आडम्बर-प्रदर्शन और दिखावे की बजाय साधना-आराधना द्वारा लक्ष्य साधने का उपक्रम रहना चाहिए।

एक पुत्र ने दीक्षा ले ली। संघ-समाज ने जलसा निकालने का अनुरोध किया। आज कई हैं जिनकी उम्र हो गई, किन्तु वे घर पर बैठे हैं और कुछ ऐसे भी हैं जिनकी लघु उम्र है यानी छोटे हैं तब भी वे दीक्षा लेकर अपना आत्म-कल्याण करना चाहते हैं। होता है, किन्हीं का चारित्र-मोहनीय का क्षयोपशम होता है तो वे छोटी उम्र में प्रव्रज्या अङ्गीकार कर लेते हैं। उनका छोटी उम्र में त्याग प्रभावना का कारण बन सकता है, इसलिये संघ उनके जुलूस, वरघोड़ा, प्रव्रज्या यात्रा निकालता है।

नमिराज ने समस्त भोगों को काग-बीट की तरह त्यागकर दीक्षा ले ली। यहाँ प्रश्न हो सकता है कि काग-बीट ही क्यों कहा गया, कबूतर आदि बीट क्यों नहीं कहा ?

देखिए, काग-बीट किसी काम की नहीं, जबकि कबूतर की बीट फोड़े-फुन्सी ठीक करने के काम में ली जाती है। गाय का गोबर भी काम में आता है। ऐसे तो पशु बहुत हैं जिनका अवशिष्ट पदार्थ भी काम का होता है।

नमि समस्त ऋद्धि-सिद्धि, सुख-सुविधा का त्याग करके संयम-पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने अपनी जिम्मेदारी पुत्र को सौंपकर साधु-जीवन अपना लिया। आपसे पूछें-आप कौन-कौन हैं जो संयम साधना की ओर अग्रसर होना चाहते हैं? जिनके अब गृहस्थी के उत्तरदायित्व पूर्ण हो चुके हैं, पर फिर भी अभी मोह नहीं छूटा, इसलिये गादी पकड़ रखी है। इसी मोह-अज्ञान के कारण सुकृत में विकृति आ गई।

आज आडम्बर-प्रदर्शन और दिखावे का बोलबाला है। पर, आप मानकर चलिए कि व्यर्थ के कार्यों में आडम्बर से शासन की प्रभावना नहीं होती। हमारे आचार्यों ने तपस्या के प्रसङ्ग पर बैण्ड-बाजे से लाना और प्रभावना के नाम पर कुछ देना ठीक नहीं माना है। हाँ, इस प्रकार से अनुमोदना ही करनी हो तो आप दीक्षा की करें। कुछ खर्च करना हो तो शुभ कार्यों में खर्च

करें, उसकी मनाही नहीं है। आप अनाथ, गरीब परिवारों की मदद करें, उसकी मनाही नहीं है। आप परोपकार के कार्यों में अपनी धन-लक्ष्मी का उपयोग कर सकते हैं।

भावी आचार्यश्री गोचरी पधारे। उन्होंने गोचरी लाकर रखी और एक तरफ जाकर खड़े हो गये। हम छोटे सन्तों ने देखा कि रोज तो गोचरी लाकर सबको देते रहे हैं, लेकिन आज दूर जाकर क्यों खड़े हैं? हमने भी गोचरी नहीं की और आचार्य भगवन्त ने भी गोचरी के हाथ नहीं लगाया।

आचार्य भगवन्त ने दूर से कहा-महेन्द्र भाई! क्या बात है? कुछ बोलो तो सही? हमने जाकर देखा तो उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी, गीली थी, हृदय भरा हुआ था। वे बोलना चाह रहे थे, पर कुछ बोल नहीं पा रहे थे। जिनका मन कोमल होता है वे कुछ नहीं कहते, लेकिन उनका चेहरा बहुत कुछ बता देता है।

गुरुदेव के पूछने पर भावी आचार्यश्री बोले-“मैं गोचरी गया था, गोचरी आ गयी थी, मगर एक भाई के आग्रह पर मैं उनके घर गया। उसकी भावना थी कि कोई-न-कोई सन्त-मुनिराज मेरे घर पधारें। मैं गया और देखा कि एक गली में उसकी झोंपड़ी थी। घर में उसकी माताजी बीमार थी, वह सोई हुई थी। दवा के लिए भाई के पास पैसे नहीं थे। मैंने माताजी को मंगल-पाठ सुनाया। उस भाई के आग्रह पर मैंने कहा-क्या है तुम्हारे पास? वह बोला नहीं, देखता रहा। मैंने कहा-तुम्हारे पास शक्कर हो तो कुछ दे दो। तुम्हारा हाथ फरसना हो जायेगा? उसने डिब्बा देखा, डिब्बे में चन्द दाने ही शक्कर के थे। क्या लूँ और क्या छोड़ूँ, ये स्थिति थी। एक जैन भाई की ऐसी स्थिति देखकर मुझे मन ही मन बड़ा विचार आया कि एक सहधर्मी के घर पर दवा-रोटी का बन्दोबस्त नहीं और दूसरी तरफ समाज आडम्बर के नाम पर प्रचुर मात्रा में खर्च कर रहा है।”

आज आडम्बर के नाम पर अनाप-शनाप खर्च किया जाता है। दिखावे के नाम पर लाखों खर्च होते हैं, पर क्या ऐसे जैन परिवारों की तरफ किसी का ध्यान

जाता है ?

आप दूँदें तो ऐसे परिवार सब जगह मिल सकते हैं, पर किसको फुर्सत ? कौन जाये ? कौन देखे ? जबकि होना तो यह चाहिए कि—

सहधर्मी बिसरूँ नहीं, क्रोड़ जनों के बीच।

धेनु सम उनसे मिलो, वत्सल भाव उलीच॥

आज जरूरत है ऐसे परिवारों को सम्भालने की।

आप सब संघ-दीप्ति और शासन प्रभावना करना चाहते हैं तो संघ के पदाधिकारीगण और संघ-सेवी सुज्ञ श्रावकगण ऐसे जरूरतमन्द परिवारों को देखकर उनका दुःख-दर्द दूर करने का प्रयास करें।

आज हमने नमिराज ऋषि की अभिनिष्क्रमण की चर्चा की। आगे की चर्चा समय के साथ रखने का भाव है। इन्हीं शुभ भावों के साथ अपनी वाणी को विराम।

मैं मूढ़ व्यक्ति

डॉ. रमेश 'मंयक'

मैं मूढ़ व्यक्ति—

धर्म को नहीं जानता

जरा-मृत्यु के प्रभावों को

क्यों नहीं मानता ?

मैं मूढ़ व्यक्ति—

घुटनों में दर्द रहता,

कम सुनने लगा

हर व्यक्ति कहता,

आँखों से ठीक से देख नहीं पाता,

पत्नी-पुत्र की उपेक्षाओं का

शिकार होता जाता,

बुढ़ापा होता है दुःखदायी

क्यों नहीं स्वीकारता

मैं मूढ़ व्यक्ति—

मोह युक्त-अज्ञानी

क्यों करता रहता बार-बार

इच्छाओं के अतिक्रमण की नादानी

नहीं करता आदर सच्चाई का

शरीर की आसक्ति को नहीं छोड़ता

कम नहीं होती मेरी मूढ़ता

कब-कामनाओं पर नियन्त्रण करने की ठानूँगा

कब-धर्म की सच्चाई को मानूँगा ?

मृत्यु तो आनी ही है

कब शाश्वत सत्य को मानूँगा ?

मैं मूढ़ व्यक्ति—

भय मुक्त होने के उपाय क्यों नहीं जानता ?

धर्म को क्यों नहीं मानता ?

मैं मूढ़ व्यक्ति—

धर्म का सही स्वरूप

कब-कैसे जानूँगा ?

जीवन की अनित्यता को

समझकर धर्मनिष्ठ बनने की ठानूँगा ?

जन्म पाया है तो रोग भी आएँगे

शारीरिक व्याधियों के कष्ट सताएँगे

दुःख की स्मृति ही

विरक्ति भाव जगाएगी

अशान्त-पीड़ित व्यक्ति को

धर्मनिष्ठ जीवन से मिलती

परम शान्ति, समझाएगी

मुक्ति पथ पर चलने

ऋदम बढ़ाया तो

मूढ़ता क्षीण होते होते

विलुप्त हो जाएगी

मैं मूढ़ व्यक्ति-मूढ़ नहीं रहूँगा

धर्माचरण करके-जीवन सफल बनाओ

सभी से यही कहूँगा।

-बी 8, मीरा नगर, चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

पुस्तकों की उपयोगिता

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य एवं सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. की निश्रा में विराजित श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा 16 जुलाई, 2022 को प्रतापनगर, जयपुर में फरमाये गये प्रवचन का आशुलेखन श्री राजकुमारजी लोदिया, जयपुर के द्वारा किया गया।

-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

हमारे जीवन को आगे बढ़ाने में-1. सन्त, 2. ग्रन्थ और 3. पन्थ का विशेष महत्त्व है। यदि इन तीनों में से एक का भी सहारा मिल जाय तो हमारे जीवन को सही मार्गदर्शन मिल सकता है। हमारे जीवन में एक सन्त हो तो जीवन में पवित्रता बनी रहती है। जिसके जीवन में सन्त है उसका जीवन बसन्त है। इसलिए सन्त हमारे जीवन के आदर्श होने चाहिए। यदि किसी का मन भटका हुआ है तो सन्त की शरण में जाकर वह सही मार्ग पर चलने लगता है। इतिहास उठाकर देखेंगे तो कई ऐसे उदाहरण मिलेंगे, जिनका जीवन गलत दिशा में था, पर सन्त की शरण में जाकर सन्मार्ग की ओर बढ़ गया।

दुनिया ही नहीं, भारत में भी ऐसे कई लोग, कई क्षेत्र और कई स्थान हैं जहाँ सन्तों का समागम नहीं होता, 100-100 वर्ष व्यतीत हो गए, जहाँ सन्तों का पदार्पण नहीं हुआ। ऐसे क्षेत्र में, ऐसे लोगों के लिए सन्तों की वाणी, उनका ज्ञान ये पुस्तकें पहुँचाती हैं। इन पुस्तकों में उन सन्तों की वाणी, विचार, ज्ञान और आचरण की जानकारी होती है।

आज गुरुदेव जोधपुर महामन्दिर में विराजित हैं। यदि आप यहाँ रहते हुए उनके प्रवचन के लाभ से लाभान्वित होना चाहते हैं तो आप हीरा प्रवचन पीयूष पुस्तक का पारायण कर सकते हैं। उनको पढ़कर आपको ऐसा लगेगा जैसे वे स्वयं हमारे सामने प्रत्यक्ष विराजकर अपनी वाणी से प्रवचन दे रहे हैं। यह बात हमें 'ग्रन्थ' बताता है।

तीसरा-पंथ अर्थात् परम्परा, सम्प्रदाय। सम्प्रदाय

बुरा नहीं है, बुरा है सम्प्रदायवाद और आग्रह का भाव। जहाँ अनाग्रह का आलोक है, अनासक्ति की सुवास है, आध्यात्मिकता का आनन्द है, वहाँ सम्प्रदाय सम्प+प्रदाय अर्थात् सम्प को प्रदान करने वाली बन जाती है।

सन्त, ग्रन्थ और पंथ ये तीनों व्यक्ति को पामर से परम बना सकते हैं। इन तीनों के बीच में है-ग्रन्थ। जो बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। ग्रन्थ, सन्त और पंथ दोनों के सही स्वरूप का बोध कराता है।

बन्धुओं! बीच की कड़ी का मजबूत होना बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। यदि बीच की कड़ी कमजोर, ग्लान, म्लान हो जाय तो पहले और पीछे के बिन्दुओं की शक्ति भी सत्त्वहीन हो जाती है। जीवन के हर क्षेत्र में बीच की कड़ी का मजबूत होना परमावश्यक है।

शरीर की दृष्टि से-इस शरीर के तीन भाग-ऊर्ध्वभाग-मस्तिष्क, मध्यभाग-हृदय और अधोभाग-पैर हैं। इन तीनों में मस्तिष्क कम्प्यूटर की तरह काम करता है। स्मरणशक्ति जबरदस्त है, विचार और कल्पना शक्ति का प्रवाह ऊर्ध्वशील है, पैर की गति इतनी तीव्र है कि हिरण की गति की उपमा से उपमित किया जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं, मगर कब? जब मध्यभाग-हृदय सही हो अर्थात् हृदय अपनी गति से चल रहा हो। यदि हृदयाघात हो जाय, Heart Fail हो जाय तो न मस्तिष्क, न पैर, किसी का कोई महत्त्व रहने वाला नहीं। इसलिए कहा-बीच की कड़ी का मजबूत होना नितान्त जरूरी है।

जीवन के क्षेत्र में-जीवन की तीन अवस्थाएँ

हैं-1. बचपन, 2. यौवन और 3. बुढ़ापा। बचपन अधूरा होता है तो बुढ़ापा असक्षम। सक्षम और कुछ कर गुज़रने का हौंसला रखने वाली अवस्था-युवावस्था होती है। घर में एक युवा बच्चे को भी सम्भाल सकता है तो वृद्धजनों की भी सेवा कर सकता है। इन तीनों में बीच की कड़ी है-युवा। युवा का सशक्त, समर्थ और सम्पूर्ण होना अत्यन्त आवश्यक है।

समय के क्षेत्र में-दिन के तीन भाग में सुबह का समय दैनिक आवश्यक शारीरिक कार्यों में अक्सर व्यतीत हो जाता है तो रात्रि एवं सायंकाल का समय-थकान और विश्राम वाला होता है, पर दिन के मध्यभाग दोपहर का समय पूर्ण रूप से कार्यकारी होता है।

धर्म के क्षेत्र में-पंच परमेष्ठी के पाँच पदों में मध्य स्थान पर आचार्य भगवन्त होते हैं। आचार्य अरिहन्त एवं सिद्ध को देखकर चलते हैं और उपाध्याय तथा साधु को मोक्षमार्ग पर साथ लेकर चलते हैं। यह उत्तरदायित्व आचार्य के सबल कन्धों पर होता है, इसलिए आचार्य को पंच परमेष्ठी में मध्य स्थान प्राप्त है।

ऐसे कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। आपमें से कई लोग व्यापार करते हैं उसमें भी एक व्यापारी और खरीददार के बीच में दलाल की अहम् भूमिका रहती है। दलाल, मालिक तक खरीददार को लाता है तो व्यापार आगे बढ़ता है। यदि दलाल बीच में अपनी दाल पकाने, खिचड़ी पकाने लग जाये, झूठ-फरेब करे तो व्यापार अर्श पर पहुँचने के बजाय फर्श पर ही रह जाता है। इसलिए दलाल बीच की कड़ी बनता है। कहने का तात्पर्य है कि न केवल धर्म के क्षेत्र में, अपितु जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बीच की कड़ी का मजबूत होना नितान्त आवश्यक है। यदि जीवन में किसी भी तरह बीच की कड़ी कमजोर हुई तो नुकसान होगा।

सन्त, ग्रन्थ और पंथ इन तीनों में बीच की कड़ी है-ग्रन्थ अर्थात् पुस्तक। भीतर की ग्रन्थियों को खोलने के लिए और निर्ग्रन्थ बनने के लिए ग्रन्थ का स्वाध्याय आवश्यक है।

पुस्तक जीवन को दुरुस्त करने में अपना योगदान प्रदान करती है। जिन-जिनका जीवन आदर्श बना, उनके जीवन में किसी न किसी आदर्श ग्रन्थ का प्रभाव रहा। वर्तमान के बहुचर्चित व्यक्तियों के नाम की चर्चा करें-अन्ना हजारे। अन्ना हजारे के जीवन में एक बार ऐसा प्रसङ्ग आया, एक ऐसा मोड़ आया जब उन्होंने जीवन से निराश-हताश-मायूस हो आत्महत्या करने का निर्णय कर लिया। आत्महत्या करने के पूर्व उनकी नज़र एक पुस्तक पर पड़ती है। उन्होंने ऐसे व्यक्तित्व के धनी की पुस्तक उठाई जिनका जीवन मृतवत् बने जीवन में अमृत का नव-सञ्चार करने वाला है, मरते हुए को संजीवनी के रूप में नव-जीवन प्रदान करने वाला है। ऐसे स्वामी विवेकानन्द की पुस्तक अन्ना हजारे ने पढ़ी और पढ़ते-पढ़ते भीतर में भरा गरल सद्विचारों से बहकर निकलने लगा और अन्ना हजारे की आत्मा ने अन्तर मन में यह निश्चय कर लिया-अब हम अमर भये। जीवन जीने का संकल्प जागृत हो उठा। आत्महत्या जैसे महापाप से अपने-आपको बचाने में पुस्तक ने अपना योगदान प्रदान किया।

पुस्तक जड़ है। जड़ होते हुए भी हमारी जड़ता को जड़मूल से समाप्त करने के लिए एक अमूल्य जड़ी-बूटी है। पुस्तक में चेतना नहीं है, पर चेतनावान् प्राणियों के चित्त में चैतन्य को प्रकट करने में समर्थ है। पुस्तक द्रव्य से खरीदी जाती है भाव को शुद्ध रखने के लिए। पुस्तक हमें ढोंग से नहीं, ढंग से जीना सिखाती है। पुस्तक साता से नहीं, समता से जीना सिखाती है। पुस्तक अजीव होते हुए भी जीव को दिशा देती है। हमें अजीव की भी यतना करनी चाहिए, अजीव/जड़ कहलाने वाली पुस्तकों के प्रति भी हमारा आदर का भाव होना चाहिए।

हमें पुस्तकों के उपयोग हेतु उपयोगवान् और यतनावान् बनने की आवश्यकता है। पुस्तक खरीदते समय व्यक्ति विचार नहीं करता कि इस पुस्तक की मुझे आवश्यकता है अथवा नहीं, घर में पहले से ही यह पुस्तक रखी है या नहीं? विचार किये बिना द्रव्य से

खरीदी गई पुस्तक के प्रति भविष्य में श्रेष्ठ भाव नहीं रह पाते और उसका यह परिणाम आता है कि घर की साफ-सफाई होने पर वे पुस्तकें घर से अलविदा होती हैं।

राजप्रश्नीयसूत्र में पुस्तक को रत्न कहा है। आगम वचन है-पोत्थरयणं। कितनी महिमा है पुस्तक की। पुस्तक-रत्न के प्रति आज समाज में कितना समादर का भाव है? स्थानकों का पुस्तकालय आपको वस्तुस्थिति अवगत करा देगा। पुस्तकें जो हमारे ज्ञान-कोष को समृद्ध करने वाली हैं, उन्हीं पुस्तकों की कितनी आशातना? पूर्व के समय में इतनी पुस्तकें सहज रूप में उपलब्ध नहीं होती थीं। आज तो हर एक भाषा में हर चीज उपलब्ध है। पर विचार यह करना है कि उपयोग बढ़ा है या आशातना? ज्ञानाराधना बढ़ी है या ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध?

पहले तो गुरुगम्य ज्ञान होता था। गुरु शिष्य को और शिष्य पाटानुपाट आगे ज्ञानदान करते। पूर्व के समय में गुरु शिष्य को श्रवण कराते और शिष्य श्रवण के साथ स्मरण, धारण और आचरण की दिशा में आगे बढ़ते। वर्तमान में इस पद्धति में परिवर्तन हुआ है।

पुस्तकों का उपयोग करने से पहले उस पर कवर हो, जिल्द हो, ऐसा ध्यान रखें, जिससे उसकी उम्र बढ़े, उपयोगिता बढ़े अन्यथा थोड़े ही समय में पुस्तक के जीर्णोद्धार की आवश्यकता हो जाती है। धार्मिक पुस्तक हो अथवा अन्य कोई भी पुस्तक, उसका पेज फाड़ना, पेज को मोड़ना, पुस्तक के बीच में मुँहपत्ती, कागज आदि रख देना, ये सब पुस्तकों की आशातना के रूप हैं क्योंकि इससे पुस्तक की बाइंडिंग ढीली होती है। मैल, पसीना, थूक आदि से सनी मुँहपत्ती रखने से ज्ञान की आशातना होती है। इसलिए पुस्तक के प्रति हमारे मन में आदर-समादर का भाव सदा रहना चाहिए।

पूर्व समय में जब ज्ञान पुस्तकाकार रूप नहीं था उस समय स्मृति के आधार पर ताम्रपत्र, ताड़पत्र, भोजपत्र पर उकेरकर पूर्व पुरुषों ने आने वाली पीढ़ी के लिए ज्ञान को सुरक्षित रखा। आज हम पुस्तकों को भी

सुरक्षित नहीं रख पा रहे हैं जबकि वर्तमान में पूर्व की अपेक्षा पुस्तकालय बढ़े हैं। हजारों की तादाद में नई पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं फिर भी हमारा अन्तर-मानस पुस्तकों की यतना में कटिबद्ध नहीं हुआ है। अतः अन्तर की भावना को जगाएँ और पुस्तकों की आशातना होने से अपने को बचाएँ।

पुस्तक जीवन का सबसे श्रेष्ठ पुरस्कार है, जो हमारे जीवन का परिष्कार करता है। पुस्तक जीवन यात्रा का सर्वश्रेष्ठ पाथेय होता है, जो पथ भी देता है, पंथ का परिचय भी देता है एवं प्रशस्त प्रकाश से आपूरित भी करता है। पुस्तक जीवन का एक प्रयोग है, जिसमें व्यक्ति स्वयं गुरु बनकर अपने जीवन को जीने का ढंग सीखता है।

पुस्तक हमें आलोचना-निन्दा से बचाती है और आराधना की ओर बढ़ाती है। जब आप 2-4 सदस्यों के समूह में हों उस समय यदि आपके कर-कमलों में कोई धार्मिक ग्रन्थ हो, पुस्तक हो, तो आप सहज ही आलोचना-निन्दा से बच सकते हैं और आराधना की ओर आगे बढ़ सकते हैं। यदि ग्रन्थ नहीं है तो 2-4 के मिलने पर राग-द्वेष की ग्रन्थि ही पुष्ट होने वाली है। इसलिए पुस्तक हमें आलोचना-निन्दा से बचाती है और ज्ञान-आराधना की ओर आगे बढ़ाती है।

पुस्तकें सभ्यता की आँख हैं, जो इंसान को एक बेहतरीन दृष्टि देती हैं, अच्छे संस्कारों का निर्माण करती हैं, संघर्ष में सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं, जीवन को गहराई से समझने के लिए पथ-दर्शन करती हैं। बिना ग्रन्थ के ईश्वर मौन है, न्याय निद्राधीन है, दर्शन लंगड़ा है और शब्द गुँगे हैं।

महान् दार्शनिक सिसरो ने कहा-ग्रन्थ रहित कमरा आत्मा रहित शरीर के समान है। पुस्तक पूछे गये प्रश्न का प्रत्युत्तर होती है, इसलिए हम अपने जीवन में कृत संकल्प हों कि अपने घर में, अपने स्थानक में, अपने सामायिक के बैग में पुस्तक को, ग्रन्थ को आगम को स्थान देंगे।

जीवन में चार चीजें उपकार करती हैं—साहित्य, सूर्य, सरोवर और सन्त। साहित्य मार्गदर्शक होता है, सूर्य प्रकाशक एवं सरोवर तृषा निवारक होता है, ये तीनों तो एक-एक ही कार्य करते हैं। सूर्य प्रकाशक हो सकता है, मार्गदर्शक और तृषा निवारक नहीं। साहित्य मार्गदर्शक हो सकता है, पर द्रव्य प्रकाश करने और तृषा-निवारण करने में समर्थ नहीं। सरोवर तृषा निवारक हो सकता है, पर मार्गदर्शक और प्रकाशक नहीं। पर सन्त जो होते हैं वे मार्गदर्शक भी होते हैं, प्रकाशक भी होते हैं और तृषा निवारक भी होते हैं। आप सभी सन्त-समागम का लाभ ले रहे हैं।

सन्त आपको पुस्तकों की उपयोगिता का मार्गदर्शन कर रहे हैं कि हम पुस्तकों के प्रति आदरभाव जागृत कर आशातना से बचें, आराधना की ओर आगे बढ़ें। पुस्तक की महिमा कल थी, आज है और कल भी रहेगी। पुस्तक शुभ के साथ शुरू हो और लाभ के साथ पूर्ण हो। हमारे जीवन में भी शुभता और शुभ्रता बढ़े इसके लिए हमने पुस्तक से प्राप्त होने वाले अनेक लाभों की चर्चा की। आज आप सभी अपने-अपने घर की पुस्तकों की प्रतिलेखना करने का लक्ष्य रखेंगे। इन्हीं शुभभावों के साथ।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री महावीर प्रसाद जैन

सितम्बर 2022 की जिनवाणी प्राप्त हुई, जिसमें अच्छे लेखक कैसे बनें? प्रवचन में श्रद्धेय श्री मनीष मुनिजी म.सा. द्वारा विस्तृत विवेचन फरमाते हुए बहुत सुन्दर तरीके से समझाया गया है।

एक अच्छा लेखक बनने के लिए सबसे पहले तीन बातें ध्यान में रखना है—1. विषय तय करना 2. लेखन का अभ्यास करना और 3. लेखन नियमित होना चाहिए। ये तीनों बिन्दु लेखक को सिन्धु तक पहुँचाने वाले हैं, शिखर तक पहुँचाने वाले हैं। इसके अन्तर्गत महाराज साहब ने सुन्दर तरीके से लेखक के गुणों को समझाया है। लेखक जिसमें प्रतिभा की तेजस्विता, स्मृति की प्रबलता और अनुभवों का अम्बार होता है।

‘प्रसन्नता वहाँ, जहाँ अहंकार नहीं’ तिलक नगर, जयपुर में 26 फरवरी 2022 को श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने बहुत ही रोचक तरीके से प्रवचन फरमाया है।

एक भक्त ज्ञानी के पास जाता है। वह ज्ञानी

सत्य-असत्य तथा आसक्त-अनासक्त के भेद से परिचित है। जन्म, जरा, मरण एवं भय से आक्रान्त संसार की व्यथा का जिन्हें भान है, ऐसे ज्ञानी गुरु भगवन्त के समीप भक्त पहुँचता है। भक्त ने गुरु से निवेदन किया ‘मैं प्रसन्नता चाहता हूँ।’ सामान्य रूप से हर व्यक्ति, चाहे समझदार हो या गँवार, छोटा बच्चा हो या बड़ा व्यक्ति, हर कोई प्रसन्नता की चाह रखता है।

अपने अन्दर में जो अहंकार का भाव प्रतिष्ठित है, उसे हटाकर नष्ट कर दो, मिटा दो, समाप्त कर दो। फिर प्रसन्नता प्राप्त हो जायेगी।

श्रद्धेय श्री महाराज साहब ने इतनी सुन्दर बात बताई है कि इंसान का अपना क्या है? जन्म दूसरों ने दिया, नाम दूसरों ने रखा, शिक्षा दूसरों द्वारा दी गई, रोजगार दूसरों ने दिया, इज्जत दूसरों ने दी। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त जो कुछ भी हमें मिला, उसमें अपना क्या? कुछ भी तो अपना नहीं है। सब इधर-उधर से उधारी से प्राप्त किया हुआ है। यह जीव खाली हाथ आया था और खाली हाथ जाता है।

—महावीर जन्मल स्टोर, ग्राम पो. कुण्डेरा,
जिला-सवाईमाधोपुर-322029 (राज.)

संघनायक पूज्य गुरुदेव का प्रभावी व्यक्तित्व

श्री नौरतनमल मेहता

गुणसम्पन्न आचार्यश्री हीरा

स्थानकवासी परम्परा के ज्येष्ठ आचार्य पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम तो हैं ही, आपश्री की कथनी-करणी की एकरूपता सबको भाती है-सुहाती है। गुरु हीरा में अनेकानेक विशिष्ट सदगुण हैं। सिद्धान्त प्रियता के साथ निर्भयता-निःस्पृहता-निरभिमानता आपश्री में कूट-कूट कर भरी है। आप सरलता-सादगी-सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति हैं तथा आपमें निभने-निभाने की अद्भुत क्षमता है।

पुण्यधरा पीपाड़ में प्रव्रज्या

अध्यात्मयोगी आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के विक्रम सम्वत् 2020 (सन् 1963) के पीपाड़ चातुर्मास में मुमुक्षु श्री हीरालालजी गाँधी की भागवती दीक्षा कार्तिक शुक्ला षष्ठी को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। आचार्यश्री हीरा का 60वाँ दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी (30 अक्टूबर, 2022) को उपस्थित हुआ। संघ स्तर पर महापुरुष का दीक्षा-दिवस सिद्धि तप की सम्पूर्ति दिवस के साथ (उपवास या एकाशन) मनाया जा रहा है।

चादर महोत्सव

आचार्यश्री हीरा का चादर-महोत्सव विक्रम सम्वत् 2048 (सन् 1991) ज्येष्ठ कृष्णा पञ्चमी को जोधपुर में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। चादर महोत्सव पर समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्रीसंघों के अलावा हजारों की संख्या में गुरुभक्तों का आना तो रहा ही, जोधपुर विराजित प्रायः सभी स्थानकवासी परम्परा के सन्त-मुनिराजों एवं महासतीवर्याओं ने पधार कर चादर-महोत्सव को यादगार बनाया। परस्पर प्रेम-मैत्री-

सहयोग का सुन्दर नज़ारा आज भी व्यक्ति-व्यक्ति के मुख पर है।

आचार्यश्री हस्ती की सेवा-सन्निधि में चातुर्मास तथा विचरण-विहार

गुरु हस्ती की सेवा-सन्निधि में गुरु हीरा ने विक्रम सम्वत् 2023 से 2047 (सन् 1966 से 1990) तक 28 चातुर्मासों में से 27 चातुर्मास एवं विचरण-विहार पूज्य गुरुदेव की चरण-सन्निधि में रहकर किए। केवल मात्र एक चातुर्मास गुरु आज्ञा से गुरुहीरा ने स्वतन्त्र रूप से किया। विक्रम सम्वत् 2044 (सन् 1987) का गुरु हीरा का चातुर्मास नागौरवासियों को आज भी याद है।

पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. के साथ जो वर्षावास किए उनमें अहमदाबाद-गुजरात (विक्रम सम्वत् 2023), इन्दौर-मध्यप्रदेश (विक्रम सम्वत् 2035), जलगाँव-महाराष्ट्र (विक्रम सम्वत् 2036 तथा 2039), चेन्नई-तमिलनाडु (विक्रम सम्वत् 2037), रायचूर-कर्नाटक (विक्रम सम्वत् 2038) के अलावा शेष सभी चातुर्मास राजस्थान में सम्पन्न हुए।

गुरु हीरा-गुरु मान के संयुक्त चातुर्मास

आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर पण्डित रत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के साथ संयुक्त चातुर्मास पहली बार विक्रम सम्वत् 2048 (सन् 1991) का जोधपुर में किया। तदन्तर विक्रम सम्वत् 2065 का मदनगंज-किशनगढ़ का चातुर्मास, विक्रम सम्वत् 2067 का जलगाँव-महाराष्ट्र और विक्रम सम्वत् 2068 का धूलिया चातुर्मास शासन-प्रभावना की दृष्टि से सफल रहे।

आचार्यश्री हीरा के अन्य प्रदेशों में यशस्वी चातुर्मास

आचार्यश्री हीरा के आचार्यकाल में बालकेश्वर-मुम्बई का चातुर्मास विक्रम सम्वत् 2059, इचलकरंजी-महाराष्ट्र का विक्रम सम्वत् 2060, शूलै-बेंगलोर-कर्नाटक का विक्रम सम्वत् 2061, बीजापुर-कर्नाटक का विक्रम सम्वत् 2064, काँदीवली-मुम्बई का विक्रम सम्वत् 2065 और पालड़ी-अहमदाबाद-गुजरात का विक्रम सम्वत् 2066 का चातुर्मास सफल एवं प्रभावी रहा। गुरु हीरा के शेष सभी चातुर्मास राजस्थान में हुए।

आचार्यश्री हीरा के स्वास्थ्य में प्रतिकूलता

पाद-विहार में कठिनाई के कारण गुरुदेव ने छोटे-छोटे गाँवों में शेखेकाल समय बिताकर विचरण-विहार का क्रम बनाए रखा। निमाज चातुर्मास के पश्चात् भोपालगढ़, मेड़तासिटी, पाली, कोसाणा के चातुर्मास हुए, परन्तु पीपाड़ के चातुर्मास (विक्रम सम्वत् 2078) में तो चलने की स्थिति नहीं होने से गुरुदेव को काफी समय पीपाड़ विराजना पड़ा।

पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य में अनुकूलता नहीं है, अतः जोधपुर, रणसीगाँव, पाली जैसे क्षेत्रों की निरन्तर विनतियाँ चलने लगीं। जोधपुर का तो जो भी श्रावक आता वह श्रीचरणों में प्रार्थना करता कि-बाबजी! आपश्री जोधपुर पधारें। वहाँ चिकित्सा सुविधा है तो हजारों जैन समाज के घर आपश्री का सान्निध्य चाहते हैं।

गुरुदेव की निर्णय-क्षमता ही थी जो 47⁰-48⁰ तापमान में पीपाड़ से विहार का निर्णय किया। गुरुदेव ने घोषणा के अनुसार पीपाड़ से विहार किया और प्रतिदिन विहार का क्रम सन्त-मुनिराजों के सहयोग से चलता रहा। जोधपुर के शक्तिनगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधार कर वहाँ कुछ दिन विराजे।

संघनायक पूज्य गुरुदेव के जोधपुर पधारने से रत्नसंघ के सुज्ञजनों को तो सन्तोष रहा ही, सकल जैन समाज को हर्ष हुआ कि ज्ञान-क्रिया के बेजोड़ संगम

जोधपुर पधार गये हैं। रत्नसंघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों से लेकर स्थानीय संघ एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं के अथक प्रयासों एवं निरन्तर विनति से गुरुदेव का मानस बना। विहार में जोधपुर के सुश्रावक तो थे ही, पीपाड़ के युवकों ने भी अच्छी भागीदारी निभाई।

चातुर्मासों की घोषणा

आचार्यश्री हीरा की आज्ञा-अनुमति से भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने कतिपय चातुर्मास खोले, जिनमें पूज्य गुरुदेव का महामन्दिर-जोधपुर चातुर्मास भी था। भावी आचार्यश्री ने गुरुदेव के पाद-विहार करके चातुर्मास स्थल पर पधारने की बात भी फरमायी तो श्रोताओं को आश्चर्य तो हुआ ही, जोधपुर वासियों ने देखा कि गुरुदेव शक्तिनगर तीसरी गली (ऋषि आश्रम), डंको बाजे स्थानक और समता भवन विराज कर चातुर्मास स्थल तक पाद-विहार करके पधारे। सैकड़ों-हजारों लोगों ने देखा तो उन्हें महापुरुष की संकल्पबद्धता तो देखने को मिली ही, वचन-सम्पदा पूरी होने का अहसास भी हुआ।

ऋषि सम्प्रदाय के विद्वान् सन्त श्रद्धेय उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी महाराज आदि ठाणा आचार्यश्री हीरा की सुख-शान्ति पृच्छा करने छठी गली स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन पधारे तो उन्होंने कहा-“ऐसा खुला-खुला हवादार विशाल भवन छोड़कर आपने कैसे महामन्दिर चातुर्मास घोषित किया?” गुरुदेव ने तत्काल कहा-“मैं तो वहाँ तपने जा रहा हूँ।”

आचार्यश्री हीरा के शासनकाल में दीक्षा-महोत्सव

रत्नसंघ में आचार्यश्री हीरा की आज्ञा-अनुमति से अब तक 47 दीक्षा-महोत्सव सफल रहे हैं। वर्तमान में रत्नसंघ में 24 सन्त-मुनिराज और 105 महासतियाँजी म.सा. हैं। कुल संख्या 129 है।

रत्नसंघ के इतिहास में गुरु हीरा की आज्ञा से सर्वाधिक दीक्षाएँ हुई हैं। आचार्यश्री हीरा के निर्देश पर भावी आचार्यश्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने 26 सितम्बर,

2022 को प्रवचन-सभा में घोषणा की कि विजया दशमी को (आश्विन शुक्ला दशमी, बुधवार, 5 अक्टूबर, 2022 को) एक मुमुक्षु बहिन सुश्री स्नेहाजी भण्डारी की जैन भागवती दीक्षा व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के मुखारविन्द से रायचूर-कर्नाटक में होनी है। कतिपय विरक्त-विरक्ताओं की निकट भविष्य में दीक्षा की सम्भावना है।

सन्त-सतियों के अन्तिम मनोरथ-सिद्धि में संघनायक की शुभ भावना

आचार्यश्री हीरा सन्त-सतीवृन्द के अन्तिम मनोरथ-सिद्धि में सदा से शुभ भावना रखते आए हैं। आचार्यश्री हीरा के शासन में कुछ बड़े संथारे हुए तो ग्यारह दिन तक चौविहार संथारा भी हुआ। रत्नसंघीय सन्त-सतीवृन्द संलेखना-संथारा-समाधिमरण से मृत्यु को महोत्सव बनाने में सजग रहते हैं। फिर संघाड़ा प्रमुख समय के साथ संघनायक पूज्य गुरुदेव से आज्ञा-अनुमति की आकांक्षा से वस्तुस्थिति की जानकारी देकर आचार्यश्री की आज्ञा से प्रत्याख्यान करवाते हैं।

पण्डित रत्न श्री शुभेन्द्रमुनिजी म.सा. को भोपालगढ़ में 16 दिन का संथारा आया।

दृढ़ संकल्पी-वयोवृद्धा महासती श्री सूरजकँवरजी म.सा. ने अजमेर में 11 दिन का चौविहार संथारा करके पण्डित-मरण प्राप्त किया। 11 दिन का चौविहार संथारा न देखा गया है, न ही सुना गया, मगर उन महासतीजी ने रत्नसंघ में कीर्तिमान कायम किया है जो सदा याद रहेगा।

शासन प्रभाविका विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. ने जोधपुर में 16 दिवसीय संथारा करके शासन-प्रभावना में एक नया नाम जोड़ा।

पुण्यधरा पीपाड़ में सुश्रावक श्री मोतीलालजी कटारिया ने संयम अङ्गीकार करके स्थानक में गुरुदेव के मुखारविन्द से संथारे के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा. का संथारा उसी दिन सीझा।

मुनि-मण्डल के तरुण तपस्वी श्री कैलाशमुनिजी

म.सा. का जोधपुर में, थोकड़ों के ज्ञाता श्री दयामुनिजी म.सा. का भोपालगढ़ में, वयोवृद्ध श्री राममुनिजी म.सा. का पीपाड़शहर में, आत्मार्थी श्री बलभद्रमुनिजी म.सा. का बालोतरा में, तपस्वी श्री मोहनमुनिजी म.सा. का भोपालगढ़ में सावचेत अवस्था में संथारा करना और संथारा सीझना रत्नसंघ की विशेषताओं में से एक विशेषता है।

महासती वर्याओं में महासती श्री शशिप्रभाजी म.सा. का जोधपुर में, साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री बदनकँवरजी म.सा. का जोधपुर में, महासती श्री राजमतीजी म.सा., साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकँवरजी म.सा. का जोधपुर में, सरल हृदया महासती श्री सायरकँवरजी म.सा. का पीपाड़ में, महासती श्री समताजी म.सा. का गोटन में, महासती श्री वैराग्यश्रीजी म.सा. का शोरापुर में, महासती श्री विचित्राश्रीजी म.सा. का जयपुर में, तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकँवरजी म.सा. का जोधपुर में समाधि-मरण का वरण कर रत्नसंघ की महिमा को अभिवृद्ध करता है।

आचार्यश्री हीरा की अद्भुत निर्णय-क्षमता के कतिपय दृष्टान्त

भावी आचार्यश्री की घोषणा-महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के सदगुणों से प्रभावित होकर संघनायक पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. ने पुण्यभूमि पीपाड़ के चातुर्मास विक्रम सम्बत् 2078 को संवत्सरी महापर्व के दिन आगम वाचनी के पहले भावी आचार्य की घोषणा करके सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

महामन्दिर चातुर्मास में संवत्सरी महापर्व के दिन भावी आचार्यश्री का एक वर्ष का कार्यकाल पूरा हुआ। रत्नसंघीय सन्त-मुनिराजों ने एवं महासतीवर्याओं ने अपने-अपने चातुर्मास में भावी आचार्यश्री के सदगुणों पर प्रकाश डालते हुए उनके व्यक्तित्व-कृतित्व को रेखांकित किया। भावी आचार्यश्री के कार्यकाल के एक

वर्ष पूर्ण होने पर त्याग-तप में सभी क्षेत्रों के भाई-बहिनो ने स्वेच्छा से व्रत-नियम लिये।

संघ-समाज स्तर पर आचार्यश्री हीरा के इस साहसिक और ऐतिहासिक निर्णय पर हर्ष और गर्व किया। जैन समाज के प्रबुद्धजनों ने आचार्यश्री हीरा की सकारात्मक सोच पर प्रमोदभाव व्यक्त किया।

भावी आचार्यश्री संयम-साधना में रत रहते हुए दीर्घायु हों और संघोन्नति में आपश्री नए आयाम स्थापित करें, यही मंगल मनीषा है।

संघनायक की भावनानुसार भावी आचार्यश्री की भूमिका

रत्नसंघ में सन्त-सतियों के स्वास्थ्य-समाधि की जानकारी लेकर यथोचित निर्देश करना, संघनायक की सेवा-सन्निधि में श्रीसंघों से एवं गुरु भक्तों से बातचीत करना और उन्हें धर्म से जोड़ना, नवदीक्षित गुरुभक्तों को गुरुमन्त्र देना, समय-समय पर आगत लोगों को व्रत-नियम करवाकर, मंगलपाठ देने के अतिरिक्त भावी आचार्यश्री संघनायक पूज्य गुरुदेव के आदेश-निर्देश-

संकेत से सभी कार्य बखूबी देख रहे हैं। भावी आचार्यश्री की भूमिका और भागीदारी से सकल समाज सन्तुष्ट है।

संघ की प्रवृत्तियों में निखार आये, कार्यक्रमों में त्याग-तप की प्रधानता रहे और छोटे-बड़े सभी श्रावक-श्राविका सुयोग्य बनें, एतदर्थ भावी आचार्यश्री व्यक्तिशः और समूह में सतत और प्रभावी प्रेरणा कर रहे हैं।

संघनायक पूज्य गुरुदेव के स्वास्थ्य में समाधि

आचार्यश्री हीरा के स्वास्थ्य में सतत सुधार चल रहा है। प्रतिदिन प्रवचन पश्चात् ऊपर से मांगलिक देना तथा वाचनी पश्चात् मंगल-पाठ सुनाने के अतिरिक्त संघनायक जप-तप में निमग्न रहते हैं।

सामाचारी का पूरा-पूरा पालन करना गुरुदेव की प्रमुख विशेषता है। आपश्री इस पर खरे तो हैं ही, अपने सन्त-सतियों को भी सामाचारी का दृढ़ता से पालन करने की प्रेरणा भावी आचार्यश्री से करवाते हैं।

-9, पारस, शिवशक्ति नगर, रोड़ नं. 1, महामन्दिर, जोधपुर-342010 (राजस्थान)

60वाँ दीक्षा-दिवस

गुरु गुणगान

श्री विजेन्द्र जैन

(तर्ज :: ऐ मेरे प्यारे वतन.....)

ऐ मेरे हीरा गुरुवर, वन्दन बारम्बार.....॥

तेज इनका जैसे दिवाकर, वाणी है इतनी मधुर,
विनय भाव इनका है ऐसा, नहीं है कोई गरूर।

ऐ मेरे हीरा गुरुवर, वन्दन बारम्बार॥

प्रवचन में गर्जना ऐसी, जैसे सिंह समान,
हटती नहीं नज़र मेरी, हैं ये देव समान।

ऐ मेरे हीरा गुरुवर, वन्दन बारम्बार॥

हस्ती के हीरा तुम, जिनशासन की शान,

विस्मित हुआ आचरण से,

कथनी करणी एक समान।

ऐ मेरे हीरा गुरुवर, वन्दन बारम्बार..... ॥

रत्नों में रत्नाकर हो, माला मोती समान,
स्तम्भ दिया संघ को नवमा, महेंद्र जिनका नाम।

ऐ मेरे हीरा गुरुवर, वन्दन बारम्बार॥

मन मुदित होता मेरा, पाकर इनके दर्शन,

स्वीकार करो मेरा प्रभो, वन्दन और नमन।

ऐ मेरे हीरा गुरुवर, वन्दन बारम्बार.....॥

-77/325, अग्रवाल फार्म, मानसरोवर, जयपुर-
302020 (राजस्थान)

जैन परम्परा में रात्रिभोजन-त्याग : वसुनन्दि श्रावकाचार के विशेष सन्दर्भ में

श्रीमती वर्षा जैन

जैन परम्परा में रात्रि-भोजन त्याग की महत्ता निःसन्देह स्वीकार की गयी है, जिसके मूल में अहिंसा की परिपालना प्रमुख है। साथ ही रात्रिभोजन-त्याग को स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण स्वीकार किया गया है। इस बात की सहमति वर्तमान में विज्ञान भी प्रदान करता है।

वर्तमान मानव पर्याय में सुख, शान्ति एवं स्वस्थ जीवन जीने की कला के साथ आगामी काल में मोक्षसुख की प्राप्ति के अनेक सूत्र उपलब्ध होते हैं। उन्हीं सूत्रों में से एक है-रात्रिभोजन-त्याग।

भारतीय संस्कृति के सभी धर्मग्रन्थों में रात्रिभोजन-त्याग को उचित ठहराया गया है, परन्तु जितना समीक्षात्मक, धार्मिक, सामाजिक, वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टिकोण सहित सुन्दर विवेचन जैन ग्रन्थों में मिलता है, उतना अन्य ग्रन्थों में नहीं। उन्हीं जैन ग्रन्थों में से एक है- 'वसुनन्दि श्रावकाचार।'

आचार्य वसुनन्दि द्वारा रचित 'वसुनन्दि श्रावकाचार' में प्रतिपादित है कि जैनाचार या श्रावकाचार का बाह्य लक्षण तीन बातों से है-देवदर्शन, स्वच्छ वस्त्र से जल छानकर पीना तथा रात्रिभोजन-त्याग। श्रावक हो या अनगार दोनों को ही व्रतों की रक्षा के लिए अनस्तमित अर्थात् दिवा भोजन नामक व्रत का पालन करना आवश्यक है-इसके सन्दर्भ में आचार्य कहते हैं -

सागारे वाऽनगारे वाऽनस्तमितमणुव्रतम्।

समस्तव्रतरक्षार्थं स्वरव्यंजनभाषितम्।।¹

संसार में वही श्रावक बुद्धिमान है, जो त्यागपूर्वक व्रतों को धारण करता हुआ जीवन व्यतीत करता है।

श्रावक के मूलगुणों में रात्रिभोजन त्याग करना अनुभव और आगम से सिद्ध है। श्रावक-व्रतों का विकास उत्तरोत्तर ग्यारह प्रतिमाओं का अनुपालन करने में है। प्रतिमा रूप व्रतों का प्रारम्भ रात्रिभोजन-त्याग से ही होता है। प्रतिमाओं के सन्दर्भ में आचार्य वसुनन्दि जी अपने ग्रन्थ में कहते हैं-

एयारसेसु पढमं वि जदो णिसिभोयणं कुणंतस्स

ठाणं ण ठाइ तम्हा णिसिभुत्तिं परिहरे णियमा।²

रात्रिभोजन करने वाले व्यक्ति के ग्यारह प्रतिमाओं में से पहली प्रतिमा भी नहीं ठहरती, इसीलिए रात्रिभोजन का त्याग सर्वप्रथम करना चाहिए। रात्रिकाल में चारों प्रकार के आहार का पूर्ण त्याग करना ही रात्रिभोजन-त्याग नामक व्रत है।

रात्रिभोजन के त्यागी को रात्रि में बना हुआ रात्रि को खाना, दिन में बना हुआ रात्रि को खाना तथा रात्रि में बना हुआ दिन में खाना, इन तीनों दोषों से बचना चाहिए। रात्रिभोजन के त्यागी को भोजन कब करना चाहिए, इस सन्दर्भ में आचार्य सुनील सागर जी कहते हैं-

दिवसस्याष्टमे भागे, मन्दीभूते दिवाकरे

नक्तं तं प्राहुराचार्या, न नक्तं रात्रिभोजनम्।³

दिन के आठवें भाग में सूर्य का प्रकाश मन्द हो जाने पर अवशिष्ट काल को आचार्य गण (नक्त) कहते हैं। केवल रात्रि में भोजन करने को ही नक्त भोजन नहीं कहते, अपितु इस समय में भोजन करना भी रात्रिभोजन है। इसी सन्दर्भ में स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षागत श्रावक धर्म में कहा है-

जो चउविहं पि भोज्जं रयणीए णेव भुंजदे णाणी।

ण य भुंजावदि अण्णं, णिसिविरओ सो हवे भोज्जो।⁴

छठी प्रतिमाधारी श्रावक दाल, भात आदि खाद्य, मिष्टान्न आदि स्वाद्य, चटनी आदि लेह, पानी, दूध शरबत आदि पेय पदार्थों का रात्रि में सेवन न स्वयं करता है न ही दूसरों से करवाता है। इसी सन्दर्भ में रत्नकरण्ड-श्रावकाचार में कहा गया है-

अन्नं पानं खाद्यं लेह्यं नाश्नाति यो विभावर्याम्।
स च रात्रिभुक्तिविरतः सत्त्वेष्वनुकम्पमानमनाः।⁵

अर्थात् वह श्रावक रात्रिभुक्तिविरत-रात्रिभोजन-त्याग प्रतिमाधारी कहलाता है जो जीवों पर दयालु चित्त होता हुआ रात्रि में अन्न-दाल, भात आदि, पान-दाख आदि का रस, खाद्य-लड्डू आदि और लेह्य-रबड़ी आदि को नहीं खाता।

(1) आलोकित पान भोजन

अहिंसाव्रत की पाँच भावनाओं में से एक आलोकितपान भोजन है। आलोकितपान भोजन का अर्थ मात्र सूर्य के प्रकाश में भोजन करना नहीं है, क्योंकि सूर्य के प्रकाश में अभक्ष्य भी खाया-पीया जा सकता है। अतः आलोकितपान का सही अर्थ है - सूर्य के प्रकाश में पाँचों इन्द्रियों से देख-शोधकर भोजन करना। भक्ष्य पदार्थों के नाम अभक्ष्य पदार्थों के जैसे न कहना-सुनना भी आवश्यक है। जैसे- नमकीन चावल को पुलाव, भोजन को खाना, कबाब आदि नहीं कहना चाहिये, क्योंकि अभक्ष्य पदार्थों के नाम सुनने से मन में ग्लानि और घृणा आदि उपजती है, जो हिंसात्मक है, अहिंसाव्रत का दूषण है।⁶

(2) रात्रिभोजन के दोष

जैन ग्रन्थों में प्राप्त रात्रिभोजन के दोष निम्न प्रकार हैं-(क) संयम विनाशी-आचार्य अमितगति ने अपने ग्रन्थ में कहा है⁷ कि रात्रिभोजन संयम का विनाश करने वाला होता है। क्योंकि रात्रि में अनेक सूक्ष्म त्रस जीवों के भक्षण का दोष लगता है। जो संयम विनाश के साथ-साथ स्वास्थ्य का विनाश करता है।

(ख) अभक्ष्य सेवन-अभक्ष्य का विवेचन

करते हुए आचार्य वसुनन्दि जी वसुनन्दि श्रावकाचार में कहते हैं-

चम्मट्टि-कीड-उंदुर-भुयंग-केसाइ असण-मज्झम्मि।
पडियं ण किं पि पस्सइ भुंजइ सव्वं पि णिसिसमये।⁸

रात्रि में भोजन बनाने पर असावधानी एवं अन्धेरे के कारण भोजन के मध्य गिरा हुआ चर्म, अस्थि, कीट, चूहा, सर्प आदि कुछ भी दिखाई नहीं देता, साथ ही साथ ऐसे अनेक सूक्ष्म त्रस जीव भी होते हैं जो हमें अपनी आँखों से दिखाई नहीं देते और रात्रिभोजी पुरुष सबको खा जाता है।

(ग) अधोगति में गमन-भारतीय साहित्य परम्परा के प्राचीन ग्रन्थ महाभारत के ज्ञान पर्व में कहा है-

उलूक-काक-मार्जार-गृद्ध-शंबर-शूकराः।

अहिवृश्चिकगोधाश्च जायन्ते रात्रिभोजनात्।।

रात्रि के समय भोजन करने वाला मनुष्य मरकर इस पाप के फल से उल्लू, कौआ, बिलाव, गिद्ध, शंबर, सुअर, साँप, बिच्छू, छिपकली आदि जीवयोनियों में जन्म लेता है।

(घ) पशु तुल्य-जो मनुष्य दिन और रात में खाता ही रहता है, वह बिना सींग और पूछ वाला स्पष्टतः पशु ही है।

(च) सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति-प्रश्नोत्तर श्रावकाचार में रात्रिभोजन-त्याग का विवेचन करते हुए कहते हैं कि भोजन पकते समय पाक भोज्य की गन्ध हवा में फैलती है, उस हवा के कारण उस भोजन में अनेक सूक्ष्म जीव आकर पड़ते हैं। अतः दयाधर्म पालन करने वालों को रात्रिभोजन विष मिले अन्न के समान मानकर सदा के लिए त्याग कर देना चाहिए।

(छ) पारिस्थितिकीय दृष्टि से दोष-रात्रि में वातावरण का ताप सूक्ष्म जीवों एवं अनेक त्रस जीवों की उत्पत्ति में अनुकूलता पैदा करता है। वे सभी जीव जरा सा हवा का झोंका लगने से देखते ही देखते मर जाते हैं।

उनका कलेवर भोजन में मिल जाता है। ऐसी स्थिति में रात्रिभोजन करने वाले को मांस का त्यागी कैसे कहा जा सकता है? अर्थात् नहीं कहा जा सकता।

(ज) रोगोत्पत्ति-रात्रि में सूर्य के प्रकाश के अभाव में अनेक सूक्ष्म त्रस जीव उत्पन्न होते हैं, वे भोजन के साथ पेट में चले जायें तो रोग का कारण बनते हैं, यथा¹²-

चींटी-चींटा	-	बुद्धिनाश।
जूँ-जूँए	-	जलोदर।
मक्खी-पतंगा	-	वमन।
मकड़ी	-	कुष्ठ रोग।
बाल	-	स्वर भंग।
बिच्छू-छिपकली	-	मरण।

अतः रात्रि भोजन का त्याग अनिवार्य है।

(झ) नरकगति का मिलना-महाभारत के शान्तिपर्व में रात्रिभोजन करने वाले मनुष्यों को नरक में जाने का प्रथम द्वार कहा है। नरक के चार दरवाजे बताये गये हैं-रात्रि के समय भोजन करना, परस्त्रीगमन, अचार-मुरब्बा खाना, जमीकन्द खाना-श्वभ्रद्वाराणि चत्वारि प्रथमं रात्रिभोजनम्।¹³

(3) रात्रिभोजन संसार-भ्रमण का कारण

रात्रिभोजन के सम्बन्ध में आचार्य वसुनन्दिजी कहते हैं-

एयाइरिसमाहारं भुंजंतो आदणासमिह लोए

पाउणइ परभवम्मि चउगइ-संसारदुक्खाइं।¹⁴

कीट-पतंगे युक्त आहार को ग्रहण करने वाला पुरुष स्वयं अपने आपका नाश तो करता ही है, चतुर्गति रूप संसार के दुःखों को भी प्राप्त करता है। आचार्य सुनीलसागर द्वारा प्रणीत वसुनन्दि श्रावकाचार की टीका में कहा गया है कि रात्रिभोजन करने वाला अनेक पापों का संग्रह करके नरक एवं तिर्यञ्चगति का पात्र होता है और भयानक दुःखों को प्राप्त करता है। कदाचित् मनुष्य भी होता है तो लंगड़ा, बहरा, अन्धा, गरीब होता है। देवों में जाता है तो नीच जाति का देव होता है। अतः इन

सबसे बचने के लिए रात्रिभोजन का त्याग अवश्य ही करना चाहिए।¹⁵

(4) रात्रिभोजन-निषेध (वैज्ञानिक दृष्टिकोण)

प्रकृति के विषय में पूर्णरूप से जानना और कथन करना किसी के भी द्वारा संभव नहीं है। प्रकृति के बिना एक मिनट भी जीवन टिक नहीं सकता, जैसे कि भोजन करना हमारे हाथों में है, परन्तु उसका पाचन, श्वासोच्छ्वास और रक्त-सञ्चार आदि कार्य प्रकृति पर आधारित हैं।

विज्ञान कितनी भी तरक्की क्यों न कर ले, परन्तु वह प्रकृति के नियम और वस्तु के स्वभाव को बदल नहीं सकता। वह रात को दिन और दिन को रात में परिवर्तित नहीं कर सकता। रात में कितना भी प्रकाश कर ले, परन्तु रात्रि का वातावरण तो रात्रि जैसा ही रहेगा। सूर्य में जो ऊर्जा प्रदान करने, ऑक्सीजन में वृद्धि करने, भोजन आदि पचाने की शक्ति एवं अन्य गुणधर्म पैदा करने वाले तत्त्व हैं वे सूर्य से ही मिलेंगे, चाँद-तारों से नहीं।

सूर्य का प्रकाश पाचनशक्ति का दाता है। रात्रि भोजन करने से पाचनशक्ति कमजोर हो जाती है। यह भी कहा गया है कि हमारा पाचन तन्त्र कमल के समान होता है। जिसकी तुलना बाह्य कमल से की गई है। प्राकृतिक सिद्धान्त है कि सूर्य उदय के साथ कमल खिलता है और अस्त होने के साथ मन्द हो जाता है। इसी तरह पाचन तन्त्र भी सूर्य की रोशनी में खुला रहता है और सूर्य अस्त होने पर मन्द हो जाता है।

सूर्य के प्रकाश में अल्ट्रावायलेट और इन्फ्रारेड नाम की अदृश्य किरणें होती हैं। इन किरणों के धरती पर पड़ते ही अनेक सूक्ष्म जीव यहाँ-वहाँ भाग जाते हैं अथवा उत्पन्न ही नहीं होते हैं। किन्तु सूर्य अस्त होते ही वे कीटाणु बाहर निकल जाते हैं। रात्रि में भोजन करने पर वे असंख्यात सूक्ष्म त्रस जीव जो भोजन में मिल गये थे, मरण को प्राप्त हो जाते हैं अथवा पेट में पहुँचकर अनेक रोगों को जन्म देते हैं।

जैसा कि हम जानते हैं सूर्य किरणों में अनेक गुण

हैं, विटामिन 'डी' भी इससे मिलता है। कार्बनिक गैस हानिकारक होती है। वृक्ष दिन में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया से कार्बनिक गैसों का अवशोषण करके ऑक्सीजन गैस का उत्सर्जन करते रहते हैं। इस प्रकार दिन में पर्यावरण शुद्ध एवं स्वास्थ्यकर रहता है। जबकि रात्रि में वृक्ष कार्बनिक गैसों को मनुष्य की भाँति छोड़ते हैं और पर्यावरण अशुद्ध हो जाता है। अतः दिन के शुद्ध वायुमण्डल में किया गया भोजन स्वास्थ्यकर और पोषणयुक्त होता है।¹⁶

अल्ट्रावायलेट और इन्फ्रारेड ये दोनों किरणें सूर्योदय के 48 मिनट बाद प्रभावशाली होती हैं और सूर्यास्त के 48 मिनट पूर्व ही पृथ्वी पर प्रायः प्रभावहीन हो जाती हैं। इसी कारण जैनाचार्यों ने कहा है कि सूर्योदय के 48 मिनट पश्चात् और सूर्यास्त के 48 मिनट पूर्व भोजन करना चाहिए।¹⁷

प्रायः हम देखते हैं कि कौआ-कबूतर आदि पक्षी मनुष्य की तरह दिन में परिश्रम करने वाले और प्राकृतिक नियमों का पालन करते हुए दिन के समय ही खाते-पीते हैं। रात्रि होते ही सब शान्त होकर अपने नियत स्थानों पर बैठ जाते हैं। इस प्रकार प्राकृतिक नियमों का पालन करने के कारण ही वे प्रायः स्वस्थ रहते हैं। प्रकृति के मध्य रहने वाले एकेन्द्रिय पेड़-पौधे भी जब रात्रिभोजन अर्थात् प्रकाश संश्लेषण क्रिया नहीं करते हैं तो मनुष्य रात्रिभोजन क्यों करता है ?

सन् 2017 का नोबल पुरस्कार तीन वैज्ञानिकों को दिया गया है, जिन्होंने यह प्रतिपादन किया है कि शाम एवं दूसरे दिन सुबह के भोजन में 14-15 घण्टों का अन्तराल होना चाहिए। यह तभी सम्भव है जब रात्रिभोजन का त्याग किया जाए।

(5) वैदिक, वैष्णव दर्शन में रात्रिभोजन-निषेध

जो मनुष्य मद्य पीते हैं, मांस का भक्षण करते हैं, रात्रि के समय भोजन करते हैं तथा कन्द भक्षण करते हैं उनका तीर्थयात्रा करना, जप-तप करना, एकादशी व्रत करना आदि सभी व्यर्थ हैं। चातुर्मास में तो रात्रिभोजन

करना ही नहीं चाहिये अन्यथा सैकड़ों चन्द्रायण व्रत करने पर भी शुद्धि नहीं होती।¹⁸ वैदिक ग्रन्थ में लिखा है-
पूर्वाह्ने भुज्यते देवैर्मध्याह्ने ऋषिभिस्तथा।

अपराह्ने च पितृभिः सायाह्ने दैत्यदानवैः।¹⁹

स्वर्गवासी देव प्रातःकाल, ऋषिगण मध्याह्न में और पितृजन दिन के तीसरे पहर (अपराह्न) में भोजन करते हैं। जबकि राक्षस और दैत्यजन रात के समय भोजन किया करते हैं।

मार्कण्डेय पुराण में भी स्पष्ट रूप से सूर्य के अस्त हो जाने पर पानी पीना रुधिर पीने के समान और अन्न खाना मांस खाने के समान बताया है।

अस्तंगते दिवानाथे आपो रुधिरमुच्यते।

अन्नं मांससमं प्रोक्तं मार्कण्डेयमहर्षिणा।²⁰

(6) रात्रिभोजन-त्याग का फल

रात्रिभोजन-त्याग के फल की प्रामाणिकता हेतु भारतीय संस्कृति के संवाहक ग्रन्थ महाभारत के शान्तिपर्व में उल्लेख है-

ये रात्रौ सर्वदाऽऽहारं वर्जयन्ति सुमेधसः

तेषां पक्षोपवासस्य फलं मासेन जायते।²¹

जो श्रेष्ठ बुद्धि वाले विवेकी मनुष्य रात्रि में भोजन करने का सदैव के लिए त्याग करते हैं, उनको एक माह में 15 दिन के उपवास का फल प्राप्त होता है।

चित्रकूटेऽत्र मातंगी यामानस्तमितव्रतात्

स्वभर्त्रा मारिता जाता नागश्रीः सागरांगजा।²²

रात्रिभोजन के त्याग से चाण्डाल कुल में उत्पन्न हुई युवति मरकर उत्तम कुल में श्रेष्ठी पुत्री के रूप में उत्पन्न हुई। रात्रिभोजन त्याग की महिमा अपार है।

योगवाशिष्ठ के पूर्वार्ध श्लोक में लिखा है जो रात्रि के समय भोजन नहीं करता, विशेष रूप से चौमासे में नहीं करता उसकी सब इच्छाएँ इस लोक-परलोक में पूर्ण हो जाती हैं।²³

स्कन्धपुराण के अध्याय सात में दिन में भोजन करने वाले पुरुष को विशेष पुण्य का भागी बताया गया

है। जो दिन में एक बार भोजन करता है उसे अग्निहोत्र के फल के समान फल प्राप्त हो जाता है और सूर्यास्त के बाद भोजन न करने वाला घर बैठे ही समस्त तीर्थयात्राओं का फल प्राप्त कर लेता है।²⁴

आचार्य शिवकोटिजी अपने ग्रन्थ रत्नमाला में कहते हैं-

छत्रचामर-वाजीभ-रथ-पदातिसंयुताः।

विराजन्ते नरा यत्र ते रात्र्याहारवर्जिनः।²⁵

छत्र-चँवर, घोड़ा-हाथी-रथ और भी पदवियों से युक्त नर (राजा) जहाँ कहीं भी दिखाई पड़ते हैं, ऐसा समझना चाहिये कि उन्होंने पूर्वभ्रम में रात्रिभोजन का त्याग किया था। उस त्याग से उपार्जित हुए पुण्य को वे भोग रहे हैं। इस प्रकार रात्रिभोजन-त्याग की महिमा अपार है। रात्रिभोजन-त्याग को व्रतों का मंगलाचरण कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

(7) रात्रिभोजन-त्याग का दैनिक जीवन में लाभ

रात्रिभोजन-त्याग के लाभ निम्न प्रकार रेखांकित हैं-होटल में नो वेटिंग-हम सबने अनुभव किया है कि शनिवार/रविवार की रात को होटल में खाने के लिए 10 मिनट से लेकर 1-2 घण्टे तक होटल के बाहर इन्तजार करना पड़ता है। जो लोग सूर्यास्त से पहले खाना खाते हैं उन्हें होटल के बाहर प्रतीक्षा करने की जरूरत नहीं पड़ती। इसके अलावा होटल में भोजन, सफाई, स्वच्छता की जो सेवा सूर्यास्त के बाद प्रदान होती है उससे कई गुना बेहतर सुविधा सूर्यास्त के पहले मिलती है।

परिवार के लिए समय-यदि सूर्यास्त के पहले परिवार में हर कोई भोजन कर लेता है तो घर के समस्त कार्य समय से पूरे हो जाते हैं तथा बच्चों एवं परिवार के साथ समय व्यतीत करने का समय भी मिल जाता है।

इस प्रकार रात्रिभोजन-त्याग आरोग्य के साथ-साथ वैज्ञानिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और पारिवारिक दृष्टिकोण से भी उपयोगी है। अतः यथासम्भव दिन में ही भोजन करना चाहिए। जीवन में पहला सुख नीरोगी काया ही है। इसके अभाव में सारे

सुख अधूरे हैं, अपर्याप्त हैं, अतः व्यक्ति को अपने आपको सेहतमन्द रखने को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी। उसके लिए पूर्णरूपेण रात्रिभोजन-त्याग करना आवश्यक है।

सन्दर्भ-सूची

1. भव्योपदेश उपासकाध्ययन-श्रावकाचार भाग-3, पृष्ठ 376, जैन संस्कृति संरक्षण केन्द्र, शोलापुर, 1980 ई.
2. वसुनन्दि श्रावकाचार - गाथा 314
3. पूज्यपाद श्रावकाचार गाथा 94 (उद्धृत-टीका सुनीलसागरजी)
4. स्वामी कार्तिकेयानुप्रेक्षागत श्रावकाचार - गाथा 382
5. रत्नकरण्डश्रावकाचार-टीका (पं. श्री पन्नालाल जी) पृष्ठ 245
6. (क) तत्त्वार्थसार - आ. अमृतचन्द्र (हिन्दी टीका - मुनि अमितसागर) पृष्ठ 181 (ख) तत्त्वार्थ सूत्र - 7/4
7. भुंजते निशि दुराशायके गृद्धिदोषवशवर्तिनो जनाः ...।।
-अमितगति श्रावकाचार - 43
8. वसुनन्दि श्रावकाचार - गाथा 315
9. महाभारत (ज्ञानपर्व) अध्याय - 70 श्लोक 203
10. (क) पुरुषार्थसिद्धयुपाय - श्लोक 71-73
(ख) अमितगति श्रावकाचार 5/70
11. प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (श्रावकाचार भाग-2) श्लोक 99-103
12. किसनसिंह कृत क्रियाकोष (उद्धृत श्रावकाचार संग्रह अनुशीलन पृष्ठ 271 तथा श्रावकाचार संग्रह भाग-5 से गृहीत)
13. महाभारत - शांतिपर्व श्लोक 15
14. वसुनन्दि श्रावकाचार - गाथा 317
15. वसुनन्दि श्रावकाचार - टीका (आ. सुनीलसागर) पृष्ठ 289
16. जैनधर्म का वैज्ञानिक चिन्तन- प्राचार्य निहालचन्द्रजी, पृष्ठ 64
17. वसुनन्दि श्रावकाचार (सन्मतिप्रबोधिनी टीका) आ. सुनीलसागर, पृष्ठ 290
18. ऋषीश्वर ग्रन्थ भारत -वैदिक दर्शन (उद्धृत श्रावकाचार संग्रह अनुशीलन, पृष्ठ 275)
19. यजुर्वेद आदिक वैदिक ग्रन्थ, श्लोक 19
20. मार्कण्डेय पुराण - अध्याय 33; श्लोक 53
21. महाभारत- शांतिपर्व श्लोक- 16 अध्याय -70 (उद्धृत श्रावकाचार संग्रह अनुशीलन पृष्ठ 289)
22. सागर धर्मावृत गाथा 15/66
23. योगवाशिष्ठ - श्लोक 108
24. स्कन्ध पुराण अध्याय 7
25. रत्नमाला, आचार्य शिवकोटि, श्लोक 49
-जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, मोहनलाल सुखराड्डिया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

अनमोल मोती (8)

श्री पी. शिखरमल सुराणा एवं श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

117. सुखपूर्वक जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है वह दुःख के उपस्थित होने पर विलीन होने की सम्भावना रहती है, किन्तु परीषह, कष्टों एवं तपस्या इत्यादि से उत्पन्न असाता में भी समाधि रखकर प्राप्त हुआ तत्त्वज्ञान, दुःख के प्रसङ्गों पर नष्ट होने वाला नहीं है।
118. सत्य असीम है शब्द सीमित है। सीमित में असीम को कैसे बाँधा जा सकता है ?
119. यदि अतीत में मन जाए तो मन को कहो पीछे नहीं जाना है, जब भविष्य की ओर दौड़े तो कहो जो अभी आया ही नहीं तो जाकर क्या करोगे? इसीलिए अभी यहीं वर्तमान में रहा। अतीत और भविष्य दोनों ही अभाव रूप हैं ..अधूरे हैं .. अस्तित्वहीन हैं, किन्तु वर्तमान ज्योतिर्मय होता है।
120. कर्म उदय में रागद्वेष न हो यही धर्म है।
121. ज्ञानी को अज्ञानी के आचरण पर क्रोध नहीं दया आती है।
122. जीव स्वयं को ठगे बिना दूसरों को ठग ही नहीं सकता।
123. संसार में स्वयं के पास जो है उसमें सन्तुष्ट न होकर जो नहीं है उसे प्राप्त करने की कल्पना करना, बाद में अभिलाषा करना और अन्त में आकांक्षा रूप में परिणत होना और उसी की प्राप्ति में जुट जाना ही संसार बढ़ाने का कारण है।
124. गरीबी (एकेन्द्रिय आदि से) निकलकर अमीरी (मनुष्य भव) में आ जाने के बाद फिर गरीबी में जाने की तैयारी करना कौनसी बुद्धिमत्ता है ?
125. प्राण निकल जाने पर अर्थी कहा जाता है। अ + रथी यानी रथी विहीन। जिस शरीर रूपी रथ को आत्मा रूपी रथी चला रहा था, वह रथ को छोड़कर चला गया।
126. बिना शिव (आत्मा) के शरीर शव है।
127. योग्य बनना अच्छा है, परन्तु योग्यता का अहम् होना बुरा है। योग्य व्यक्ति का अहम् उसकी अयोग्यता का ही परिचय देता है।
128. पुण्य कर्म की अपनी फिल्म पर इतराना यानी भविष्य की पाप फिल्म बनाने की तैयारी करना है।
129. उपदेश देना बड़ी बात नहीं, उपदेश धारण करना बड़ी बात है।
130. पर्युषण पर्व में बहुत सारा धन दान में देना अच्छी बात है, किन्तु पर्युषण पर्व में पाप सेवन करके धन न कमाना अधिक श्रेष्ठ है।
131. लाठी चला सकती है, लेकिन उसी को जिसके पैरों में कुछ शक्ति है (लाठी निमित्त है, उपादान स्वयं की शक्ति है)।
132. कार्य की पूर्णता तक शुभ का बना रहना द्रव्य मंगल है और भवभ्रमण को मिटाना भाव मंगल है।
133. श्रद्धा, विवेक और क्रिया इन तीनों के आधार पर जीने वाला श्रावक होता है।
134. ज्ञानी कर्म बाँधने में भयभीत और भोगने में शूरवीर होता है।
135. पुण्य को बेचकर पाप खरीदने में क्या बुद्धिमानी है ?
136. जब एकेन्द्रिय जीव भी प्रहार के बदले मीठे फल (आम) आदि देते हैं तो क्या पञ्चेन्द्रिय जीव उससे भी निम्न कोटि का है, जो प्रहार का प्रतिकार कर फिर प्रहार करता है ?
137. जब धर्म का पोषण होगा तब कषायों का शोषण होगा और जब कषायों का पोषण होगा तब धर्म का शोषण होगा, दोनों एक साथ नहीं चल सकते।

लोभ

डॉ. अनिल कुमार जैन

पहले हमें यह समझना होगा कि लोभ क्या है? आवश्यकता से अधिक पाने की इच्छा एवं बाह्य सुख की लालसा लोभ कहलाती है। अधिक पाने की इच्छा किसी भी वस्तु की हो सकती है—भोजन, धन, पद, प्रतिष्ठा या शक्ति। जैनधर्म के अनुसार लोभ एक कषाय है। जो आत्मा के भीतरी परिणामों को कलुषित करे, जो आत्मा के गुणों का घात करे उसे कषाय कहते हैं। कषाय चार प्रकार की होती हैं—क्रोध, मान, माया और लोभ। लोभ इन सब कषायों में सबसे हठीली कषाय है। इसका अस्तित्व दसवें गुणस्थान तक रहता है। अपने लोभ को पूरा करने के लिए व्यक्ति कभी क्रोध करता है, कभी अपने रुतबे या पद-प्रतिष्ठा का उपयोग करता है, तो कभी मायाचार भी करता है। इसी प्रकार वह लोभ के वशीभूत होकर हिंसा, झूठ, चोरी आदि पाप करता है। इसलिये लोभ को पाप का बाप कहा है।

जब लोभ की तीव्रता होती है तो वह क्रोध, मान और माया को भी अपने अनुसार चलाता है। इस बात को हम एक उदाहरण से समझ सकते हैं। एक ग्राहक किसी कपड़े की दुकान पर जाय, एक घण्टे तक तमाम कपड़े खुलवाता रहे, ऊपर से चाय भी पीये और फिर भी कपड़े न खरीदे। इस स्थिति में दुकानदार को मन ही मन गुस्सा तो बहुत आता है और वह मन ही मन गालियाँ भी देता है, लेकिन गुस्से को उजागर नहीं करता है। उसका लोभ इस गुस्से को दबा देता है, क्योंकि उसे यह उम्मीद रहती है कि भविष्य में कभी तो खरीदकर ले जाएगा। इसी प्रकार दुकान पर कोई बहुत छोटी उम्र का व्यक्ति ग्राहक बनकर आए, दुकानदार उम्र और हैसियत में भले ही कितना भी बड़ा क्यों न हो, लेकिन लोभ के वशीभूत होकर वह उसे भाई साहब आदि सम्मानसूचक शब्द

कहकर ही सम्बोधित करता है। उसे यह उम्मीद रहती है कि वह कभी न कभी कुछ न कुछ खरीदेगा जरूर। यहाँ दुकानदार अपनी उम्र, हैसियत, मान-सम्मान का ध्यान नहीं रखता है। अधिक धन पाने के लिए वह मायाचारी करने से भी नहीं चूकता है। हल्के माल को भी अच्छा बताता है।

यदि व्यक्ति का लोभ अधिक बढ़ता जाय तो उसका जीवन नीरस होने लगता है। उसके जीवन से प्रसन्नता समाप्त होने लगती है। ऐसे व्यक्ति की किसी से अधिक बात करने में भी रुचि नहीं रहती है। उसके जीवन में से शान्ति, करुणा, सहानुभूति की भावनाएँ समाप्त होने लगती हैं। वह सिर्फ अपने धन आदि को बढ़ाने के बारे में ही सोचता रहता है। जैसे-जैसे धन बढ़ता जाता है वैसे-वैसे व्यक्ति नैतिक-अनैतिक कार्यों में अन्तर करना भी भूल जाता है। वह अन्यायपूर्ण कार्य करने लगता है। खुद के स्वास्थ्य तक का ख्याल भी नहीं रख पाता है। मौत सामने खड़ी हो तब भी वह लोभ के वश में रहता है। लिओ टॉलस्टॉय की प्रसिद्ध कहानी है—कितनी जमीन। अपनी मृत्यु की चिन्ता करे बगैर व्यक्ति जीवन भर अधिक से अधिक जमीन पाने के लालच में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, जबकि उसके पार्थिव शरीर को दफनाने के लिए मात्र दो गज जमीन चाहिए थी।

हम जो खाते-पीते हैं या सोचते हैं उसका हमारे मन, मस्तिष्क और शरीर पर बहुत प्रभाव पड़ता है। लालच का निरन्तर विचार या सोच भी एक मानसिक रोग ही है, यह हमारे शरीर पर प्रभाव डालता है, हमारे नर्वस् सिस्टम (स्नायुतन्त्र) को प्रभावित करता है। एण्डोक्राइन ग्लैंड्स से होने वाले रस-स्राव का सन्तुलन बिगड़ जाता है। यह असन्तुलन शरीर और मस्तिष्क को

प्रभावित करता है तथा शरीर में अनेक बीमारियाँ पैदा होने लगती हैं। लालच की तीव्रता खाने के स्वाद को ही बिगाड़ देती है, व्यक्ति को भूख-प्यास का भी होश नहीं रहता है। जब हम लालच के वशीभूत होकर अपने एक निर्धारित लक्ष्य को पा भी लेते हैं तो और अधिक लोभ पैदा हो जाता है, अधिक पाने की इच्छा पैदा हो जाती है। इस प्रकार हम अपना लक्ष्य बढ़ाते रहते हैं और जब अपना मनचाहा लक्ष्य प्राप्त नहीं होता है तो व्यक्ति आत्महत्या तक कर लेता है। सन् 1990 के दशक में शेयर बाजार का लोगों को बहुत चस्का लगा था। शेयरों के दाम हर रोज बढ़ते हुए नज़र आते थे। अनेक नए लोग इस काम में जुड़ गये, लेकिन जब शेयरों के दाम कम होने लगे तो अनेक लोग ज़मीन पर आ गये। कइयों ने आत्महत्या तक कर ली थी।

अब प्रश्न यह है कि इस लोभ से कैसे बचा जाय। इससे बचने का एक ही उपाय है-सन्तोष। सन्तोष से ही लोभ को जीता जा सकता है। व्यक्ति को सन्तोषी होना चाहिए। जो कुछ हमें प्राप्त है उसमें प्रसन्न रहना चाहिए। एक प्रसिद्ध दोहा है-

गोधन गजधन वाजिधन, और रतनधन खान।

जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान।।

मैंने बचपन में एक कहानी पढ़ी थी। गर्मी के दिनों में एक कुम्हार पेड़ के नीचे मटके बेच रहा था। कोई ग्राहक नहीं था तो वह एक ईंट सिरहाने लगाकर सो गया। एक सेठजी वहाँ आए और उसे जगाकर एक मटका खरीदा। सेठजी को उस पर दया आई, इसलिये वे उससे कहने लगे कि तुम एक छप्पर क्यों नहीं डाल लेते हो, उससे तुम्हें आराम मिलेगा। कुम्हार बोला-“उससे क्या होगा?” यह सुनकर सेठजी सन्न रह गये और उसे समझाने लगे कि जब छप्पर होगा तो ग्राहक उसके नीचे खड़े होकर मटके खरीद सकते हैं, छाया देखकर अधिक लोग आकर्षित होंगे और तुम्हारी बिक्री बढ़ेगी।

कुम्हार ने फिर कहा-उससे क्या होगा? सेठ जी उसे फिर समझाने लगे कि जब तुम्हारी आमदनी बढ़ेगी

तो तुम एक पक्की दुकान बना सकते हो और अधिक आमदनी होने पर अपने यहाँ एक नौकर रख सकते हो। कुम्हार ने कहा-फिर क्या होगा? सेठजी कहने लगे-नौकर तुम्हारा सारा काम देखेगा और तुम आराम से सोना। कुम्हार ने कहा-वह तो मैं अब भी कर रहा हूँ। उसके लिए इतना सब कुछ करने की क्या आवश्यकता है। इतना कहकर वह फिर सो गया। हमने कई बड़े पैसे वालों को देखा है कि वे अच्छी नींद भी नहीं ले पाते हैं, उन्हें दवा लेकर सोना पड़ता है।

यह तो हमने व्यक्तिगत स्तर की बात की। यदि हम वैश्विक स्तर पर सोचें तो स्थिति और भी अधिक भयावह नज़र आती है। लोभ ने इन्सानों को अन्धाधुन्ध प्रकृति के दोहन में लगा रखा है। इतना अधिक अन्धा बना दिया है कि उन्हें अपनी आने वाली पीढ़ी की इतनी भी चिन्ता नहीं है कि वह ढंग से साँस भी ले पायेगी या नहीं।

वर्तमान अर्थ-व्यवस्था के युग ने बड़े-बड़े उद्योगपतियों को और अधिक लालची बना दिया है। प्राकृतिक संसाधनों का अन्धाधुन्ध दोहन किया जा रहा है। इसका असर यह हो रहा है कि हमारा पर्यावरण असन्तुलित हो गया है। हमने हवा, पानी, जमीन सबको प्रदूषित कर दिया है। इसका असर दिखने भी लगा है। कहीं असमय वर्षा हो रही है, कहीं अधिक वर्षा हो रही है तो कहीं सूखा पड़ रहा है। स्वच्छ हवा और पानी के अभाव में अनेक नए रोग पैदा हो रहे हैं। अब तो वैज्ञानिक यह विचार करने लगे हैं कि इस पृथ्वी ग्रह पर मानव जाति और कितने समय तक जीवित रह सकेगी। प्रसिद्ध भौतिकविद् स्टीफन हॉकिंग का कहना था कि यदि हम मानव जाति को हजारों वर्षों तक जीवित रखना चाहते हैं तो हमें दूसरे ग्रहों पर मानवों की कॉलोनियाँ बनाना शुरू कर देना चाहिए। गाँधीजी ने सही कहा था कि मानव की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पृथ्वी पर पर्याप्त संसाधन उपलब्ध हैं, लेकिन लालच के लिए नहीं है।

-डी 197, मोती मार्ग, बापू नगर, जयपुर-302015
(राजस्थान)

क्रोध विजय ही क्षमा धर्म

डॉ. विमलचन्द्र जैन

जिनवाणी का कथन है कि अक्रोध से क्रोध को जीतो। अक्रोध अर्थात् क्रोध का अभाव, यह ही क्षमा है। क्रोध से क्रोध और प्रज्वलित होता है। क्षमा आत्मा का स्वभाव है। क्षमा के स्वभाव को आवृत्त करने वाला विभाव (विकारी भाव) क्रोध है।

क्रोध अग्नि रूपी कषाय

'कसाया अग्निणो वुत्ता' (उत्तराध्ययनसूत्र 23/53) इस सूत्र में चारों कषायों (क्रोध, मान, माया, लोभ) को अग्नि रूप कहा गया है। आचार्य हरिभद्र ने कषाय से मुक्ति को ही वास्तविक मुक्ति बताते हुए कहा है कि- 'कषाय मुक्तिः किल मुक्तिरेव।' दशवैकालिकसूत्र के अनुसार 'कोहपीडं पणासेइ' अर्थात् क्रोध प्रीति का नाश करने वाला है। वज्जालग (39/901) में कहा है कि- 'कोहसमो वेरियो नत्थि' अर्थात् क्रोध के समान कोई वैरी नहीं है। अतः 'उवसमेण हणे कोहं' (दशवैकालिकसूत्र 8/39) अर्थात् उपशम भाव से क्रोध को जीतना चाहिये।

क्रोध स्व-पर के लिए घातक

ऋषिभाषित (36/13) में कहा गया है कि-
कोहेण अप्पं डहति परं च, अत्थं च धम्मं च तहेव कामं।
तिव्वं पि वेरं पि क्खंति कोधा, अधमं गतिं वावि उर्वंति कोहा॥
अर्थात् क्रोध से आत्मा स्व-पर दोनों को जलाता है। यह अर्थ, धर्म और काम पुरुषार्थ को जलाता है। तीव्र वैर भी करवाता है तथा नीच गति को प्राप्त कराता है।

कोहविजएणं खंतिं जणयइ।

उत्तराध्ययनसूत्र के उनतीसवें अध्ययन की 67वीं पृच्छा में क्रोध विजय का महत्त्व बताया गया है और कहा गया है कि क्रोध को उपशम या निग्रह कर लेने पर क्षमा धर्म की उत्पत्ति होती है। 'खंति' शब्द में क्षमा गुण

का सद्भाव अन्तर्निहित है। इसी पृच्छा में आगे कहा है कि 'कोहवेयणिज्जं कम्मं ण बंधइ' अर्थात् क्रोध करने से उत्पन्न होने वाले कर्मों अर्थात् भोगने योग्य कर्मों का भी बन्ध नहीं होता है तथा 'पुव्वबंधं च णिज्जरेइ' अर्थात् पूर्व में बन्धे हुए कर्मों को भी मनुष्य निर्जरित कर लेता है। अतः क्रोध को धैर्य एवं विवेकपूर्वक उपशान्त करके क्षमा के स्वधर्म को प्राप्त करना चाहिये।

क्षमा से परीषह विजय

'खंतीए णं परीसहे जिणेइ', क्षमा भाव से जीव परीषहों अर्थात् बाहर से प्राप्त होने वाले कष्टों को जीत लेता है। दस श्रमण धर्मों में क्षमा का प्रथम स्थान है। 'खंती' शब्द में अन्तर्निहित क्षमा सद्गुण से मनुष्य परीषह सहन करने में समर्थ हो जाता है।

क्षमा सच्ची आराधना

कल्पसूत्र (3/59) में निरूपण है कि 'खमियव्वं खमावियव्वं, जे उवसमइ अत्थि तस्स आराहणा' अर्थात् क्षमा माँगनी चाहिये और क्षमा देनी चाहिये। जो व्यक्ति क्षमा करके एवं क्षमायाचना करके कषायों का उपशमन कर लेता है, वही सच्चा आराधक है। धर्म की आराधना में क्षमा करना एवं स्वकृत मन, वचन काया के दोषों हेतु क्षमा याचना करना प्रशस्त कर्तव्य है।

क्रोध एवं क्षमा में द्विपक्षीयता

दश धर्म-क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, अकिञ्चनता और ब्रह्मचर्य हैं। क्षमा सहित सभी धर्म स्वनिष्ठ हैं। किन्तु क्रोध दुर्गुण और क्षमा गुण की पूर्णता में दो पक्षों की अपेक्षा होती है। व्यक्ति स्वयं ही क्षमायाचक एवं क्षमा प्रदाता भी है, किन्तु दूसरा पक्ष जो व्यक्ति विशेष या सम्पूर्ण षड्जीवनिकाय है, उसका भी इस क्षमापना धर्म में

महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। इस द्विपक्षीयता या क्षमा के आदान-प्रदान की पारस्परिकता से ही क्षमापना की पूर्ण भावक्रिया या प्रक्रिया सम्पन्न हो सकती है।

क्षमा तेजस्विनां तेजः

वस्तुतः क्षमा मूल स्वभाव है जो व्यक्ति में तेजस्विता उत्पन्न करता है। क्षमा आत्मा का दिव्य प्रकाश है और मनुष्य के आभामण्डल का तेज है। क्रोध इसका विभाव है। क्रोध का तमस् रूपी विकारी भाव क्षमा रूपी आत्मप्रकाश को ढँक देता है और वैर-भाव क्रोधावेग की तरतमतानुसार कर्मबन्ध का कारणभूत बन जाता है। यदि क्रोध के वैकारिक भाव को उपशमित कर दिया जाये तो क्षमा का स्वभाव, पुनः देदीप्यमान हो जाता है, किन्तु क्षमा पर छाये हुए क्रोध के आवरण को अनावृत्त करने के लिये दृढ़ पुरुषार्थ और दृढ़ निश्चय अपेक्षित होता है। क्षमा स्वभाव की प्राप्ति का ऐसा पुरुषार्थ वीर व्यक्ति ही कर सकता है। इसीलिये 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' भी कहा गया है।

क्षमा धर्म से प्राप्त लाभ

उत्तराध्ययनसूत्र (29/17) में प्रश्न किया गया है कि क्षमापना से जीव को किन गुणों की प्राप्ति होती है? इस प्रश्न के समाधान स्वरूप कहा गया है कि-
खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ, पल्हायण-
भावमुवगए य सव्वपाण-भूय-जीव-सत्तेसु
मित्तीभावमुप्पाएइ, मित्तीभावमुवगए यावि जीवे
भावविसोहिं काऊण णिब्भए भवइ। अर्थात् क्षमापना से जीव को निम्न प्राप्तियाँ होती हैं-

1. चित्त में आह्लाद-दूसरों को उनकी भूलों के लिए क्षमा करने से आत्मा का भार हल्का हो जाता है, क्योंकि क्षमा करना उदात्त भाव एवं दिव्यता का परिचायक है। साथ ही क्षमा माँगने वाला भी अपराध-बोध से मुक्त हो जाता है और उसके चित्त में प्रह्लाद भाव या प्रफुल्लता प्रकट होती है।
2. मैत्रीभाव-क्षमापना में चित्त की निर्मलता ही आधारभूत कारण है। क्षमायाचना से वैरभाव

समाप्त होकर मैत्रीभाव का उदय होता है।

3. भावविशुद्धि-क्षमापना से विपरीत भाव-क्रोध, वैर, कठोरता, ईर्ष्या आदि समाप्त होते हैं और शुभ भाव बड़प्पन, आत्मसन्तोष, उदात्त भाव, करुणा, स्नेह, दया आदि उद्भूत होते हैं। क्रोध का वैकारिक विभाव हटते ही क्षमा का शुद्ध भाव अस्तित्व में आ जाता है।
4. निर्भयता-क्रोध, वैर एवं अक्षमा के भावों से व्यक्ति भयग्रस्त रहता है, किन्तु क्रोध निग्रह के उपरान्त क्षमा और सहिष्णुता की प्राप्ति कर वह निर्भय हो जाता है। स्वयं तो निर्भय होता ही है साथ ही अपने सम्पर्क के समस्त सत्त्व, भूत, जीव एवं प्राणियों को भी अभय प्रदान कर देता है। भय दुश्मन से होता है, किन्तु 'मिच्ची मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई' के सद्भाव से स्वयमेव निर्भयता प्राप्त हो जाती है।
5. आत्म-परिणामों की द्विपक्षीयता-क्रोध उपशमन एवं क्षमाभाव के ग्रहण से द्विपक्षीय आत्मपरिणाम होते हैं। सामने वाला व्यक्ति निर्वैरता प्राप्त होने से मैत्री भाव का अनुभव करता है। प्रत्युत्तर में स्वयं भी क्षमा प्रदान करके तथा क्षमा से अभय को प्राप्त करके अपनी आत्मा में हल्केपन का अनुभव करता है और अपराध बोध से मुक्त होकर उसके पारिणामिक भाव प्रशस्त और कल्याणकारी हो जाते हैं। इसी प्रकार क्षमायाचक एवं वीरतापूर्वक क्षमा करने वाले की आत्मा में भी शुभ परिणाम घटित होते हैं। वह स्वयं अपनी आत्मा में निर्मलता, निर्भयता, मैत्री, करुणा, सहृदयता आदि के सद्भावों को अनुभव करता है। अतः क्षमा करने वाले एवं प्राप्त करने वाले दोनों ही पक्षों में अनुकूल कल्याणकारी आत्मपरिणाम घटित होते हैं।

-एम.ए., एल.एल.बी., पी-एच.डी., सेवानिवृत्त
प्राचार्य, डी 401, आशीर्वाद आनन्दम्
बालाजी मार्केट, श्रीनाथपुरम् कोटा-324005 (राज)

आचार्य सिद्धसेन दिवाकर एवं सन्मतितर्क

श्रीमती उज्ज्वल डागा

भारत वर्ष में समय-समय पर अनेक साधक, कवि, दार्शनिक और विचारक हुए हैं, जिन्होंने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखकर अपनी लेखनी के जौहर दिखाये हैं। जैन साहित्य इतना विशाल और समृद्ध है कि भारतीय साहित्य में उसका एक विशिष्ट स्थान है। जैनधर्म में बड़े-बड़े प्रकाण्ड आचार्य हुए हैं जो प्रबल तार्किक, वैय्याकरण, कवि और दार्शनिक थे। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर भी उन्हीं मूर्धन्य दार्शनिकों में से एक हैं, जिन्होंने जैन-साहित्य को अनेक दृष्टियों से समृद्ध बनाया। जैनदर्शन के क्षेत्र में अनेकान्त की तार्किक स्थापना करने वाले वे प्रथम पुरुष हैं। तर्कविद्या और तर्क-प्रधान संस्कृत वाङ्मय के वे आद्य प्रणेता हैं। पण्डित श्री सुखलालजी ने उन्हें प्रतिभामूर्ति कहा है, यह अत्युक्ति नहीं है। दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायों में उन्हें माना है। दिगम्बर आचार्य जिनसेन प्रथम और द्वितीय ने बहुत ही आदर के साथ उनका स्मरण किया है। उनकी सूक्तियों को भगवान ऋषभदेव के समकक्ष बतलाया गया है और प्रतिवादीरूप हाथियों के समूह के लिए उन्हें विकल्परूप नखयुक्त सिंह बतलाया है। कर्मार देश के शासक देवपाल ने उन्हें दिवाकर की उपाधि से अलंकृत किया। चतुर्थ शताब्दी से जैन ग्रन्थों में उनके अस्तित्व और कृतित्व के सन्दर्भ उपलब्ध होते हैं। फिर भी उनके जीवनवृत्त और कृतित्व के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी का अभाव है। इस कारण उनके जीवनवृत्त, सत्ताकाल, परम्परा तथा कृतियों को लेकर विवाद आज भी प्रचलित हैं। आचार्य सिद्धसेन का समय विक्रम की चौथी-पाँचवीं शताब्दी है। डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डे (पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी -1997) ने अपनी पुस्तक 'सिद्धसेन दिवाकर- व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में

लिखा है-सिद्धसेन के काल की रेखा विक्रम की तृतीय शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर पञ्चम शताब्दी के पूर्वार्ध के बीच ही कहीं निश्चित होगी। इनकी जन्मस्थली विशाला नगरी है। इनके पिता का नाम देवर्षि है। ये कात्यायन गोत्रीय ब्राह्मण थे। सिद्धसेन आर्य स्कंदिल के प्रशिष्य और वृद्धवादी के शिष्य थे। पाण्डेजी के मत से वे उत्तर भारत की निर्ग्रन्थ धारा में हुए हैं जो आगे चलकर श्वेताम्बर और यापनीय के रूप में विभाजित हुईं। वे दोनों के पूर्वज हैं।

सिद्धसेन दिवाकर के उपलब्ध ग्रन्थ हैं-1 . सन्मतिसूत्र या सन्मतितर्क, 2. द्वात्रिंशद्वात्रिंशिका, 3. न्यायावतार एवं 4. कल्याणमन्दिर स्तोत्र। यहाँ हम सन्मतितर्क पर विचार करेंगे।

सन्मतिसूत्र या सन्मतितर्क जैन वाङ्मय का एक विशिष्ट और गौरवपूर्ण ग्रन्थ है जो श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों में समान रूप से माना जाता है। इस ग्रन्थ की भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है। रचना शैली पद्यमय है और सभी पद्य आर्या छन्द में हैं। कुल 166 गाथाएँ हैं। समय की गतिविधि को निहारकर उन्होंने तर्कसङ्गत अनेकान्तवाद के समर्थन में सन्मतितर्क जैसे मौलिक ग्रन्थ का सृजन किया। सन्मतितर्क जैन दृष्टि और जैन मन्तव्यों को तर्क शैली से स्पष्ट करने और स्थापित करने वाला जैन साहित्य का प्रथम ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में नयवाद और सप्तभंगी का अच्छा विवेचन है। प्रथम काण्ड में द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक दृष्टि का सामान्य विचार है। दूसरे काण्ड में ज्ञान और दर्शन पर सुन्दर चर्चा है। तृतीय काण्ड में गुण और पर्याय, अनेकान्त दृष्टि एवं तर्क के विषय में अच्छा प्रकाश डाला गया है। तत्त्वचिन्तन के सम्यक् पथ का विश्लेषण

करते हुए उन्होंने आठ बातों पर बल दिया जो इस प्रकार है-1. द्रव्य, 2. क्षेत्र, 3. काल, 4. भाव, 5. पर्याय, 6. देश, 7. संयोग और 8. भेद। प्रथम चार तो स्वयं भगवान महावीर ने बताई है, उनमें ही पीछे की चार बातें भी सम्मिलित है। किन्तु सिद्धसेन ने दृष्टि और पदार्थ की सम्यक् व्याख्या करने के लिए आठ बातों पर प्रकाश डाला है। आचार्य सिद्धसेन ने हेतुवाद और अहेतुवाद द्वारा परोक्ष रूप में धर्म और दर्शन की मर्यादा का संकेत किया। हेतुवाद तर्क पर प्रतिष्ठित होने से दर्शन का विषय है और अहेतुवाद श्रद्धा पर आधृत होने से धर्म का विषय है। ज्ञान और दर्शन की मीमांसा करते हुए अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय देते हुए आपने उपयोग-अभेदवाद की स्थापना की। उन्होंने केवलज्ञान और केवलदर्शन की क्रमवादिता और युगपदवादिता में दोष दिखाते हुए

अभेदवाद की स्थापना की। सिद्धसेन ने सामान्य और विशेषवाद, अस्तित्व और नास्तित्ववाद, आत्मस्वरूपवाद, द्रव्यगुण-भेदाभेदवाद, काल आदि पाँच कारणवाद एवं कार्यकारण-भेदाभेदवाद प्रवण छह वादों का विस्तृत तथा स्पष्ट निरूपण करते हुए उनके गुण-दोष बताकर अनेकान्त की स्थापना की। अनादि में तात्त्विक प्ररूपण कैसे किया जाय, इसका निर्देशन करते हुए एवं अनेकान्तरूप जिनवचन की कल्याण कामना करते हुए सिद्धसेन ने ग्रन्थ का समापन किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पाँचवीं शताब्दी के ज्योतिर्धर आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने साहित्यिक क्षेत्र में जो मौलिकता दी है, वह महान् है। वे जैन न्याय के प्रथम पुरस्कर्ता हैं।

भावी आचार्यश्री महेन्द्र

गुणगान

महासती श्री रुचिताजी म.सा.

(तर्ज :: ये कितना सुन्दर शासन है....)

गुरु महेन्द्र को पाकर, खिल उठा है ये जिनशासन,
रत्नसंघ का गौरव है, हीरा महेन्द्र का शासन।।टेर।।
आगम और शास्त्रों का, रहस्य है ये बतलाते,
तलस्पर्शी ज्ञान से, गूढ़ अर्थ है समझाते,
हित-मित परिमित है वचन, हृदयस्पर्शी है जीवन,
गहनतम इनका है चिन्तन, चरणों में है अर्पण,
ऐसे गुरुवर को पाकर, धन्य हो गया है जिनशासन,
रत्नसंघ का गौरव है....।।1।।

गुरु हीरा की सेवा में, अहोरात्रि लगाया है,
चरणामृत का पान कर, जीवन धन्य बनाया है,
आगम दिल में बसाया है, सूत्रों का सार पाया है,
मृदुता इनमें झलकती है, गुरु हीरा की कृति है,
ऐसे गुरुवर को वन्दन, हीरा का पाया है आसन,
रत्नसंघ का गौरव है....।।2।।

प्रभु महावीर के जैसी, गुरु हीरा की साधना,
गौतम स्वामी सम करते, गुरु महेन्द्र उपासना,
ये कितना सुन्दर सङ्ग है, आचार्यद्वय को वन्दन है,
जगत में कोई नहीं इनसा, हीरा महेन्द्र के जैसा,
आज्ञा 'रुचि' में चल करके, जीवन करेंगे हम रोशन,
रत्नसंघ का गौरव है....।।3।।

-संलकनकर्त्ता : धनसुरेश जैन, सवाईमाधोपुर

जिनवाणी पर अभिमत

श्री अशोक चौधरी

जिनवाणी का सितम्बर 2022 का अंक पढ़ा। अंक बहुत ही ज्ञानवर्धक है। इसमें प्रकाशित सभी स्तम्भ हमारी ज्ञान-ज्योति को जागृत करते हैं। विश्व अहिंसा दिवस पर करें अहिंसा का विस्तार, डॉ. दिलीप धींग की रचनाएँ, शराब एवं नशे से बचें इत्यादि लेख बहुत प्रिय लगे। आपको एवं पूरी सम्पादकीय टीम को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

-गाँधी स्टडी सर्किल, 33, सिन्धी-मुस्लिम बस्ती, मसूरिया, जोधपुर-342003 (राजस्थान)

अपने लक्ष्यों से भटक गए हैं कुछ स्पा

श्री जयदीप ढङ्गा

स्पा स्वास्थ्य के लिए अच्छे माने जाते हैं। स्पा शब्द का अर्थ जल चिकित्सा या स्नान चिकित्सा से है। यहाँ ब्यूटी पार्लर से जुड़ी सुविधाएँ भी मुहैया कराई जाती हैं। लोग यहाँ आकर आराम महसूस करते हैं। थकान दूर होती है। पर कुछ स्पा अपने मूल मकसद से भटक गए हैं। वे एक शुभ मकसद से शुरू किए गए थे, पर अवैध और अनैतिक धन्धों के कारण पिछले कुछ सालों से घोर विवाद में आ गए हैं। महिला कर्मी और ग्राहक के बीच अनैतिक सम्बन्धों और मानव तस्करी को लेकर ये अखबार की सुर्खियों में बने हुए हैं। उन पर आए दिन पुलिस के छापे पड़ते हैं और स्पा मालिकों के काले कारनामे सामने आते हैं। गिरफ्तारियाँ होती हैं।

स्पा पार्लर की आड में चल रहे अनैतिक कार्यों की कहानी बड़ी शर्मनाक है। इसमें शामिल कुछ युवतियाँ अपने महँगे शौक पूरे करने के मकसद से आती हैं। कुछ घर-खर्च चलाने के लिए काम करती हैं। सूत्रों के अनुसार यहाँ आने वाली वे युवतियाँ भी हैं, जो प्यार में धोखा खाने के बाद अनैतिक काम करने लगती हैं। दुःखद स्थिति तो यह है कि इन युवतियों का शोषण आमतौर पर उनके तथाकथित प्रेमी, पति, पार्लर कर्मचारी, सञ्चालक लोग ही करते हैं।

विडम्बना यह है कि इस अनैतिक काम को बढ़ावा देने के लिए मानव तस्करी की जाती है। जरूरत के अनुसार शहर के बाहर से लड़कियों की व्यवस्था की जाती है। ग्राहक के सामने उनकी बोलियाँ होटलों, बार, फार्म हाउसों में लगाई जाती हैं। पिछले साल अमरीका के एक स्पा में अनैतिक सम्बन्धों में लिप्त लड़कियों की खबरें वहाँ के 'यूएसए टुडे' अखबार में भी थी। पुलिस की धरपकड़ से ही वहाँ मानव तस्करी होने की बात सामने आई। दुःखद स्थिति तो यह थी कि इसमें स्कूल-

कॉलेज जाने वाली लड़कियाँ भी शामिल थीं। महँगे शौक और नशे की लत में इन्हें भले-बुरे का ध्यान नहीं रहता और वे गलत रास्ते पर भटक जाती हैं। सवाल यह भी है कि स्पा स्कूल-कॉलेज और शराब की दुकानों के नजदीक क्यों हैं? इस पर प्रबन्धकों की नज़र क्यों नहीं है, जबकि इससे अपराध बढ़ने की आशंका रहती है।

अनैतिक सम्बन्धों को रोकने के लिए 1986 में पीटा एक्ट (प्रिवेंशन ऑफ इम्पोरल ट्रेफिकिंग एक्ट) लागू किया गया। बाद में 1986 में इसमें संशोधन भी किया गया। इस कानून के तहत अनैतिक सम्बन्ध बनाने वाली युवतियों को छह माह की सजा और जुर्माने का प्रावधान है। आरोपी ग्राहकों के लिए कानून में अलग-अलग सजा है। सार्वजनिक स्थान पर गिरफ्तार होने पर तीन माह की सजा। युवति अगर 18 साल की उम्र से कम की हो तो आरोपी को 6 से 10 साल तक की सजा हो सकती है। वहीं आपत्तिजनक स्थिति में पकड़े जाने पर आरोपियों के खिलाफ अनैतिक व्यापार (निवारण) अधिनियम 1986 की धारा 3, 4 5, 6 एवं 7 के तहत कार्यवाही की जा सकती है। धारा 3, 4 के तहत दो-दो साल तथा धारा 8 के तहत 3-3 साल एवं 500-500 रुपये अर्थदण्ड की सजा हो सकती है। धारा 5(क) (घ) के तहत सात वर्ष सश्रम कैद, धारा 11(6)/12 बालकों को उक्त अनैतिक कार्यों से बचाने का अधिनियम है। इसके तहत एक वर्ष का सश्रम कारावास तथा धारा 372, 369, 366 (क) भारतीय दण्ड विधान के तहत सात-सात वर्ष का सश्रम कारावास एवं 4,000 रुपये तक का जुर्माना अथवा कारावास या दोनों भी भुगतने होते हैं।

इस अनैतिक काम में जुड़े स्पा मालिक अपने यहाँ काम करने वाली लड़कियों को अपनी बच्चियों जैसा मानें। गलत लोगों से बचाएँ।

Social Peace with special reference to the Jaina concept of Ananta Catuṣṭaya of a soul

Kashmira Ketan Shah

Introduction

According to the Global Peace Index 2021, which ranks 163 independent states and territories according to their level of peacefulness, India ranks 135th when weighed by the global state of peace. The average level of global peacefulness has deteriorated by 0.07 percent. It is the ninth deterioration in peacefulness across the world in the last thirteen years. Violence remains one of the most pressing issues for people globally. Growing unease with lockdowns and rising economic uncertainty has resulted in civil unrest increasing in 2020, with over 5,000 pandemic-related violent events recorded between January 2020 and April 2021.¹ It unveils a world where conflicts and crises that arose in the past decade have begun to subside, only to be supplanted with another influx of pressure and vulnerability due to the COVID-19 pandemic and rising strains between several significant forces. Building a peaceful atmosphere in these times of conflict and uncertainty is the need of the hour. This contribution would witness a transition from material to mental happiness and enable one to grow as an individual and ultimately build a blissful, stable and thriving society.

The Concept of Social Peace

The term 'peace' has several interpretations. Literally, the word 'peace' is derived from the original Latin word 'pax', which means a pact, a control or an agreement to end war or any dispute and conflict between two people, two nations or two antagonistic groups

of people.² It is defined as a state of tranquility or quiet; freedom from civil disturbance; a state of security or order within a community provided for by law or custom; specifically, absence or cessation of war; a state of reconciliation after strife or enmity etc.³ 'Peace is the tranquility of order' according to Saint Augustine.⁴ According to the Catholic Church, peace is the result of justice, economic equality and charity.⁵ Famously, Hedley Bull, one of the most influential figures in the academic study of international relations, saw peace as the absence of war among states in the context of an international society.⁶ The 14th Dalai Lama said, "Peace, in the sense of the absence of war, is of little value...peace can only last where human rights are respected, where people are fed and where individuals and nations are free."⁷ According to Johan Galtung, Norwegian peace scholar, "Peace is the absence of violence and should be used as the social goal."⁸ He further states, "Like a coin, peace has two sides: negative peace and positive peace. Negative peace is the absence of personal violence; positive peace is an absence of structural violence or social justice."⁹ According to Jawaharlal Nehru, "Peace is not a relationship of nations. It is a condition of mind brought about by a serenity of the soul. Peace is not merely the absence of war. It is also a state of mind. Lasting peace can come only to peaceful people."¹⁰

Religion has also remained an incredible driving force in the life of an individual and is central to the existence of almost all societies.

All major religions of the world have thrown light on peace in their sacred texts. Peace in Hinduism is evident in their core teachings. Yajurveda 36:17 conveys a Vedic prayer "...May I experience that peace with my own heart". Buddhism lays importance on peace and personal reform. According to Buddha, "One must renounce all desires and all thoughts of lust, bitterness and cruelty. One must harm no living creature. One must abstain from all killing. One must work in an occupation that benefits others and harms none."¹¹ Peace is also described extensively in Bible. According to Luke 6:3, "Do unto others as you would have them do unto you". The principles of Islam are also based on peace. According to Al-Quran 7:56 and 7:85, "Disturb not the peace of the earth after the fair ordering thereof by God." Al-Quran 41:34 and Mathew, 5:44-46 says, "Make a friend out of foe as the power of peace is stronger than the power of violence."

Jainism lays down a comprehensive focus on peace. The system of Jaina ethics is optimized in the principle of three Jewels (*Ratnatraya*) that include right faith, right knowledge and right conduct. These are the major contributory factors to the achievement of a state of peace.¹² *ĀcārāṅgaSūtra*, one of the oldest Jain canons, maintains that one who is aware of peace will not fall into the grip of passions.¹³ In *SūtrakṛtāṅgaSūtra*, the term peace is equated with emancipation.¹⁴ Hence, for Jains, peace is an essential nature of the self. The maxim "*Ahiṃsā paramo dharmah*" (non-violence towards any living being, including the self, is the highest virtue/religion) sums it up. In *Praśnanyākaraṇa Sūtra*, non-violence is equated with sixty virtuous qualities, just as peace, harmony, welfare, trust, fearlessness, etc.¹⁵ Thus, from an individual perspective, peace is

a state of tranquility where one abides by the nature of the self, unperturbed by external circumstances. It is that condition of the consciousness where one attains the state of self-contentment free from all desires. From a social perspective, peace is the state of mutual co-existence, free from conflicts and fear of violence between people.

Hence, peace is considered one of the most highly valued virtues, beneficial not only for an individual but also for social upliftment, progress and evolution. Social peace depends upon various factors. It mainly focuses on the mental state of individuals and their attitude towards self and society. It is this attitude that shapes societies. As the proverb goes, "Charity begins at home"; the primary step to achieving social peace is to have peaceful families, as the journey of a thousand miles begins with a small step. A family is peaceful when each member is at peace with oneself. When one gets carried away by strong waves of thoughts, feelings, emotions, actions, etc., impressing peace upon them becomes unrealistic. It is only when the individuals are free from fear, violence, anger, jealousy, etc., that the state of peace can be achieved gradually.

Freedom from external impressions can enable one to find solace and rejoice in the serene state of peace. Upon attaining individual peace, the likelihood of achieving collective peace increases. As like mindedness radiates outside across societies, nations and the world, it results in individual peace, family peace, social peace and national peace. It ultimately leads to world peace as the endproduct of the chain reaction. It is depicted by the famous ancient Jain scriptural aphorism "*Parasparopagraho Jīvānām*"¹⁶, translated as souls render service to one another.¹⁷ In other words, all life is bound together by mutual support and interdependence.¹⁸ It enables one

to eliminate the selfish, unnatural instincts and gradually promote the global message of “live and let live”, resulting in the minds of individuals and a society free of violence. It provides a platform to dwell in the selfless instincts of mutual co-operation and co-existence. This state of living would ultimately lead to establishing a peaceful society.

Subsequently, the attempt to achieve enduring peace, harmony and happiness for any individual needs to originate from an imperishable source. It must be an infinite wellspring of prosperity, happiness, strength, delight and legitimacy. Amid the mundane pursuits and material aspirations, a spiritual re-awakening would enable one to progress in the journey of experiencing the fountain of eternal serenity and bliss, which is within and universal. This wellspring lies in spirituality, which begins with humanity and ultimately leads to divinity, where one manifests the infinite power of the self.

Ananta Catuṣṭaya of a soul

Psychologists declare that there is a gigantic cluster of power inside every individual. This real innate identity of the self, i.e., the soul, has existed since time immemorial. The soul has been the subject of various discussions and arguments throughout the ages. It has been the paramount intellectual interest of the ages and the unique theme of all religions and philosophies. While discussing the nature of the soul, the Jain philosophers have accepted that every soul in the world is a mass of infinite, eternal, immutable attributes. The entire universe is a manifestation of the everlasting soul, a wellspring of energy. Each individual is a particular manifestation of this unceasing energy. The profound knowledge of the soul accompanied by a comprehensive understanding of its true potential satisfies and provides the solution to all necessities of humankind. It supports our advancement

toward being divine as it is devoid of any biases and helps us understand the idea of consciousness. It aims to bring peace, prosperity and harmony to many lives through self-realization.

But the real change and the true inner potential will fructify when one lives in unity with nature and its ethics while making an effort to experience the underlying infinite powers of the soul. These powers can be experienced upon unveiling the obstruction that prevents one from experiencing the innate abilities of the soul. The veil refers to the karmas responsible for obstructing the true nature of the soul while in association with it. These karmas are called *ghātī* karmas. The destruction of the four *ghātī* karmas results in the manifestation of *Ananta Catuṣṭaya* or the infinite four-fold power of the soul. Explicitly, upon the destruction of *Jñānāvaraṇīya karma* (knowledge obscuring karma), *Darśanāvaraṇa karma* (perception obscuring karma), *Mohanīya karma* (delusion producing karma) and *Antarāya karma* (power obscuring karma), one experiences *Anantajñāna* (infinite knowledge), *Anantadarśana* (infinite perception), *Anantasukha* (infinite bliss) and *Anantavīrya* (infinite power) respectively - the four infinite attributes constituting the *Ananta Catuṣṭaya* of a soul. The *Ananta Catuṣṭaya* is the *svabhāva* (infinite nature) of every soul in the universe. The unveiling of karmas results in the experience of the pure soul. Annihilation of *mohanīya karma* results in the destruction of *ākulta* and the eternal experience of *anākulta* and bliss. Once *mohanīya karma* is annihilated, *Jñānāvaraṇīya karma*, *Darśanāvaraṇa karma* and *Antarāya karma* are obliterated within *antarmuhūrta* (forty-eight minutes), resulting in the eternal experience of *Kevalajñāna*, *Kevaladarśana* and *AnantaVīrya* respectively.

Despite the veil of karmas, when one

strives to experience innate qualities, one is bound to experience bliss for ever. According to *JainaPāribhāṣikaŚabda-kośa* and *JainaLakṣaṇāvali*, it has been revealed that “*Antarāyavināśādvīryalabdhiśaktiḥ*” - the *vīrya* manifested upon the destruction of the *Antarāya* (*karma*) is called *śakti*.^{19,20} Out of the infinite *śaktis*, the manifestation of four significant *śaktis* of the soul results in the eternal experience of the *AnantaCatuṣṭaya* or the infinity quartette of the soul. These four *śaktis* are *Drṣṭīśakti*, *Jñānaśakti*, *Sukhaśakti* and *Vīryaśakti*. Upon obtaining the knowledge of these four *śaktis*, one can realize the true nature of the soul and strive towards the manifestation of the *AnantaCatuṣṭaya* or the four infinite attributes of the soul.

Drṣṭī means '*darśana*(vision)' or '*darśana-upayoga*'. When a substance is reflected in our consciousness, the *Drṣṭī śakti* perceives its broader perspective without any micro-analysis. In technical terms, *Drṣṭīśakti* enables the soul to carry out the operations of *sāmānyaavalokana* - ascertaining the generalities of a particular substance without any discrimination based on its particularities.²¹ *There is no discrimination between living and non-living, self and non-self or even the shape, size, colour or form of a substance. When a person enters a house, for example, the person glances at everything in general before focusing on the things in particular. Similarly, Drṣṭīśakti identifies the substance as a whole. It neither perceives the state, behaviour, specifications, nature of the object, etc., nor does it execute any decision-making processes. In other words, it perceives the existence of the entity without any further distinction. It does not require assistance or external agents in the form of the five senses, the mind, the body, etc., to perform its function as it is self-sufficient and can work independently. It recognizes the self along with the non-self simultaneously. As*

every soul is eternal, *Drṣṭī śakti*, one of the prominent *śaktis* of the soul, is also ever lasting. Thus, the independent operation of seeing the self and the non-self and the essence of experiencing a substance as a whole goes on and on for an infinite time. When one works in the direction of the manifestation of *Drṣṭīśakti*, gradual purification of the soul occurs due to the shredding of the *darśanāvaraṇīya karma* (*karma* that obscures the power of perception). It enables one to progress towards experiencing the self.

Jñāna means 'knowledge'. That which knows the specific nature of a particular substance is called *Jñāna śakti*. In technical terms, the *śakti* that is responsible for *viśeṣaavalokana* - ascertaining a particular substance with discrimination based on its specialities or its specific nature is called *Jñānaśakti*.²² Unlike *Drṣṭī śakti*, it is the characteristic of *jñāna* that differentiates substances based on their qualities, external appearance, etc. Thus, *Jñāna śakti* performs the decision-making process based on particular attributes and knows the various substances based on their specific nature. Like the ocean waves rising and falling, the waves of *jñāna* and its modifications rise and fall in the ocean of the soul. This continuous process is due to *Jñāna śakti*. The soul is known as the knower and its infinite treasure is known in addition to knowing the non-self only due to *Jñānaśakti*. Despite knowing everything, *Jñāna śakti* does not mix or alter itself regardless of the circumstances. A mirror retains its original identity as it neither enters the object nor does any object penetrate it. Similarly, *Jñāna śakti* neither modifies the non-self nor changes its nature upon knowing the non-self. It remains all-encompassing, everlasting and impenetrable. The attributes of *jñāna* and *darśana* are called *sva-para prakāśaka* as they know and see the self and

the non-self due to *Dr̥ṣīśakti* and *Jñānaśakti*, respectively.²³

Sukha means 'bliss'. The *śakti* having the characteristic of *Anākulata* (relating to peace, calmness or serenity) or the absence of *ākulata* (anxiety, impatience or restlessness) for infinite time is called *Sukhaśakti*.²⁴ A deer is enticed by the aroma of *kastūrī* emanating from its naval region. Despite rushing and searching, it fails to recognize the natural source of the fragrance, i.e., the self. Similarly, *sukha* is that innate nature of the soul that cannot be found outside the soul even on repeated searching. As a result, in the pursuit of fleeting and delusory enjoyment, one misses out on this internal wellspring of infinite bliss resulting from *Sukhaśakti*. Bliss can be obtained only from that which has the nature of imparting bliss. That source of absolute *sukha* is none other than the self due to the inherent nature of *Sukhaśakti*. The so-called *Sukha* from other sources is the result of the *punya karma* bound in the past. One who realizes this comes closer to experiencing infinite bliss. Upon manifesting *Sukhaśakti*, the *sukha* that one experiences is permanent, natural, unchanging, absolute, blemishless, unrestrained, independent, incomparable, imperishable and impeccable.

Vīrya means 'power'. The *śakti* by which the soul creates the nature of the self in infinite dimensions is called *Vīryaśakti*.²⁵ Just as an engineer is required to gather the blueprints, designs, materials, labour, etc., to accomplish the construction work of any building, *Vīrya śakti* is that engineer of the soul that ensures that the working of the soul continues uninterruptedly. Due to *Vīrya śakti*, every *attribute* creates its respective *modification* in the soul. No *attribute* can create the *modification* of another *attribute*, let alone the non-self or any other external instrumental

cause. Such is the uniqueness of *Vīrya śakti*. When one makes an effort to manifest the *Vīrya śakti of the pure soul*, one generates the power to experience the different *śaktis* of the soul to the fullest. In other words, upon the manifestation of *Vīrya śakti*, one can manifest all of the infinite powers of the soul in totality all at once.

Thus, understanding the true nature of *the powers and striving to achieve the state of awareness through Ratnatraya results in the manifestation of Ananta Catuṣṭaya* or the eternal quadrangle of the soul. In this way, the quest to attain everlasting peace, harmony and bliss intensifies upon being introduced to the true nature of the self.

Correlation between social peace and AnantaCatuṣṭaya of a soul

According to St. Thomas Aquinas, the powers of the soul are properties of living things.²⁶ A craftsman moulds the irregular stone into a perfect regular valuable idol through fine craftsmanship and ultimate realization of the true inherent potential. Likewise, when one addresses the inner core that struggles to attain liberation and experience eternal bliss, one can experience the *AnantaCatuṣṭaya* and other infinite powers of the soul present in all; one only needs to realize and become a part of it. The sooner one discovers the innate creative powers of a soul and learns to use them appropriately, the sooner life will become the blissful experience one intends it to be. Upon experiencing these powers, obstacles get crushed, inner enemies are conquered, distresses pulverized, darkness shades and lightness shines. It eliminates all hindrances and obstructions from the life of an individual by destroying the karmas that prevent achieving eternal bliss. It provides an opportunity to unveil the mask of delusion and

unleash the true hidden potential by experiencing the self. It attempts to overpower all the existing temptations of man by providing a ray of satisfaction and instilling a sense of eternal bliss, which weighs way more than the happiness from mundane pleasures or fulfilment of desires.

Thus, understanding the essence of the *AnantaCatuṣṭaya* offers an opportunity to reconnect to the real identity of the self and experience its hidden potential. It provides the pathway to experience everlasting inner peace. This internal peace is the core, the essence and lays down the foundation for external peace as inner peace is the inherent nature of a soul. If each individual is at peace, the society formed by a group of such peaceful individuals would also be peaceful. In other words, individual peace can result in social peace following the ripple effect. Both are interdependent and mutually support the other as internal peace depicts the peace of an individual and external peace depicts the peace of society as a whole. There would be no violence, fear, hatred, conflicts, etc., to disturb the minds of people in a society consisting of individuals at peace. Thus, the pursuit for peace discovers meaning when one turns inward, dives deeper and learns that the home of peace, harmony, etc., is the self. Along the same lines, Mahatma Gandhi, one of the greatest apostles of peace the world has witnessed, has said, "Each one has to find his peace from within. And peace to be real must be unaffected by outside circumstances."²⁷ He elegantly put this as a notion for nations who love peace and harmony: "Peace will not come out of a clash of arms but out of justice lived and done by unarmed nations in the face of odds."²⁸

Conclusion

Every individual yearns for peace at some point of time in life. It undoubtedly occupies the top-most priority among most

wish lists in the world. However, one must understand that peace is a state of mind and an emotion to experience. Despite the mad race to acquire peace, harmony and bliss, one may still believe that man has not yet quite reached the desired result in the direction he was searching. The time has come to self-introspect and regain the vigour to restart the search for peace in the right direction. When inner growth is at par with the ongoing material growth and advancements, it enables one to restore individual peace and lay the foundation for social peace. In 2013, the International Day of Peace, observed on the 21st of September every year, was dedicated by the Secretary-General of the United Nations to peace education, the key preventive means to reduce war sustainably.²⁹ The 2021 theme for the International Day of Peace, "Recovering better for an equitable and sustainable world"³⁰, serves as an eye-opener to achieve peace at the individual level and make peace with nature at a global level amidst the COVID-19 pandemic. It sends out a strong message to spread and make peace with one another by viewing every individual through the lens of positivity. It is possible when one experiences innerpeace through the manifestation of the *AnantaCatuṣṭaya* of a soul. In other words, the journey to experiencing peace begins from the self by the self for the self. This restoration of peace and harmony shall enable man to fill the missing elements in his life with virtues and graces to ultimately make society, nation and the world a better place to live.

1. Institute for Economics & Peace, *Global Peace Index 2021: Measuring Peace in a Complex World*, Sydney, June 2021.
2. Bloomsbury, *Dictionary of Word Origins*, p. 387, quoted in 'Buddhism and Peace' written by Ven. B. Khemanando, (Calcutta: Lazo Print, 1995).

3. *The New International Webster's Comprehensive Dictionary of the English Language* (Deluxe Encyclopedic Edition), Trident Press International, Naples, 2001, p. 927.
4. Saint Augustine, *City of God*, XIX, 13, 1, London: Penguin Classics, 1991.
5. Pope Paul VI, *The Fostering Of Peace And The Promotion Of A Community Of Nations*, Pastoral Constitution On The Church In The Modern World, Gaudium Et Spes, Chapter V, 78, 7 December, 1965, para. 1–2. See also Isaiah 32:17.
6. Hedley Bull, *The Anarchical Society*, New York: Columbia University Press, 1977: Hedley Bull and A. Watson, *The Expansion of International Society*, Oxford: Clarendon Press, 1984.
7. *The Words of Peace: Selections from the speeches of the winners of the Nobel Peace Prize*, ed. Irwin Abrams, (New York: New market Press, 1995), p. 16.
8. Johan Galtung, "Violence, Peace, and Peace Research", *Essays on Peace: Paradigms for Global Order*, ed. Michael Salla, Walter Tonetto & Enrique and Martinez, (Central Queensland University press, 1995), p. 1.
9. Ibid, p.15.
10. Quoted from "Peace in Our Hearts, Peace in the World: Meditations of Hope and Healing" By Ruth Fishel, (New York: Sterling Publishing Co. Inc., 2008), p. 318.
11. Khan, Wahiduddin: "The Ideology of Peace", Goodword Books, New Delhi, p. 94.
12. Ahmed, Moinuddin "Religions of All Mankind" Kitab Bhawan, New Delhi – 110002, pp. 65-139.
13. *Ācārāṅga (Āyāro)*, Jain Viśva Bharati, Ladnun, 2/4/96.
14. *Sūtrakṛtāṅga (Sūyagado)*, Jain Viśva Bharati, Ladnun, 1/11/11.
15. *Praśnavyākaraṇa Sūtra*, Agama Prakshan Samiti, Byavara, 2/1/21.
16. *Umāsvāti, Tattvārtha Sūtra*, 5/21.
17. Tatia, Nathmal (tr.) (1994), *Tattvārtha Sūtra: That Which Is of Vācaka Umāsvāti (in Sanskrit and English)*, Lanham, Maryland: Rowman Altamira. ISBN 0-7619-8993-5. p.131
18. Sangave, Dr. Vilas A. (2001). *Facets of Jainology: Selected Research Papers on Jain Society, Religion, and Culture*. Mumbai: Popular Prakashan. p. 123. ISBN 81-7154-839-3.
19. *Mahopadhyāya Camdraprabhasāgara, Jaina Pāribhāṣika Śabda-kośa*, Prakrit Bharati Academy, Shree Jityasha Foundation, 1990, p. 118.
20. Balachandra Siddhanta Shastri, *Jaina-Lakṣaṇāvali*, Vir Seva Mandir, 1979, p. 1048.
21. *Anākāro-payogamayī Dr̥ṣṭi-śaktiḥ* - Dr. Hukam chand Bharill, Acharya Kundakunda's *Samayasāra*, Shri Kalyānamala Rājamala Pāṭanī Siddha Cetanā Trust and Pandit Todarmal Sarvodaya Trust, 2016, p. 596.
22. *Sākāro-payogamayī Jñāna-śaktiḥ* - Ibid
23. *Appāṇam viṇuṇāṇam nānam viṇuappa-gonaśamdeho, Tamhāsaparapayāsamāṇam taha daṁsaṇamhodi* - Dr. Hukam chand Bharill, Acharya Kundakunda's *Niyamasāra*, Pandit Todarmal Sarvodaya Trust, 2012, p. 445.
24. *Anākulatva-lakṣaṇā Sukha-śaktiḥ* - Dr. Hukam chand Bharill, Acharya Kundakunda's *Samayasāra*, Shri Kalyānamala Rājamala Pāṭanī Siddha Cetanā Trust and Pandit Todarmal Sarvodaya Trust, 2016, p. 597.
25. *Svarūpa-nirvartana-sāmarthya-rūpā Vīrya-śaktiḥ* - Ibid, p. 598.
26. St. Thomas Aquinas, *The Soul*, trans. John Patrick ROWAN (St. Louis: B. Herder Book Co., 1949), p. 157.
27. Anthony St Peter, *The Greatest Quotations of All-Time*, Xlibris Corporation, USA, 2010, p.476.
28. *Mahatma (D.G. Tendulkar) Vol 5:193*; 2nd Edn.(1960), Publications Division.
29. "International Day of Peace Event Information", Secretary-General of the United Nations, Archived from the original on 25 June 2013. Retrieved 18 July 2013.
30. "International Day of Peace, 21 September", United Nations, <https://www.un.org/en/observances/international-day-peace>.

*Research Scholar
Guest Faculty at University Of Madras, Chennai*

बढ़ती असहिष्णुता और घटते मानवीय मूल्य

श्री पारसमल चण्डालिया

वर्तमान युग भीषण सांस्कृतिक विघटन के दौर से गुज़र रहा है। नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। मानव जीवन का लक्ष्य संसाधनों में ही सिमट गया है। सांस्कृतिक विघटन एवं सामाजिक असन्तुलन के केन्द्र पर हम दृष्टिपात करें तो इन सबका मुख्य कारण है-असहिष्णुता।

असहिष्णुता और सहिष्णुता

असहिष्णुता का अर्थ है-सहिष्णुता नहीं होना, बरदाश्त (सहन) नहीं कर सकना, क्षमा का अभाव। सहिष्णुता यानी क्षमा-सहनशीलता। यू.एन.ओ. (U.N.O.) ने इस शब्द को व्यापकता से परिभाषित किया है कि दूसरे के अस्तित्व को स्वीकारना, सबके साथ रहने की योग्यता एवं दूसरे के विचार सुनना; यही शान्तिप्रिय एवं सम्य सम्राज रचना का आधारसूत्र है।

सहनशीलता एक विधा है, यह आध्यात्मिक सद्गुण तो है ही, सामाजिकता का भी आदिसूत्र है। असहिष्णुता अध्यात्म का विरोधी है तो समाज के विघटन में यह विस्फोटक भी है। समाज में जहाँ कहीं बिखराव जैसा लगता है उसके मूल में असहिष्णुता अवश्य है। जीवन की सफलता और असफलता का उपादान क्रमशः सहिष्णुता और असहिष्णुता है। सहनशीलता, सफल जीवन का मूल मन्त्र है। मनुष्य चिन्तनशील प्राणी है। अतः विभिन्न रुचि और स्वभाव के कारण मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन असहिष्णु व्यक्ति उन्हें मनभेदों का रूप दे देता है। इससे आपस में दीवारें खड़ी हो जाती हैं। इस कारण असहिष्णु व्यक्ति स्वयं दुःखी बनता है तथा औरों को भी दुःखी करता है।

असहिष्णुता पनपने के कारण

सहिष्णुता भारतीय संस्कृति का सनातन मूल्य रहा

है, पर इसका क्षरण भी तेजी से हुआ है। जिसका परिणाम हर स्तर पर परिलक्षित है। ऐसा भी नहीं है कि पहले सहिष्णुता की नदी बह रही थी और आज सूख गई है, पर जो अनुपात घटा है वह चिन्ताजनक है।

50-60 वर्षों से तथाकथित विकास के रास्ते पर हम चल रहे हैं वह केवल बाहरी-भौतिक है, जो सहिष्णुता के आसपास पनपने वाले सभी गुणों से हमें बहुत दूर ले जा रहा है। आधुनिक सञ्चार माध्यमों के कारण जहाँ दुनिया छोटी होती जा रही है वहीं मनुष्य ने अपने चारों तरफ अहम् की दीवारें बना ली हैं, जिनमें सहिष्णुता के लिए कोई गुञ्जाइश नहीं है।

बढ़ती हुई व्यापक असहिष्णुता का कारण है-अधिकार एवं कर्तव्य में असामञ्जस्य। आज सभी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं और येन-केन प्रकारेण उनकी प्राप्ति हेतु हड़ताल, आन्दोलन एवं तोड़फोड़ तक करते हैं। यह स्थिति घर और बाहर सभी जगह है। यह तथाकथित जागरूकता इतनी बढ़ गई है कि घर में पिता, स्कूल में शिक्षक और दफ्तर में अधिकारी भी सशक्त हैं। पिता पुत्र से, शिक्षक छात्र से तथा अधिकारी कर्मचारी से कुछ भी तो नहीं कह पाते। हम सब अधिकारों की दुहाई तो खूब देते हैं, पर कर्तव्य से परे हैं।

असहिष्णुता के दुष्परिणाम

स्थानाङ्गसूत्र स्थान 4 में प्रभु ने फरमाया है-
चउर्हि ठाणेर्हि संते गुणे णासेज्जा तं जहा-कोहेणं,
पडिनिवेशेणं, अकयण्णुयाए, मिच्छन्ताभिणिवेसेणं।

चार कारणों से व्यक्ति अपने में रहे हुए गुणों को नष्ट कर देता है। यथा-क्रोध से, प्रतिनिवेश से, अकृतज्ञता से तथा मिथ्यात्व के कारण। सद्गृहस्थ को गुणों के प्रति असहिष्णुता रूप ईर्ष्या का परित्याग करके

गुणों के प्रति अनुराग करना चाहिये।

असहिष्णुता से होने वाली हानियाँ

1. आत्मीयता का अभाव—सहिष्णुता के अभाव में परिवार, गाँव, समाज जैसी संस्थाएँ टूट रही हैं। रिश्ते समाप्त हो रहे हैं। आत्मीयता समाप्त हो रही है। पश्चिम में तो रिश्तों को केवल आदमी और औरत माना जाता है, वहाँ आत्मीय रिश्तों का प्रायः कोई महत्त्व नहीं है।

सहिष्णुता के अभाव में जीवन मूल्यों से दूर हटते इस जीवन क्रम में आज रिश्तों में रिसाव है, सम्बन्धों में सिसक है और आदर्शों का खोखलापन है। यह सब व्यक्तिवाद के इर्दगिर्द केन्द्रित है। हर किसी को अपनी पड़ी है। इस स्वार्थी वातावरण में सब अपनी ही सोचने में लगे हैं। हमारे चारों ओर मूल्यविहीन या फिर गिरते मूल्यों का वातावरण है। एक भाई दूसरे भाई की सफलता को बर्दाश्त नहीं कर पा रहा है। एक जाति-सम्प्रदाय दूसरे जाति-सम्प्रदाय को, एक प्रान्त दूसरे प्रान्त को और एक भाषा वाले दूसरी भाषा वाले को सहन नहीं कर पा रहे हैं। आज सब तरफ ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ एवं संकीर्णता फैलती जा रही है, यह सब आत्मकेन्द्रित व्यक्तित्व का परिणाम है।

2. सामूहिकता का नष्ट होना—असहिष्णुता के कारण आज सामूहिकता नष्ट होती जा रही है। व्यक्तिगत स्वार्थ हावी हो रहा है। समूह के लिए व्यक्तिगत तनिक भी हानि किसी भी स्तर पर सहा नहीं हो रही है। अपने स्वार्थ के लिए आज समूह को भी नुकसान पहुँचाने में व्यक्ति नहीं हिचकता, यह असहिष्णुता के कारण ही हो रहा है।

3. संयुक्त परिवार की टूटन—परिवार को बिखरने वाली दो मुख्य बातें हैं—सन्देह और असहिष्णुता। जैसे पक्षी का श्रम से बनाया हुआ सुन्दर नीड़ आँधी के एक झोंके से बिखर जाता है, इसी प्रकार सन्देह और असहिष्णुता की आँधी पीढ़ियों से संगठित परिवार को छिन्न-भिन्न कर देती है। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देने वाला व्यक्ति बहुत जल्दी संदिग्ध हो जाता है। पारस्परिक विश्वास एवं रूबरू बातचीत कर सन्देह

को दूर किया जा सकता है। किसी में स्पष्ट रूप से बात करने का साहस न हो उसे सहिष्णु बनकर स्थिति को उलझने से रोकना चाहिये। अन्यथा नफरत की बारूद कभी भी भयंकर विस्फोट कर सकती है। व्यक्ति और कुछ सीखे या नहीं, परन्तु सहन करना सीख ले तो एक परिवार में सँकड़ों व्यक्ति शान्ति से रह सकते हैं। सहन करने की मनोवृत्ति न होने के कारण ही परिवार टूटते हैं, तलाक होते हैं।

जिस परिवार के सदस्य एक-दूसरे को सहन करते हैं, एक-दूसरे के सुख-दुःख में अपनी भागीदारी रखते हैं, पारिवारिक हित के लिए व्यक्तिगत हानि को गौण कर देते हैं तथा आग्रह से दूर रहते हैं, वह परिवार एक आदर्श परिवार हो सकता है। परन्तु आज कोई किसी को सहने को तैयार नहीं है। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और बड़े परिवार की बात आज कहानी बनती जा रही है। अब तो छोटे परिवार में भी एक-दूसरे को सहना मुश्किल हो रहा है। विदेशी लोग भारत की जिस पारिवारिक व्यवस्था पर आश्चर्य करते आ रहे थे, वह संयुक्त परिवार प्रणाली भी आज अन्तिम साँसें ले रही है।

4. पृथक्वादी दृष्टिकोण—यह तथ्य किसी से भी छिपा नहीं है कि इंसान अपनों से पृथक् होकर केवल अपने में सिमटता चला जा रहा है, अतः न हमारे परिवार में शान्ति है, न समाज में। आज हम पाश्चात्य जीवनशैली की लहर में बहते हुए क्लब, फैशन और दिखावे की ओर अग्रसर हैं। इस चक्कर में हमारे सभी रिश्ते बेमानी होते जा रहे हैं। यह पृथक्वादी माहौल हमें और हमारे परिवार को जर्जर करता जा रहा है और हमारे राष्ट्र को कमजोर भी। पृथक्वादी दृष्टिकोण का सबसे बड़ा कारण है सहनशीलता की कमी। यह असहिष्णुता, तंगखयाली और संकीर्णता गलत शिक्षा और दूषित परिवेश के कारण है। आज अहं इतना बढ़ गया है कि कोई किसी को सहन नहीं करता है। पुत्र को पिता से, विद्यार्थी को शिक्षक से, भाई को भाई से और कर्मचारी को अधिकारी से बगावत करते देखा जाता है, क्योंकि सब इतने संवेदनहीन, आत्मकेन्द्रित तथा अहंकारी हो

गये हैं कि घर और बाहर सत्ता एवं व्यवस्था को नहीं स्वीकारते और विरोध करना, विद्रोह करना अपनी शान समझते हैं। सहनशीलता की यह कमी परिवारों में, सम्प्रदायों में, राजनैतिक दलों में एवं राष्ट्रों में असामञ्जस्य एवं असमन्वय का कारण है।

यदि हम सबको साथ लेकर नहीं चलेंगे तो यह पृथक्वादी दृष्टिकोण बढ़ता ही रहेगा और हम इस सभ्य संसार में युगान्तकारी महान् आविष्कारों एवं असीम सुख-सुविधाओं के बीच भी असभ्य, जंगली और पशुवत् बनते चले जायेंगे।

5. सच्चरित्रता में कमी-भावों की शुद्धि और पवित्रता को ही सच्चरित्रता कहते हैं। क्षमा, नम्रता, व्यवहार-कुशलता, दयालुता, विनय आदि गुणों को धारण करने से ही मनुष्य सच्चरित्र बन सकता है। व्यक्ति के प्रधान कर्तव्यों में क्षमा (सहनशीलता) सर्वश्रेष्ठ है। सच्चरित्रता ही मनुष्य का आभूषण है। चरित्रबल ही मनुष्य को जीवन संग्राम में विजय लाभ, यश और कीर्ति उपलब्ध कराता है। मनुष्य में उच्च मानवीय गुणों का विकास चरित्र बल से ही होता है। कहा भी गया है कि धन से क्षीण हुआ मनुष्य क्षीण नहीं माना जाता, परन्तु जिस मनुष्य का चरित्र नष्ट हो गया वह तो नष्ट ही है-
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः।

6. मानवीय मूल्यों का हास-आज का मानव भौतिकवाद के झंझावात में फँसता चला जा रहा है, यह विडम्बना ही है। धन-वैभव की चकाचौंध और भोगोपभोग के विपुल साधनों के प्रति आसक्ति मानव पर इस क्रूर हावी है कि वह सिद्धान्तों को धत्ता बताते हुए येनकेन प्रकारेण उन्हें जुटाने में ही दिन-रात घाणी के बैल की तरह जुटा रहता है। आज यह स्थिति है कि धन के मुकाबले धर्म का स्थान कमजोर हो गया है। धन और सुविधाओं की आँधी ने धर्म और नीति के दीपक को बुझा-सा दिया है। परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व में संघर्ष ही संघर्ष है, सर्वत्र अशान्ति ही अशान्ति है। सद्भावना, स्नेह एवं सहयोग का सर्वत्र अभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। मानवीय मूल्यों को जीना ही

धार्मिक होने की अहम् भूमिका है। मानवीय मूल्यों का हास, धर्म का हास है, इंसानियत का हास है। मानवता हीन समाज, समाज नहीं होता, हड्डियों का ढेर मात्र होता है, अपराधकर्मियों का समूह होता है। आज आसुरीवृत्ति हर जगह हावी हो रही है तभी तो हिंसा और फरेब का बोलबाला है। हत्याओं के आँकड़े दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं।

आज चारों ओर मनुष्य का मानवीय पक्ष धूमिल हो रहा है। वैयक्तिक स्वार्थों ने हमारी समझ की आँखों पर परदा डाल दिया है। हम इन स्वार्थों के घेरे से निकलने की कोशिश नहीं कर रहे हैं। मानवीय मूल्यों की, मानवीय संवेदनाओं की, सहिष्णुता की बातें बहुत होती हैं, पर ये सारी बातें हमारे स्वार्थों से उपजी होती हैं। मानव के इतने स्वार्थी एवं संवेदनहीन होने का प्रमुख कारण है-असहिष्णुता। असहिष्णुता उस बीमार सोच की उपज है जो दूसरों को पीछे धकेलकर आगे बढ़ने को ही प्रगति की संज्ञा देती है। आधुनिक मनोवृत्ति व्यक्ति की संवेदना को सुखा रही है और उस मनोवृत्ति की कोख से हिंसा, आतंक, अनाचार, भोगवासना एवं अनैतिकता जैसी स्थितियाँ पैदा होती हैं। इन मानवीय मूल्यों को जीवटता प्रदान करने का अमोघ साधन है-सहिष्णुता।

असहिष्णुता और वर्तमान परिवेश

आज विश्व के अनेक देशों में पारस्परिक अविश्वास, तनाव, वैमनस्य तथा असहनशीलता की तीव्र भावना व्याप्त है। पारस्परिक सौहार्द, सद्भावना तथा सहनशीलता का अभाव विश्व के लिए आज सबसे बड़ा खतरा है। शक्तिशाली राष्ट्र कमजोर, छोटे और अविकसित राष्ट्रों पर निरन्तर अपना प्रभाव और दबाव बनाए हुए हैं। वे अपने प्रभुत्व का क्षेत्र बढ़ाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

आज पारस्परिक सहनशीलता और सद्भावना के अभाव में एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के प्रति अविश्वास और आशंका से युक्त है। जब हम विश्व के परिदृश्य से हटकर अपने राष्ट्र, समाज और मानव के परिवेश को देखते हैं

तो पाते हैं कि हमारे देश में भी व्यक्ति, परिवार और समाज के बीच सहनशीलता का अभाव है। आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमारे समाज में भी सद्भावना और सहनशीलता की उदात्त भावना में निरन्तर कमी होती जा रही है। प्रत्येक परिवार और समाज की कुछ मर्यादाएँ होती हैं। छोटे-बड़ों के प्रति आदर भाव रखें तथा सहनशीलता से व्यवहार करें। बड़ों से भी यह अपेक्षा की जाती है कि बिना किसी भेदभाव के छोटों के प्रति स्नेह तथा सद्भावना रखें। सहनशीलता, सद्भावना और स्नेह की डोरी से बन्धे हुए आज भी अनेक परिवारजन अनेक विषमताओं के बावजूद सौहार्दपूर्वक सुखमय जीवन-यापन कर रहे हैं। किन्तु अधिकतर परिवारों में सहनशीलता और पारस्परिक सौहार्द के अभाव के कारण बिखराव हो रहा है। अतीतकाल की सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली भारतीय परिवारों की विशेषता रही है। किन्तु वर्तमान समय में परिवारों में जो टूटन और बिखराव हो रहा है, उसके मूल में व्यक्ति का अहं तथा पारस्परिक असहनशीलता ही मुख्य कारण है।

जब व्यक्ति की महत्त्वाकांक्षाएँ सीमा का अतिक्रमण कर निजी स्वार्थ के दायरे में सिमट कर रह जाती हैं तब व्यक्ति की दृष्टि स्व केन्द्रित हो जाती है। वह अपने परिजनों के प्रति निरपेक्ष, असहिष्णु तथा असहनशील बन जाता है। हमारे आसपास के अनेक परिवारों में इस प्रवृत्ति वाले अनेक व्यक्ति पाये जाते हैं।

भारतीय मनीषा के अनुसार व्यक्ति परिवार के लिए त्याग करे, परिवार समाज के लिए त्याग करे और समाज राष्ट्र के लिए त्याग करे तभी राष्ट्र में मानवीय मूल्यों की रक्षा हो सकती है। किन्तु आज के बदलते हुए परिवेश और सन्दर्भ में इसके विपरीत देखने को मिलता है। वर्तमान काल में व्यक्ति के व्यवहार और आचरण में जो बदलाव आ रहा है, उससे लगता है कि पारस्परिक सद्भावना, सहनशीलता और मानवीय संवेदना में निरन्तर कमी होती जा रही है। परिवार की इकाई संकुचित होती जा रही है। परिवार छोटी-छोटी इकाइयों में विभक्त हो रहे हैं और अब तो परिवार पति-पत्नी

और उनके बच्चों में सिमट कर रह गया है। वर्तमान युवापीढ़ी पाश्चात्य जीवनशैली से प्रभावित होकर उनकी जीवन-पद्धति का अन्धानुकरण करने में अपने जीवन का उत्कर्ष तलाश रही है। औद्योगीकरण की विसंगतियाँ तथा उपभोक्ता संस्कृति के दुष्प्रभाव के कारण मानव की सोच में बहुत बदलाव आया है। परिणामस्वरूप परिवारों में बिखराव और टूटने की प्रवृत्ति लगातार बढ़ रही है। इस प्रवृत्ति ने एक ओर तो मानव जीवन मूल्यों का हास किया है और दूसरी ओर मानवीय संवेदना, सहिष्णुता और सहनशीलता आदि उदात्त भावनाओं में भी कमी की है।

व्यक्ति, परिवार और समाज में भाईचारा और सद्भावना बनाये रखने में सहनशीलता की उदात्त भावना की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। पारस्परिक स्नेह, एकता और सहनशीलता धार्मिक उन्माद तथा साम्प्रदायिकता को तिरोहित कर मानवीय संवेदना को जागृत करती है। यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के प्रति सहनशीलता रखे तो पारस्परिक मनमुटाव और कलह की स्थितियाँ उत्पन्न नहीं होंगी। बहुधा यह देखा जाता है कि सहनशीलता के अभाव के कारण ही विद्वेष फैलता है और आपस में कहा-सुनी होती है और बात बढ़कर संघर्ष का रूप ग्रहण कर लेती है। परिवार तथा समाज के सभी सदस्य यदि परस्पर प्रेमभाव, सद्भावना तथा सहनशीलता से व्यवहार करें तो अशान्ति उत्पन्न ही नहीं होगी।

सद्व्यवहार तथा सदाचरण व्यक्ति के अन्तर-मन में सद्भावना तथा सहनशीलता को उत्पन्न करता है, जो पारस्परिक प्रेम और भाईचारे की श्रेष्ठ भावना को बढ़ाता है।

सहिष्णुता प्रकाश स्तम्भ है राह दिखाने को, भटकाव से रोकने को। यह अंकुश है व्यक्ति की निरंकुशता को रोकने के लिए। सहिष्णुता से ही देश में सुख-सरिता बह सकती है।

-7/14, उत्तरी न्हेरु नगर, बिड़ल बस्ती, ब्यावर-305901 (राज.)

कठिन दौर में भी नहीं मानेंगे हार

श्री गौतम पारख

आत्महत्या शब्द सुनकर ही न जाने क्यों व्यक्ति अवाक् हो जाता है। वह सोचने-समझने और कारण जानने के लिए विवश हो जाता है। अनेक प्रश्न भी मन मस्तिष्क पर उभरने लगते हैं। व्यक्ति मन ही मन बोलने लगता है काश ऐसा होता तो, ऐसा नहीं होता। न जाने किन-किन परिवेशों, परिस्थितियों और विवशताओं की कहानी आँखों के सामने तैरने लगती है अथवा प्रश्नवाचक बनकर उभरने लगती है। इस प्रकार मौन होकर व्यक्ति स्तब्ध रह जाता है।

मैं सोचने लगा, आखिर आत्महत्या किसे कहते हैं। स्वयं के द्वारा स्वयं की, की गई हत्या ही तो आत्महत्या कहलाती है। परन्तु आत्मा तो अजर है, अमर है, अविनाशी है, शाश्वत है उसकी हत्या कैसे हो सकती है? आत्महत्या स्वयं को स्वयं के द्वारा दी गई ऐसी भयावह क्षणिक प्रताड़ना है जिससे लौटकर आना सम्भव नहीं है। आत्महत्या निराशा, विवशता, आक्रोश, क्षणिक आवेश के बीच नासमझी, बेभानी और नादानी में किया दुस्साहस, दुष्कृत्य और अक्षम्य अपराध ही तो है।

अपेक्षा की पूर्ति का कोई मार्ग नहीं दिखना, उपेक्षाओं की चरम परिणति के बीच पुण्यवानी का क्षीण होना और भाग्योदय पर ग्रहण लगने की अन्तिम परिणति भी आत्महत्या हो सकती है। इन सबके बावजूद स्वयं के द्वारा स्वयं पर किया गया जघन्य अपराध ही आत्महत्या है। कभी-कभी शारीरिक व्याधि को लम्बे समय तक सहन न कर पाने के कारण और वेदनाओं की पराकाष्ठा के बीच भी व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है।

मेरा ध्यान जैनदर्शन में जीवन के अन्तिम पड़ाव अथवा अन्तिम पड़ाव जैसी स्थिति में आगार सहित अथवा पूर्णकालिक लिये जाने वाले संथारा व्रत पर

आकर टिक गया। संथारा जिसमें अन्न-जल के त्याग के साथ ममत्व के विसर्जन एवं क्षमायाचना के उत्कृष्ट भावों की श्रेष्ठतम भावाञ्जलि होती है। केवल और केवल आत्मस्वरूप के चिन्तन के साथ पापों के प्रक्षालन का भाव होता है। शरीर के उपचार के बजाय आत्मा की उपचार शुद्धि का भाव रहता है। राग-द्वेष की ग्रन्थियों का भेदन कर निर्ग्रन्थ (ग्रन्थिरहित) जीवन जीने की उत्कण्ठा, पुरुषार्थ, पराक्रम, दृढ़इच्छा शक्ति ही संथारा की पृष्ठभूमि है। आत्महत्या के समय का भावजगत स्वयं को दुर्गति का मेहमान बनाकर विराधक बना देता है। सम्यक् संथारे का भावजगत, सद्गति का मेहमान बनाता है। जीव आराधक बनकर उत्कृष्ट श्रेणी की ओर प्रयाण करने लगता है।

आत्महत्या शब्द पुनः आँखों के सामने तैरने लगा। मेरे स्मृति पटल पर छात्र जीवन में सुना हुआ एक घटनाक्रम उभर कर आ गया। सम्पन्न परिवार था। सेठ-सेठानी (पति-पत्नी) का जीवन आनन्दमय चल रहा था। व्यापार, कारोबार भी ठीक चल रहा था। भाग्योदय के क्षीण होने से व्यापार में लगातार नुकसान होने लगा। धीरे-धीरे सारी सम्पत्ति भी बिक गई। सेठानी ने सेठ को अपने मायके जाने हेतु तैयार किया। वहाँ सहारा मिल जायेगा। सेठानी के आग्रह से सेठ ससुराल जाने को तैयार हो गये। दोनों पैदल मार्ग से जाने लगे। रास्ते में सेठजी को प्यास लगी। कुआँ पास ही था। कुएँ में बाल्टी, रस्सी लगी हुई थी। सेठजी पानी निकालने के लिए बाल्टी को नीचे डालकर झुककर पानी को देखने लगे। सेठानी ने सोचा कि मैं तो मायके में रह जाऊँगी। सेठजी को कौन सम्भालेगा? भावदशा बिगड़ी और सेठानीजी ने पीछे से सेठजी को कुएँ में धक्का दे दिया। सेठजी कुएँ में गिर पड़े। सेठानी चुपचाप आगे बढ़कर

मायके चली गई। इधर सेठजी कुएँ में पत्थरों को पकड़ लेने के कारण पानी में गिरने से बच गये। दूसरा यात्री आया। उसे भी प्यास लगी थी। कुएँ में झाँककर देखा तो उसमें से बचाओ-बचाओ की आवाज आ रही थी। यात्री ने कुएँ की रस्सी को मोटी कर कुएँ में डाला। सेठजी को रस्सी पकड़कर रखने को कहा। राहगीरों को बुलाकर सबने मिलकर रस्सी खींचकर सेठजी को कुएँ से बाहर निकाला। सेठजी की दशा देखकर एक राहगीर उन्हें अपने घर ले गया। सेठजी राहगीर के व्यवसाय में हाथ बटाने लगे। पुण्यवानी ने जोर मारा, भाग्योदय का बिगुल बजने लगा। सेठजी ने व्यापार में खूब धन कमाया। राहगीर को अपना उपकारी मानकर विपुल धन राशि लेकर सेठजी पुनः अपने गाँव लौटे। कुछ समय बाद स्वयं सेठानी (पत्नी) को लेने ससुराल गये। शान-शौकत से सेठानी को घर लाये। सेठानी को उसकी गलती का एहसास ही नहीं होने दिया बल्कि अनायास कुएँ में खुद गिरने की बात कहकर राहगीरों के उपकार की कहानी कहने लगे।

एक दिन सेठजी घर के आँगन में भोजन कर रहे थे। अचानक धूप आ गई। सेठानीजी उन्हें धूप से पीछे हटाकर, छाया में बैठाकर भोजन करवाने लगी तथा पंखा लेकर सेठजी को हवा करने लगी। पुत्रवधू भोजन परोस रही थी। अचानक सेठजी मुस्कराने लगे और पुनः भोजन करने लगे। पुत्रवधू भोजन के पश्चात् सेठजी से अकेले में जाकर पूछने लगी। आप भोजन करते हुए अचानक मुस्कराकर शान्त क्यों हो गये। सेठजी पुत्रवधू को टालते रहे। पुत्रवधू जिद पर आ गई। आखिर सेठजी ने सेठानीजी के कुएँ में धक्का देने और आज भाग्योदय होने पर हवा करने, धूप से बचाने तक की पूरी बात बता दी। संयोगवश एक दिन पुत्रवधू का अपनी सास से झगडा हो गया। पुत्रवधू ने आक्रोश में सेठानीजी द्वारा सेठजी से किये गये दुर्व्यवहार से लेकर हवा करने वाली तक की सारी घटना कह दी। सेठानीजी अवाक् रह गई। पुत्रवधू के मुँह से सारी बात सुनकर काटो तो खून नहीं जैसी स्थिति हो गई। गहरी निराशा के साथ वह अपने

द्वारा किये कार्यों का रहस्योद्घाटन होने पर तिलमिला गई। तत्काल अपने कमरे में गई और फाँसी का फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। सेठजी ने काफी देर सेठानीजी को नहीं देखा तो वे कमरे में गये। पत्नी को फाँसी के फंदे में लटके देख उन्हें समझने में देर नहीं लगी कि पुत्रवधू ने मेरे द्वारा बताये गये घटनाक्रम को मेरी पत्नी को ताने मारकर, व्यंग्यपूर्वक कह दिया। सेठानी के फाँसी का कारण स्वयं को मानकर, सेठानी को फन्दे से निकालकर स्वयं को फाँसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सास, ससुर को नहीं देखकर पुत्रवधू कमरे में गई। सास, ससुर की लाश देखकर सिहर उठी। दोनों की आत्महत्या का कारण स्वयं को मानकर उसने भी वहीं आत्महत्या कर ली। सेठजी का पुत्र, माता-पिता को ढूँढ़ते हुए कमरे में आया। उसने सोचा कि जब माता-पिता, पत्नी ही नहीं है तो मैं जीवित रहकर क्या करूँगा? पुत्र ने भी आत्महत्या कर ली। पूरे परिवार की लाश कमरे में पड़ी रही। कैसी विडम्बना है?

मैंने अनेक बार समाचार पत्रों में पढ़ा कि पति-पत्नी ने बदहाली से तंग आकर ज़हर खा लिया। साथ ही अपने बच्चों को भी ज़हर देकर पूरे परिवार सहित संसार से विदा हो गये। नासमझी, अज्ञानता, मानसिक तनाव के बीच व्यक्ति अपने इस अमूल्य मानव जीवन को जिसमें सारी सम्भावनाएँ मौजूद हैं, क्षणिक तनाव में जाकर गलत क़दम उठा लेता है। किसी कारण, निमित्तवश क्षणभर के लिए अगर वह समय टल जाता तो व्यक्ति आत्महत्या करने से बच जाता। परिवार में एक आत्महत्या होने से परिवार, समाज सभी परेशानी में आ जाते हैं। अनेकों के भविष्य में अन्धकार छा जाता है।

हम सब संकल्प लें कि जीवन में निराशा, उत्पीड़न, असफलता, नाकामयाबी, उतार-चढ़ाव और कठिनतम संघर्षों के बीच हम कभी-भी न हारेंगे, न रूठेंगे, न निराश होंगे और न ही धैर्य खोयेंगे। किसी भी परिस्थिति में आत्महत्या जैसा जघन्य अपराध नहीं करेंगे। साथ ही हम मानवता के नाते सदैव दूसरों के कठिनतम दिनों में सहारा बनने का धर्म भी नहीं भूलेंगे।

-राजनान्दगाँव (छत्तीसगढ़)

शोध एवं सृजन में सातत्य आवश्यक

डॉ. दिलीप धींग

अखिल भारतीय श्वेताम्बर जैन विद्वत्परिषद् के अन्तर्गत 13 दिसम्बर, 2021 को मुझे 'सद्यः प्रकाशित विनयचन्द चौबीसी का अनुशीलन' विषय पर व्याख्यान देने का अवसर मिला था। इस व्याख्यान के लिए जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने प्रेरणा दी थी। उन्हीं दिनों सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित कविवर श्री सम्पतराज चौधरी की विवेचित विनयचन्द चौबीसी पुस्तक मैंने पढ़ी थी। चौधरी जी और उनकी साहित्यिक सेवाओं के प्रति सम्मान के रूप में मैंने उक्त विषय का चयन किया था। मेरा लिपिबद्ध व्याख्यान 'जिनवाणी' के मई-2022 के अंक में प्रकाशित हुआ था।

पिछले दिनों मुझे आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा संकलित और संशोधित पुस्तक 'पट्टावली प्रबन्ध संग्रह' देखने का अवसर मिला। डॉ. नरेन्द्र भानावत द्वारा सम्पादित एवं सन् 1968 में जैन इतिहास निर्माण समिति, जयपुर द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में विभिन्न पट्टावलियाँ दी गई हैं। स्थानकवासी पट्टावलियों में पहली पट्टावली विनयचन्दजी कृत देखने को मिली। 372 पृष्ठों की इस पुस्तक में यह विनयचन्द पट्टावली अर्थ सहित 109 पृष्ठों में प्रकाशित है। पुस्तक में आगे परिशिष्ट-3 में पृष्ठ 323 पर कवि और कवि के सृजन के बारे में विशेष जानकारी मिलती है, जिसे यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ-

“विनयचन्दजी कृत पट्टावली की हस्तलिखित प्रति आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के पास है। अक्षरों को देखने से लगता है कि पूज्य श्री हमीरमलजी म.सा. ने इसे लिपिबद्ध किया हो। यह पाँच पन्नों में लिखी गई है। इसके रचयिता कवि विनयचन्दजी इन्हीं पूज्य हमीरमलजी से प्रतिबोध पाकर जैनधर्म की शुद्ध श्रद्धा के उपासक बने थे। अनुमान है कि विक्रम स्वत् 1902

(पूज्य रत्नचन्द्रजी म.सा. का स्वर्गारोहण-काल) के पूर्व ही इस पट्टावली की रचना की गई होगी, क्योंकि रचनाकार ने अपने अन्तिम पद्य में 'रहो पूज रतनेश चिरकाले तन चंगा' लिखा है, जो पूज्यश्री की विद्यमानता में ही सम्भव हो सकता है। 'चौबीसी' तथा 'आत्मनिन्दा' इनकी अन्य रचनाएँ हैं। पट्टावली में कई विभिन्न छन्दों का प्रयोग किया गया है।”

यदि चौधरी जी ने पट्टावली प्रबन्ध संग्रह पुस्तक देख ली होती तो वे कवि विनयचन्दजी के परिचय में अवश्य ही उक्त परिचय भी समाविष्ट करते। यदि मैंने भी यह पट्टावली देखी होती तो मैं मेरे व्याख्यान और निबन्ध में विनयचन्द कृत पट्टावली और उनकी रचनाधर्मिता का विवेचनात्मक उल्लेख करता। यदि जिनवाणी के सम्पादक महोदय के ध्यान में यह तथ्य आ जाता तो वे भी मेरे निबन्ध में इस तथ्य का समावेश कर लेते। किसी पाठक ने भी इस ओर ध्यान आकर्षित नहीं किया।

यह सब लिखने का प्रयोजन यह है कि इतने निकटवर्ती प्रामाणिक सन्दर्भ की ओर भी हमारा ध्यान नहीं जा सका तो सुदीर्घ कालखण्ड और विस्तृत क्षेत्रफल के इतिहास का लेखन और अनुसन्धान करने वालों ने कितना परिश्रम किया होगा। आचार्य श्री हस्ती ने 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' में अनेक स्थानों पर अनाग्रह भाव से यह निर्देश किया है कि अमुक विषय पर आगे और शोध-खोज होना अपेक्षित है। आचार्यश्री के निर्देश की दिशा में भी कुछ होना चाहिये।

उक्त प्रसङ्ग सतत साहित्य सृजन एवं विद्वानों तथा साहित्यकारों के समुचित मान-मूल्यांकन की प्रेरणा भी देता है।

-शोध प्रमुख : जैनविद्या विभाग, शासुन जैन कॉलेज, चेन्नई-600 017 (तमिलनाडु)

सुरों की सरगम : गुरु हीरा का जीवन

सौ. अनिता किशोर लुंकड़

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, संयम सुमेरू ओजस्वी, तेजस्वी, मनस्वी, यशस्वी आचार्यप्रवर हीराचन्द्रजी म.सा. के संयमी जीवन को 60 वर्ष पूर्ण हुए हैं। हम सबके लिए यह बड़े गौरव का विषय है। हम सब भाग्यशाली हैं कि गुण-सम्पन्न प्रभावक आचार्यश्री की छत्रछाया हमें प्राप्त हुई है।

आचार्य हस्ती की चरण-सन्निधि पाकर गुरु हीरा के जीवन में त्याग-वैराग्य की जो संयम गूँज उठी है। वह पिछले साठ वर्षों से निरन्तर सुनाई दे रही है। सप्त सुरों के माध्यम से गुरु हीरा का निर्मल संयम-जीवन प्रस्तुत करते हैं-

1. सा-सादा जीवन उच्च विचार।

आडम्बर रहित जीवन,

नाम, पद, प्रतिष्ठा की लालसा नहीं,
प्रदर्शन से दूर, सीधा-साधा सादगीमय जीवन
जिससे जन मानस अत्यन्त प्रभावित है।

2. रे-रेशम सा मुलायम हृदय।

हर जीव के प्रति दया, करुणा का सञ्चार,
इसलिए व्यसन-मुक्ति अभियान,
रात्रिभोजन-त्याग अभियान,
निर्व्यसनी सामायिक अभियान,
जिससे हर जीव को साता,
समता, समाधि मिले। अहिंसा का पालन हो।
इस उदार भावना से भरा
कोमल हृदय है गुरुदेव आपका।

3. ग-गम खाना।

अनुकूल-प्रतिकूल प्रसङ्गों पर धैर्य रखना,
हर हाल में संयम में सजग रहना,
अनुशासन के पक्के। हर समस्या के समाधान में

सहनशीलता और धैर्य का परिचय दिया है
गुरुवर आपने।

4. म-मधुरता।

मधुरता का विशेष गुण गुरुदेव के जीवन में पाया है।
मधुर व्यवहार, मधुरवाणी, चतुर्विध संघ से
गुरुदेव का आत्मीयता का व्यवहार,
शिष्य सम्पदा से वात्सल्य।
हर सम्प्रदाय से सौहार्द, सरलता, मृदुता का व्यवहार।
सम्प्रदायवाद से दूर रहे,
गुरु की श्रेष्ठता का अनुमान
उनकी शिष्य सम्पदा को
देखकर लगाया जा सकता है।

5. प-पवित्रता।

आचार, विचार, व्यवहार की पवित्रता,
संयम-जीवन की पवित्रता बनाये
रखने में हर पल सजग।
क्रियापालन में कठोर, कथनी-करनी में समानता।
60 वर्षों से निरन्तर निरतिचार,
निर्मल पवित्र संयम का
पालन किया है गुरुदेव आपने।

6. ध-ध्यान।

इन्द्रियों का संयम रखते हुए तप, त्याग,
ध्यान, मौन आदि साधना में,
संयम क्रिया में निरन्तरता,
नियमितता के कारण आपके
संयमी जीवन में निखार आता गया।

7. नि-निरहंकारिता।

रोम-रोम से, त्याग वैराग्य से
सुरभित आचार्यप्रवर ने

आचार्य पद की सिल्वर जुबली,
संयम जीवन की गोल्डन जुबली,
जन्म जयन्ती की डायमण्ड जुबली
कब की पार कर ली।

फिर भी अहंकार आपको छू नहीं पाया, खुद की प्रशंसा सुनना आपको पसन्द नहीं, हमेशा आत्मरमण करना आपको पसन्द है। इसीलिये समय रहते दीर्घदृष्टि से आपने भावी आचार्य का चुनाव किया। सप्त सुगों की सरगम से अपनी तथा औरों की आत्मा को झंकृत किया।

धन्य-धन्य ऐसे आचार्य भगवन्त और आपकी 60 वर्ष की दीर्घ संयम यात्रा, जिसे देखकर आपकी गौरव गरिमा का भान होता है।

संयम दिवस के अवसर पर आचार्य देव के प्रति कृतज्ञता एवं अहोभाव व्यक्त करते हैं। गुरुदेव आप स्वस्थ रहें, दीर्घायु हों यही मंगल कामना करते हैं।

-किशोर कुमार रोहित कुमार लुंकड़, शान्ति नगर,
कल्पतरू हार्डट्रस, प्लॉट नं. 102, सूरत गेट के पास,
जलगाँव-425001 (महाराष्ट्र)

बुढ़ापे को कीजिए सार्थक

संकलन : श्री नवरत्न डगर

जो जवानी में बुढ़ापे की सही व्यवस्था कर लेते हैं, उनका बुढ़ापा सुख से बीतता है। बुढ़ापा जीवन का सुनहरा अध्याय है। जवानी में तो व्यक्ति दूसरों के लिए जीता है, लेकिन बुढ़ापे में व्यक्ति अपने जीवन के कल्याण और मुक्ति के लिए अपने कदम बढ़ाता है। जीवन भर जो परिश्रम किया है, बुढ़ापे में उससे शान्ति, विश्राम और आनन्द से जीने की कामना रखता है। जीवन का बसन्त जवानी नहीं, बुढ़ापा है। बचपन ज्ञानार्जन, जवानी धनार्जन और बुढ़ापा पुण्यार्जन, धर्मार्जन तथा शान्ति-मुक्ति के लिए है।

बुढ़ापा है तो अच्छे गीत गाओ, अच्छी कविताएँ गाओ, अच्छे चित्र बनाओ, प्रकृति के अच्छे नज़ारे देखो, अच्छे बोल बोलो, अच्छे संवाद करो, स्वाध्याय करो, चिन्तन-मनन करो, बारह भावना भाओ, तीन मनोरथ चितारो, साधना-ध्यान इत्यादि करो। इसके अलावा बुढ़ापा स्वस्थ, कार्यरत और सुरक्षित हो। इसके लिए निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिए-

* उचित आहार-उचित, संयमित एवं सन्तुलित आहार लें।

- * उचित व्यायाम-कम से कम पन्द्रह मिनट उचित व्यायाम करें।
- * प्रातः भ्रमण-पन्द्रह मिनट प्रातः भ्रमण करें।
- * आरोग्य के प्रति सतर्क रहें-जीवनभर दुकान, मकान, दूसरों पर खर्च करते रहे। बुढ़ापे में अपने स्वास्थ्य की अवहेलना नहीं करें।
- * बचें दखलअन्दाज़ी से-अपना दैनिक कार्यक्रम बनायें। कहीं पर भी दखलअन्दाज़ी नहीं करें। जो जैसा कर रहा है करने दें।
- * अधिक आशा न पालें-बच्चों से अधिक आशाएँ न रखें।
- * सीखें बुढ़ापे में भी-बूढ़े हो गये तब भी अच्छी किताबें पढ़ें, स्वाध्याय करें, कुछ अच्छी बातें सीखने की कोशिश करें।
- * स्वावलम्बी बनें-जहाँ तक सम्भव हो अपने कार्यों के लिए औरों पर आश्रित होने के बजाय अपने कार्य स्वयं सम्पादित करें।
- * संवाद बनाये रखें-परिवारजनों, मित्रों, पड़ोसियों आदि से संवाद बनाये रखें, सबसे मिलें-जुलें।
- * सहयोग की भावना-प्राणिमात्र के प्रति सहयोग की भावना रखें।

-76, 'लक्ष्म', नेहरुपार्क, जोधपुर-342003
(राजस्थान)

पीने योग्य शक्तिवर्धक पानी कैसा हो?

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

शरीर में जल के कार्य

हवा के पश्चात् शरीर में दूसरी सबसे बड़ी आवश्यकता पानी की होती है। पानी के बिना जीवन लम्बे समय तक नहीं चल सकता। शरीर में लगभग दो तिहाई भाग पानी का होता है। शरीर के अलग-अलग भागों में पानी की आवश्यकता अलग-अलग होती है। जब पानी के आवश्यक अनुपात में असन्तुलन हो जाता है तो शारीरिक क्रियाएँ प्रभावित होने लगती हैं।

हमारे शरीर में जल का प्रमुख कार्य भोजन पचाने वाली विभिन्न प्रक्रियाओं में शामिल होना तथा शरीर की संरचना का निर्माण करना होता है। शरीर के भीतर विद्यमान गन्दगी को आँखों से आँसुओं, नाक से श्लेष्मा, मुँह से कफ, त्वचा से पसीने एवं आँतों से मल-मूत्र द्वारा शरीर से बाहर निकालने में जल सहयोग करता है। शरीर में जल की कमी से कब्ज, थकान, ग्रीष्म ऋतु में लू आदि की सम्भावना रहती है। जल के कारण ही हमें, छह प्रकार के रसों-मीठा, खट्टा, नमकीन, कड़वा, तीखा और कषैला स्वाद अनुभव होता है। जल से ही शरीर का तापक्रम नियन्त्रित होता है। शारीरिक शुद्धि के लिए भी जल आवश्यक होता है। शरीर के निर्माण तथा पोषण में अपनी अति-महत्वपूर्ण भूमिका के कारण किसी भी परिस्थिति अथवा रोग में पानी पीना वर्जित नहीं होता है। अतः हमें यह जानना और समझना आवश्यक है कि हम कैसा पानी पीयें और कैसा पानी न पीयें? पानी का उपयोग हम कब और कैसे करें, कब और कैसे न करें?

जल की विशेषताएँ

पानी अपने सम्पर्क में आने वाले विभिन्न तत्त्वों को सरलता से अपने अन्दर समाहित कर लेता है।

चुम्बक, पिरामिड के प्रभाव क्षेत्र में पानी को कुछ समय तक रखने से उसमें चुम्बकीय और पिरामिड ऊर्जा के गुण आ जाते हैं। सोना, चाँदी, ताम्बा, लोहा आदि के बर्तनों अथवा इन धातुओं के सम्पर्क में पानी को कुछ अवधि तक रखने से पानी सम्बन्धित धातु के गुणों वाला बन जाता है। रंगीन बोतलों को पानी से भरकर सूर्य की धूप में रखने से पानी सम्बन्धित रंगों के स्वास्थ्यवर्धक गुणों से परिपूर्ण होने लगता है। इसी प्रकार मन्त्रों द्वारा मन्त्रित करने, रत्नों एवं क्रिस्टल के सम्पर्क से पानी उनसे प्रभावित हो जाता है। अतः पीने के पानी के उपयोग में आने वाले पानी का यथासम्भव मिट्टी के बर्तनों में संग्रह करना चाहिए। आजकल शुद्ध पानी के नाम से वितरित बोतल बन्द मिनरल पानी प्रायः प्लास्टिक बोतलों अथवा पाउचों में उपयोग में लेने से बहुत दिनों पूर्व से संगृहीत रहता है। ऐसा पानी प्लास्टिक के हानिकारक रासायनिक तत्त्वों से प्रभावित न हो, यह असम्भव ही लगता है। जिसका अन्धानुकरण कर ऐसा पानी पीने वालों को दुष्प्रभावों के प्रति सजगता हेतु सम्यक् चिन्तन करना चाहिए। स्वास्थ्य मन्त्रालय से भी जनहित में इस विषय पर सम्यक् स्पष्टीकरण अपेक्षित है।

पीने योग्य पानी कैसा होना चाहिए?

शुद्ध एवं स्वच्छ, हल्का, छाना हुआ, शरीर के तापक्रम के अनुकूल पानी जनसाधारण के पीने हेतु उपयोगी होता है। अतः यदि पानी गन्दा हो तो पीने से पूर्व किसी भी विधि द्वारा पानी को शुद्ध करना चाहिए। रोगाणुओं एवं जीवाणुओं से रहित ऐसा पानी ही प्रायः पीने योग्य होता है। शुद्ध पानी में भी जलवायु एवं वातावरण के अनुसार निश्चित समय पश्चात् जीवों की उत्पत्ति की पुनः सम्भावना रहती है। अतः उपयोग लेते

समय इस तथ्य की छानबीन कर लेनी चाहिए एवं आशंका होने पर पीने से पूर्व पुनः छानकर ही पीना चाहिए। इसी कारण हमारे यहाँ प्रतिदिन पीने के पानी को छानने का प्रचलन रहा। परन्तु पश्चिम के अन्धानुकरण एवं भ्रामक विज्ञापनों से प्रभावित होने के कारण आज हम हमारी मौलिक स्वास्थ्यवर्धक जीवनशैली से दूर होते जा रहे हैं। बहुत दिनों से संगृहीत बोतलों और पाउचों में बन्द अनछने पानी को प्रायः पीने से पूर्व नहीं छानते हैं। अतः ऐसा पानी जीवाणुओं से मुक्त नहीं हो सकता। फलतः अहिंसक साधकों के लिए ऐसा पानी पीने हेतु निषेध होता है।

स्वास्थ्य हेतु क्षारीय पानी गुणकारी

पानी की दूसरी महत्वपूर्ण आवश्यकता उसके अम्ल-क्षार के अनुपात की होती है। जिसको pH के आधार पर मापा जा सकता है। पानी का pH जब 7 होता है तो इसमें अम्ल एवं क्षार तत्त्व बराबर मात्रा में होते हैं। pH यदि 7 से कम होता है तो पानी अम्ल की अधिकता वाला और 7 से अधिक pH वाला पानी क्षार गुणों वाला होता है।

स्नायु एवं मज्जा के पोषण हेतु शरीर में अम्ल तत्त्व की बहुत कम मात्रा की आवश्यकता होती है। रक्त में आवश्यकता से अधिक अम्ल होने से रक्त विषाक्त बन अनेक रोगों का कारण बन जाता है। शरीर में अधिकांश विजातीय तत्त्वों के जमाव एवं रोगों में अम्ल तत्त्व की आवश्यकता से अधिक उपलब्धता भी प्रमुख कारण होती है। हमारे शरीर में गुदों का मुख्य कार्य अम्ल की अधिकता को बाहर निकालना एवं शरीर में अम्ल एवं क्षार का सन्तुलन बनाए रखना होता है।

शरीर में क्षार तत्त्व की कमी के कारण शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होने लगती है एवं रक्त में सफेद कोशिकाएँ कम होने लगती हैं। हड्डियाँ कमजोर होने लगती हैं। अम्लपित्त (Acidity), गैस, जोड़ों में दर्द एवं कब्जियत जैसे रोगों की सम्भावना बढ़ने लगती है। जिससे शरीर को सुचारू रूप से सञ्चालित

करने वाला सारा तन्त्र अनियन्त्रित होने लगता है तथा शरीर रोगों का घर बन जाता है। ऐसी स्थिति में प्रकृति शरीर के अन्य तन्तुओं से क्षार तत्त्व खींचकर अपना पोषण करने लगती है। परिणामस्वरूप शरीर के वे अवयव जिनमें से क्षार तत्त्व शोषित कर लिए जाते हैं, निःसत्त्व, निर्बल एवं रोगी हो जाते हैं।

डॉ. शेरी रोजर्स (Dr. Sherry Rogers), डॉ. इंगफ्रेड हॉबर्ड (Dr. Ingfried Hoberd), टोकियो जापान की पानी संस्था के निदेशक डॉ. हिडेमिचु हयासी (Dr. Hidemitsu Hayashi- Director of the Water Institute Tokyo-Japan), डॉ. डेविड कारपेन्टर (Dr. David Carpenter), डॉ. मुशीक जोन (Dr. Musick John), डॉ. विलियम केली (Dr. William Kelly), डॉ. नीताबेन गोस्वामी, डॉ. जयेशभाई पटेल, जमशेदपुर के वैज्ञानिक डॉ. जीवराजजी जैन आदि पीने योग्य पानी के शोधकर्ताओं के अनुसार क्षारीय पानी नियमित पीने से समय के पूर्व वृद्धावस्था के लक्षण प्रकट नहीं होते। हड्डियों का घनत्व बढ़ता है तथा अम्लपित्त, गैस, कब्ज, जोड़ों का दर्द जैसे रोगों की सम्भावनाएँ अपेक्षाकृत कम रहती है। हमारे आहार में 20 प्रतिशत अम्लीय एवं 80 प्रतिशत क्षारीय पदार्थ होने चाहिए। परन्तु आजकल अधिकांश व्यक्तियों के भोजन में अम्ल तत्त्व बहुत ज्यादा और क्षार तत्त्वों की बहुत कमी होती है। वर्तमान में चटपटा, फास्टफूड, आम्लिक जैसा आहार अधिकांश लोगों द्वारा किया जाता है, इस कारण ऐसे रोगों की सम्भावनाएँ बहुत अधिक हो गई है। शरीर में अम्ल की अतिरिक्त मात्रा को दूर करने के लिए नियमित क्षारीय पानी पीना सबसे सहज, सरल, सस्ता, दुष्प्रभावों से रहित, अहिंसक, स्वावलम्बी प्रभावशाली विकल्प है।

मिनरल पानी का अन्धानुकरण कितना आवश्यक ?

आज सरकार द्वारा आवश्यक पीने योग्य शुद्ध पानी की उपलब्धता न करवा पाने के कारण कुछ

प्रक्रियाओं द्वारा शुद्ध किया हुआ पानी गत कुछ वर्षों से बाजार में महँगे मिनरल पानी के नाम से वितरित हो रहा है। आज देश में ऐसे पानी का अरबों रुपयों का व्यापार हो रहा है जिसमें प्रतिवर्ष 40 से 50 प्रतिशत की वृद्धि हो रही है।

शरीर की रोग प्रतिकारात्मक क्षमता क्यों क्षीण होती है?

आज मानव की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी न होने के कारण आधुनिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ मिनरल पानी पीने हेतु विशेष प्रेरणा देते हैं। अतः हमें इस तथ्य पर चिन्तन करना होगा कि हमारी रोग निरोधक क्षमता क्यों क्षीण होती है और उससे कैसे स्वयं को सुरक्षित रखा जा सकता है? बाल्यकाल में लगाये जाने वाले रोग निरोधक इन्जेक्शनों, गर्भावस्था एवं उसके बाद में ली जाने वाली आधुनिक दवाइयों से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता क्षीण होने लगती है। भारत में लगभग दो प्रतिशत जनता ही बोतल बन्द पानी का सेवन करती है। यद्यपि इन दो प्रतिशत लोगों की भी रोग प्रतिरोधक क्षमता इतनी कमजोर नहीं होती, परन्तु मिनरल जल के भ्रामक, लुभावने विज्ञापनों के कारण वे आकर्षित हो जाते हैं और आत्मविश्वास की कमी, स्वयं की क्षमता के प्रति नासमझी के कारण वे मिनरल पानी का सेवन करते हैं।

बोतल बन्द पानी का सेवन करने वाले भी अधिकांश व्यक्ति कुल्ला करने के लिए तो प्रायः नल के पानी का ही उपयोग करते हैं, परन्तु इससे इनको किसी प्रकार का प्रायः संक्रमण नहीं होता, जबकि घूँट भर दूषित पानी में ही इतने विषाणु होते हैं कि वे हमें अपनी चपेट में ले सकते हैं।

क्षारीय पानी हेतु देशी गाय के गोबर की राख मिश्रित पानी अच्छा विकल्प

गाय का गोबर रोगाणु एवं विषाणु नाशक होता है। गोबर के रस का सेवन करने से रक्त की शुद्धि होती है एवं त्वचा सम्बन्धी रोगों में शीघ्र लाभ होता है। गाय के ताजे गोबर की गन्ध से मलेरिया एवं तपेदिक के रोगाणु नहीं

पनप सकते। इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. जी.ई.ब्रिगेड के अनुसार मलेरिया एवं तपेदिक के रोगाणु प्रारम्भिक अवस्था में तो गोबर की गन्ध से ही भाग जाते हैं। हैजा और अतिसार का रोग होने पर जिस पानी में हैजे के रोगाणु हो जाते हैं, उस पानी में गोबर डालने से उनका आतंक समाप्त हो जाता है। अतः बहुत से चिकित्सक तपेदिक के रोगियों को गायों के बाड़ों में विश्राम करने का परामर्श देते हैं, क्योंकि गोबर एवं गोमूत्र की गन्ध में ऐसे वायरस नहीं रह सकते।

गोबर के राख की विशेषताएँ

आयुर्वेद में विभिन्न धातुओं एवं पदार्थों की भस्म से असाध्य रोगों का उपचार हमारे देश में हजारों वर्षों से हो रहा है। गाय के गोबर को जलाने से उत्पन्न राख में गोबर के गुणों के अलावा अन्य गुण भी होते हैं। राख की रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है। अतः चोट लगने एवं रक्त आने की स्थिति में वहाँ पर राख लगाने से दर्द में आराम होने लगता है एवं घाव शीघ्र ठीक हो जाता है। नागा बाबा आज भी अपने शरीर पर राख लगाते हैं, जिससे मच्छर एवं अन्य वायरस से उनकी सुरक्षा होती है। जैन साधु अपने बालों का लुञ्चन करते समय राख का उपयोग करते हैं, जिससे बाल खींचते समय घाव न हों।

अनाज में राख मिलाकर रखने से उसे दीर्घ काल तक संगृहीत एवं सुरक्षित रखा जा सकता है। घर में चींटियाँ, मकोड़ों या अन्य जीवों का उपद्रव होने पर, उस स्थान पर राख डालने से वे वहाँ से तुरन्त दूर होने लगते हैं। चर्म रोग, दाद, खुजली, फोड़े-फुन्सियों आदि पर राख लगाने से तुरन्त आराम होने लगता है। घुटनों एवं अन्य जोड़ों के दर्द तथा अस्थिमा में फेंफड़ों पर राख का मसाज करने से तुरन्त राहत मिलने लगती है। मधुमक्खी अथवा ज़हरीले जीव के काटने पर वहाँ राख लगाने से विष का प्रभाव क्षीण होने लगता है एवं दर्द ठीक हो जाता है। राख के दन्तमञ्जन की गणना सर्वश्रेष्ठ दन्तमञ्जन में होती है। पानी में राख मिलाने से उसमें

क्षारीय गुण आ जाते हैं तथा पानी में 8-10 घण्टों तक पुनः जीवोत्पत्ति की संभावना नहीं रहती।

पानी के विविध नमूने के आभामण्डल से लिए गए चित्रों द्वारा इस बात की पुष्टि हुई है कि ऐसे पानी के स्वास्थ्यवर्धक गुण एवं ऊर्जा अन्य सभी प्रकार के उपलब्ध प्रचलित पानी से अधिक होती है। रासायनिक प्रयोगशालाओं में परीक्षणों से गोबर राख मिश्रित पानी का pH प्रायः 8 से अधिक पाया गया है। ऐसा पानी पीने से विचारों में भी अपेक्षाकृत अधिक सात्विकता रहती है।

गाय के गोबर की राख मिश्रित क्षारीय पानी कैसे तैयार करें ?

उपयोग में आने योग्य पानी को आवश्यकतानुसार छानकर उसमें गाय के गोबर को जलाने से बनी राख इतनी मात्रा में ही मिलाएँ ताकि पानी में घुलने के पश्चात् राख पानी के बर्तन में नीचे जमने लगे। इस पानी को निथार कर उपयोग हेतु अन्य बर्तन में संगृहीत कर लें। यह राख के गुणों वाला पानी स्वास्थ्य के लिए उपयोगी, शक्तिवर्धक एवं रोगनाशक बन जाता है।

-फ्लेट नं. 301, रिद्धी टॉवर, रतन नगर, एम्स रोड, जोधपुर-342008 (राज.)

स्वयं से वार्तालाप

श्री जितेन्द्र चोरड़िया 'प्रेक्षक'
(तर्ज :: ओ देश मेरे.....)

ओ जीव मेरे! क्या तुझे पता है,
मानव भव ये, क्यों तुझे मिला है?
खुद का परिशोधन, है लक्ष्य तुम्हारा,
जीवन परिवर्तन, सद्गुण अपनाना।
हो सतत जागृति ऐसी, उन महापुरुषों के जैसी,
जिनके समभाव की, गाथा यूँ कही।
प्राणान्तक परीषह आये, चाहे प्राण भी गए गँवाए,
जिनको न विभाव की, रेखा छू सकी॥ध्रुव॥

ओ जीव मेरे! कर स्व परिवर्तन,
निज कमियों का, करके परिमार्जन।
संसार-भ्रमण का, कोई अन्त नहीं है,
दुर्लभ भव-प्राप्ति, ये अत्यन्त कही है॥

खुद को है नित्य समझाना, इसे व्यर्थ नहीं गँवाना,
निज के असली शत्रु का, ज्ञान हो।

इन राग और द्वेष-कषायों,
मिथ्यात्व-मोह ज्वालाओं का,
अन्तर में सुलगना शान्त हो॥1॥

जिनशासन तुझे मिला है....
लोक में उत्तम हो.... इसकी.... आराधना में,
तू हो जा समर्पण॥

ये तुझे परिमार्जित कर देगा,
तेरा शुद्ध रूप प्रकटेगा,
ऐसे कर्मों का होगा तेरे अन्त।

लोकाग्र विराजित होकर,
और सिद्ध अवस्था पाकर,
फिर तू कहलाएगा भगवन्त॥2॥

-सी 16/1, कृष्णकुञ्ज, हल्दे रोड, भीलवाड़ा

सूचना

जिनवाणी के सहृदय पाठकों से निवेदन है कि जिनवाणी पत्रिका के जो आजीवन सदस्य दिवङ्गत हो गए हैं अथवा जिनकी सदस्यता को 20 वर्ष हो गए हैं, उनकी सदस्यता नियमानुसार समाप्त हो जाती है। अतः परिवारजनों से सादर निवेदन है कि वे इसकी सूचना फोन नं. 0141-2705088 पर देते हुए नवीन सदस्यता ग्रहण करने की कृपा करें। बैंक विवरण जिनवाणी के पृष्ठ 5 पर प्रकाशित है।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द्र जैन

राजस्थान में जैन सांस्कृतिक वैभव-प्रो. प्रेम सुमन जैन। प्रकाशक-प्राकृत भारती अकादमी, 13-ए, गुरुनानक पथ, मालवीय नगर, जयपुर-302017, दूरभाष 0141-2520230, संस्करण-प्रथम, 2022, पृष्ठ-368 + 16 = कुल 384, मूल्य-750/- रुपये। Email : prabharati@gmail.com, ISBN. No. : 978-93-92317-39-2

प्रस्तुत पुस्तक में राजस्थान की जैन संस्कृति एवं साहित्य का प्रामाणिक इतिहास प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक को लेखक ने नौ अध्यायों में विभक्त कर विभिन्न विषयों की सामग्री को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया है। प्रथम अध्याय में जैनधर्म एवं दर्शन का स्वरूप बतलाते हुए राजस्थान की पृष्ठभूमि का उल्लेख किया है। द्वितीय अध्याय में विभिन्न राजवंशों का वर्णन करते हुए उनके जैनधर्म के विकास में योगदान का विस्तृत वर्णन किया है। तृतीय अध्याय में प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा की धरोहर के रूप में कवियों और उनकी प्रमुख रचनाओं का वर्णन है। चतुर्थ अध्याय में संस्कृत के जैन साहित्यकार, उनकी रचनाएँ, अप्रकाशित पाण्डुलिपियों एवं प्रमुख लोकोपकारी संस्थाओं का परिचय दिया गया है। पञ्चम अध्याय में राजस्थानी भाषा के प्रसिद्ध जैन कवियों एवं सन्त-कवियों का विस्तार से निरूपण किया गया है। षष्ठ अध्याय में इतिहास, पुरातत्त्व और ग्रन्थ-भण्डारों का विस्तृत उल्लेख किया गया है। इसमें घट्याल आदि प्रमुख शिलालेखों एवं अभिलेखों का भी सुन्दर वर्णन किया गया है। सप्तम अध्याय में जैन कला, वैभव और समृद्ध समाज का वर्णन किया गया है। इस अध्याय में चित्रित जैनग्रन्थ, जैन मन्दिर एवं मूर्तिकला और लोक संस्कृति के साथ-साथ प्रमुख जैनश्रेष्ठी, उद्योगपति, राजा-महाराजा, मन्त्री, प्रशासनिक

अधिकारी तथा स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानी आदि का विस्तार से रोचक वर्णन किया गया है। शिक्षा, स्वास्थ्य और अकाल के समय तथा अन्य क्षेत्रों में सामाजिक योगदान का वर्णन भी किया गया है।

अष्टम अध्याय के अन्तर्गत आधुनिक युग के जैन आचार्यों का परिचय दिया गया है। इसमें श्वेताम्बर, दिगम्बर, तेरापंथ आदि सभी जैन सम्प्रदायों के प्रमुख आचार्यों एवं साधु-साध्वियों के परिचय के साथ उनके साहित्यिक एवं सामाजिक योगदान का भी विशेष उल्लेख किया गया है।

अन्तिम नवम अध्याय जैन व्यक्तित्व एवं साहित्यकार के अन्तर्गत विभिन्न क्षेत्रों के प्रमुख जैन प्रभावी व्यक्ति, साहित्यकार, देशभक्त स्वतन्त्रता सेनानी, प्रमुख जैन पत्र एवं पत्रकार और आयुर्वेद के जैन ग्रन्थकारों का परिचय प्रस्तुत किया गया है। साथ ही वर्तमान में सक्रिय कतिपय वरिष्ठ जैन व्यक्तियों का भी परिचय दिया गया है। अन्त में सहायक प्रमुख ग्रन्थों की सूची दी गई है।

यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए उपयोगी और पठनीय है। पुस्तक के अध्ययन से संक्षिप्त एवं सार-गर्भित प्रामाणिक जानकारी राजस्थान के सांस्कृतिक वैभव के बारे में प्राप्त हो जाती है।

बन्दीसूत्र का भावानुवाद- सम्पादिका - बा.ब्र. पूज्य जितपूर्णाजी महासती। सह सम्पादिका - बा.ब्र. डॉ. पूज्य विस्तीर्णाजी महासती। प्रकाशक-ज्ञान प्रकाश समिति मेवाड़ संघ, मुम्बई, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (मेवाड़) मुम्बई। पृष्ठ-219, प्राप्ति-स्थल-मेवाड़ भवन, सेलो कम्पाउण्ड, सोनावाला रोड़, गोरेगाँव (ईस्ट), मुम्बई-400063 (महाराष्ट्र), फोन 022-26850334

प्रस्तुत मूल सूत्र की रचना श्री देववाचकजी ने की है। इसका भावानुवाद शासन रत्ना महासाध्वी श्री चिन्तामणिजी म.सा. की शिष्या साध्वी श्री जितपूर्णाजी

म.सा. एवं साध्वी श्री विस्तीर्णाजी म.सा. ने किया है। प्रस्तुत सूत्र के प्रारम्भ में मंगलाचरण में तीर्थङ्करों की स्तुति, संघ की स्तुति तथा गणधरों एवं आचार्य परम्परा का उल्लेख किया गया है। तत्पश्चात् पाँच प्रकार के ज्ञान का विस्तार से विवेचन किया गया है। श्रोता एवं परिषदा के लक्षण एवं प्रकार का वर्णन है। परोक्ष ज्ञान में आभिनिबोधिक (मतिज्ञान) का विस्तृत वर्णन है। साथ ही चार प्रकार की बुद्धियों के भी रोचक दृष्टान्त/ उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं। श्रुतज्ञान में बारह अङ्ग सूत्रों का विस्तृत परिचय दिया गया है। अन्त में शास्त्र-श्रवण की विधि और श्रुतज्ञान देने की विधि बतलाई गई है।

प्रस्तुत नन्दीसूत्र ज्ञान का विस्तृत स्वरूप प्रस्तुत करता है, जिसका अनेक साधु-साध्वी प्रतिदिन पाठ करते हैं। नन्दी का अर्थ ही हर्ष या प्रमोद अथवा आनन्द

प्रदान करने वाला है। प्रस्तुत भावानुवाद बालावबोध के रूप में है, जो सहज में ही सरलता से सभी के समझ में आ जाता है। पुस्तक में गणधरों का संक्षिप्त परिचय भी चार्ट के माध्यम से दिया गया है। साथ ही युगप्रधान 32 आचार्यों की पट्टावली भी दी गई है। सिद्धों का स्वरूप 8 द्वारों के माध्यम से स्पष्ट एवं सुन्दर तरीके से समझाने का प्रयास किया गया है। अन्त में बारह अङ्गसूत्रों का संक्षिप्त विवरण चार्ट के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत भावानुवाद सभी जिज्ञासु साधकों, पाठकों एवं विद्वज्जनों के लिए ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी सिद्ध होगा।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणा', विश्वकर्मा नगर-
द्वितीय, महाराजगी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

हार्दिक क्षमायाचना

मैं सज्जनराज सांखला 88वें वर्ष में प्रवेश कर चुका हूँ तथा मेरी धर्मपत्नी श्रीमती बिदामकँवर सांखला भी 86 वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। जीवन क्षणभंगुर है, जीवन के अन्त समय का पता ही नहीं, हमारी जीवन लीला कब समाप्त हो जाये, इसलिये सबसे क्षमायाचना करते हुए निवेदन है-

1. हमारे द्वारा किये गये नियम, व्रत, पचक्खाण आदि की अक्षरशः पालना नहीं हुई हो, भली प्रकार से नहीं पाला हो तो उनकी हम दोनों अन्तर हृदय से आलोचना करते हैं, निन्दा करते हैं, गर्हा करते हैं, क्षमा चाहते हैं। जीवन में लगे सभी पाप दोषों के लिए हम बारम्बार क्षमा चाहते हैं। तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।
2. हमारे द्वारा जाने-अनजाने में हुई भूलों, त्रुटियों, गलतियों के लिए जिनसे जिस किसी प्राण, भूत, जीव, सत्त्व तथा गुरुजनों, माता-पिता और परिवारजनों, मित्रों, कौटुम्बिकजनों आदि को कष्ट हुआ हो, शोक, पीड़ा, दुःख हुआ हो तो उन सबके लिए सबसे हाथ जोड़कर विनम्र भावों से चौरासी लाख जीव योनियों के सभी जीवों से बारम्बार क्षमा चाहते हैं। सब हमें क्षमा प्रदान करें। हम भी उन सबको क्षमा प्रदान करते हैं। जिन्होंने हमें कष्ट, पीड़ा, दुःख पहुँचाया हो।

इस भव के शेष जीवन में हमारा सबके साथ मैत्री भाव बना रहे, किसी के साथ वैर विरोध न हो, इसके लिए सब सहयोगी बनें। अनजाने में कोई भूल हो जाए उसके लिये चौरासी लाख जीव योनियों से अग्रिम क्षमायाचना चाहते हैं। आज यह कार्य करके हम दोनों आत्म आनन्द की अनुभूति कर रहे हैं।

क्षमाप्रार्थी

सज्जनराज एवं बिदामकँवर सांखला

31 अक्टूबर, 2022

नं. एफ-102, मेरी गोल्ड, ईटा स्टार गॉर्डन, बिन्नी स्टोन, मगड़ी रोड़, बेंगलूरु-560023 (कर्नाटक)

समाचार विविधा

पूज्य आचार्य भगवन्त एवं भावी आचार्यश्री सहित जोधपुर में पाँच चातुर्मासों में निरन्तर धर्ममय वातावरण

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, जिनशासन गौरव, आचार्य भगवन्त श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-10 श्री ओसवाल जैन स्कूल महामन्दिर में, विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 शक्ति नगर स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में तथा व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-4 सामायिक-स्वाध्याय भवन महामन्दिर में चातुर्मासार्थ सुखे-समाधौ जोधपुर में विराजित हैं।

जोधपुर में अपूर्व धर्मोल्लास-पूज्य आचार्य भगवन्त जब से जोधपुर पधारे हैं, यहाँ के हर क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं में धर्माराधना के प्रति उत्साह झलक रहा है। भावी आचार्यश्री तथा साधु-साध्वीवर्ग की प्रेरणा से धर्म-ध्यान, त्याग-तपस्या का ठाट लगा हुआ है। पूज्य आचार्य भगवन्त के 60वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. तथा महासती श्री लीलावतीजी म.सा. के उपवास से सिद्धितप चल रहा है जो सभी श्रावक-श्राविकाओं के लिए स्वयं एक प्रेरणा है। इसी के साथ श्राविकारत्न श्रीमती विमलाजी चौपड़ा ने वृद्धावस्था में उपवास से सिद्धितप पूर्ण करके एक आदर्श प्रस्तुत किया है तथा श्रावकरत्न श्री दिलीपजी मेहता भी उपवास से सिद्धितप कर रहे हैं। 100 के आसपास श्रावक-श्राविकाएँ भी एकाशन से सिद्धितप करके पूज्य गुरुदेव के चरणों में तपरूपी अर्घ्य चढ़ाकर गुरुभक्ति कर रहे हैं। पूज्य आचार्य भगवन्त के दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में जोधपुर नगर में बले का आह्वान किया गया।

सुश्री चारुजी सुपुत्री श्री गजराजजी छाजेड़ ने मात्र 22 वर्ष की आयु में 29 अक्टूबर को धर्मसभा में 29 का प्रत्याख्यान ग्रहण करके सभी को विस्मित कर दिया। आपने अपनी तपस्या पूर्ण गुप्त रखी-इसी दिन सभी को पता लगा। इसी के साथ सुश्राविका श्रीमती कविताजी धर्मपत्नी श्री महेन्द्रजी नाहर के मासक्षण चल रहा है, ये दोनों मासक्षण आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव के दीक्षा दिवस के दिन पूर्ण होने सम्भावित हैं। सभी लोग यथारुचि, शक्ति के अनुसार धर्माराधना में अपना पुरुषार्थ बढ़ा रहे हैं।

राजस्थान के मुख्यमन्त्री तथा अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय के जस्टिस का दर्शनार्थ आगमन-5 अक्टूबर को माननीय मुख्यमन्त्री श्री अशोकजी गहलोत ने अपनी जन्मभूमि में चातुर्मास कर रहे आचार्य पूज्य गुरुदेव के दर्शन किये तथा भावी आचार्यश्री से वार्ता भी हुई। संयोग यह रहा कि मुख्यमन्त्रीजी भी महामन्दिर के हैं और भावी आचार्यश्री की जन्मभूमि भी महामन्दिर है, दोनों साथ पढ़े और अपने-अपने क्षेत्र के सिरताज बने हैं।

17 अक्टूबर को अन्तरराष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश माननीय श्री दलवीरचन्द्रजी भण्डारी सपरिवार हेग से गुरुदर्शन हेतु उपस्थित हुए। आप संघ में संरक्षक मण्डल के सदस्य भी हैं। पूज्य आचार्यप्रवर ने इन्हें प्रेरणा करते हुए फरमाया कि आपने इस पद पर पहुँचकर समूचे भारत का गौरव बढ़ाया है, इस पद पर रहते हुए कुछ ऐसा भी करें कि जिससे जिनशासन का गौरव भी बढ़े। साथ ही पूज्य गुरुदेव ने उन्हें भगवान महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त के सिद्धान्तों पर चलकर विश्वहित करने की बात फरमायी। पूज्य भावी आचार्यश्री ने उनको तथा उनके परिवारजनों को व्यक्तिगत साधना करने की प्रभावी प्रेरणा की। 30 सितम्बर को संघ संरक्षक श्री ईश्वरलालजी

ललवाणी, जलगाँव ने सपरिवार गुरुदर्शन किये। श्री रितेशजी सुपुत्र श्री सरदारसिंहजी बोथरा, जयपुर ने सपत्नीक 42 वर्ष की युवावय में शीलव्रत धारण कर त्याग मार्ग में आगे बढ़े।

9 अक्टूबर को शरद पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्राविका मण्डल जोधपुर द्वारा जोधपुर में विराजित महासती-मण्डल के सान्निध्य में रात्रि में पाँच-पाँच सामायिक का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सैकड़ों श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हर पूर्णिमा गुरु दर्शन कार्यक्रम अनवरत गतिमान है जिसके अन्तर्गत अनेकों श्राविकाओं ने गुरुदेव के सामूहिक दर्शन-वन्दन का लाभ लिया। चातुर्मास के दौरान लघुदण्डक, जैनधर्म का मौलिक इतिहास आदि विषयों पर श्राविका मण्डल द्वारा परीक्षा का आयोजन किया जाता रहा है। 14 अक्टूबर को जैनधर्म का मौलिक इतिहास परीक्षा का परिणाम घोषित किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया।

संघ अधिवेशन पर संघ सदस्यों को संयमियों की प्रेरणाएँ-15-16 अक्टूबर को आयोजित संघ अधिवेशन में प्रवचन के दौरान श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया-दूसरे गुणी को देखकर ईर्ष्या नहीं, बल्कि खुशी से हृदय की कली-कली खिलनी चाहिए। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने कहा कि-युवा समाज कंकर नहीं, काजल (नेत्राञ्जन) बनकर सुख देने वाला बने। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती म.सा. ने युवाशक्ति से संघ उन्नति की बात पर जोर दिया। भावी आचार्यश्री ने लोगों को संघसेवा में सक्रिय करने हेतु फरमाया कि बिना भाग्य के संघ की सेवा का अवसर भी नहीं मिल सकता। संघसेवा करने को मिले तो अपना सौभाग्य समझना चाहिये। युवाओं को सन्देश देते हुए फरमाया-युवा भूतकाल यानी अपने बुजुर्ग माता-पिता को अपना समय दे, वर्तमान यानी स्वयं की साधना हेतु स्वयं को समय दे, इसी के साथ भविष्य यानी बच्चों को भी समय दें। बच्चों को संस्कार केन्द्र से जोड़े, सन्त-सतियों से जोड़े।

भगवान महावीर परिनिर्वाण महोत्सव-इस उपलक्ष्य में परम्परानुसार तीन दिन में पूरे उत्तराध्ययनसूत्र का श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने धाराप्रवाह गति से कुशल वाचन किया और अध्ययनों का सार संक्षेप में फरमाया। दीपावली के दिन भावी आचार्यश्री ने फरमाया-“आज का दिन भगवान महावीर की तरह सहनशील और गौतम स्वामी की तरह विनयशील बनने का है, इन दो गुणों में जीवन की सभी समस्याओं का समाधान सम्भव है।” इन त्रिदिवसीय पावन प्रसङ्ग पर अनेकों साधकों ने तेले का तप भी किया। श्री दौलतजी चोरड़िया ने वृद्धावस्था में 24 प्रहरीय पौषध की साधना की।

प्रतिदिन व्याख्यान श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. तथा श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. फरमा रहे हैं। समय-समय पर यथाप्रसङ्ग भावी आचार्यश्री अपनी सरसवाणी में प्रवचन सभा को लाभान्वित कर रहे हैं। आचार्य भगवन्त से प्रतिदिन प्रवचनोपरान्त ऊपर से ही मंगलपाठ का पीयूष पानकर सभी धन्यता की अनुभूति कर रहे हैं।

27 अक्टूबर को श्रमण संघीय श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. का दर्शनार्थ एवं साता पृच्छार्थ पदार्पण हुआ। भावी आचार्यश्री से अनेक विषयों पर वार्ता हुई। ज्ञानगच्छीय श्रद्धेय श्री पारसमुनिजी म.सा. का भी आगमन हुआ।

गुरुदर्शनार्थ एवं विनतियों हेतु श्रद्धालुओं, श्रीसंघों का आवागमन अभी भी पूर्ववत् बना हुआ है। पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवन्त के स्वास्थ्य में अवस्थाजन्य उतार-चढ़ाव रहता है। स्थानीय संघ के सभी कार्यकर्ता सभी व्यवस्थाओं को सक्रिय रखने में पूर्ण कटिबद्ध हैं।

-गिराज जैन

नेहरू पार्क-श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 सामायिक-स्वाध्याय भवन नेहरू पार्क में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. की प्रभावी प्रेरणा से प्रतिदिन एक परिवार के सभी

सदस्य उपस्थित होकर दर्शन-वन्दन का लाभ ले रहे हैं। सभी को सामूहिक पारिवारिक प्रार्थना करने एवं बच्चों को संस्कार केन्द्र से जुड़ने की सुन्दर प्रेरणा कर रहे हैं।

चौपासनी हाउसिंगबोर्ड-व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 9 सामायिक-स्वाध्याय भवन, हाउसिंगबोर्ड में सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। महासतियाँजी म.सा. के सान्निध्य में प्रातः 8.00 से 9.00 बजे तक 'एक कदम धर्म की ओर' कक्षा निरन्तर चल रही है, जिसमें महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के उद्बोधन सभी युवक-युवतियाँ उत्साह से श्रवण कर रहे हैं। आचार्य भगवन्त के जोधपुर चातुर्मास में प्रत्येक माह महासतियाँ द्वारा मासखमण तपस्या की श्रद्धा-भक्ति भेट की जा रही है। महासती श्री मान्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री प्रणतिश्रीजी म.सा. एवं महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा. के मासखमण की तपस्या पूर्ण कर चुके हैं। 17 अक्टूबर को सामायिक-स्वाध्यायभवन हाउसिंगबोर्ड में महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा. के मासखमण तपस्या के पूरे के उपलक्ष्य में अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने एकाशन तप एवं तीन-तीन सामायिक की आराधना की। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. भी तपस्या में आगे बढ़ रहे हैं।

-नवस्तन गिड़िया, मन्त्री

सन्तप्रवरों के चातुर्मासों में धर्मसाधना एवं तपस्या का आकर्षण

मदनगंज-किशनगढ़-मधुर व्याख्यात्री श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास तप-त्याग के साथ निरन्तर गतिशील है। अनेक गतिविधियों के साथ एवं अनेक उपलब्धियों के साथ यह चातुर्मास जनमानस में यादगार बन कर उभर रहा है, सन्तों की अपनी प्रेरणा एवं स्थानीय लोगों की श्रद्धा-आस्था का परिणाम ऐसा निकला कि चातुर्मास में जिस किसी भी धार्मिक प्रवृत्ति का आह्वान किया जाता उसे लोगों ने सवाया करके बताया। अक्सर देखा जाता है कि पर्युषण के बाद प्रवचन आदि धार्मिक गतिविधियों में शिथिलता आ जाती है, पर यह चातुर्मास इस बात के लिए अपवाद के रूप में याद किया जायेगा, क्योंकि हर धार्मिक गतिविधि में यहाँ की उपस्थिति बेजोड़ देखने को मिली। जहाँ स्थानीय लोगों का उत्साह सावन-भादवा माह जैसा था, वहीं दूसरी ओर दर्शनार्थियों का सिलसिला लगातार होने से चातुर्मास किसी तीर्थस्थल से कम नहीं लगता। कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि दर्शनार्थियों का प्रवचन में जमघट न हो और दिनभर रेलमपेल न हो। अधिकांश दर्शनार्थी, चाहे प्रवचन हो या वाचनी का समय सामायिक लेकर ही बैठते और कोई न कोई नया व्रत-प्रत्याख्यान लेकर ही जाते। देखते ही देखते चातुर्मास उत्तरार्द्ध की ओर बढ़ रहा है और नवपद आराधना का समय सामने होने से स्थानीय भाई-बहिनों में आयम्बिल आराधना को लेकर विशेष उत्साह इस बार देखने को मिला। विशेषकर बहिने इस तपाराधना में विशेष भाग ले रही थीं। श्रद्धेय मुनिराज ने आयम्बिल तप के प्रभाव का वर्णन आगमिक आधार से करते हुए द्रौपदी के जीवन की चर्चा बताई एवं इतिहास की घटनाओं का उल्लेख करते हुए द्वारिका का इतिहास सुनाया तो सभी लोग रोमाञ्चित और प्रभावित हुए। कई सारे भाई-बहिनों ने फुटकर आयम्बिल भी किये। ज्यों ही श्रद्धेय गुरुवर ने फरमाया कि जप से सिद्धि मिलती है, तप से भी सिद्धि मिलती है तो श्रावकगण तपाराधना में लग गये।

भगवान महावीर का निर्वाण कल्याणक नजदीक होने से सन्तों ने "भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक पखवाड़े" का आह्वान किया और 15 दिवसीय धार्मिक गतिविधियों की रूपरेखा रखी, सारे कार्यक्रम 8.30 बजे से प्रारम्भ करने को कहा, जिसमें प्रथम सप्ताह 8.30 से 9.00 बजे तक प्रथम दिन जाप, द्वितीय दिवस भक्ति-भजन, तृतीय दिवस भगवान महावीर के जीवन पर प्रश्नोत्तर, इस तरह से सात ही दिन विविध कार्यक्रम रहे। अगले सप्ताह उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन प्रारम्भ कर दिया, ये सारे कार्यक्रम 24 अक्टूबर तक चले। भगवान महावीर का निर्वाण

पखवाड़ा होने से स्थानीय लोगों की उपस्थिति इस चातुर्मास में एक उदाहरण के रूप में यादगार बनी। 25 अक्टूबर को उत्तराध्ययनसूत्र की पूर्णाहूति का समय प्रातः 7.00 बजे रखा, जिसे सुनने के लिए लोगों का जो सैलाब देखा, ऐसा आभास हो रहा था कि जिनशासन के प्रति लोगों की अपार श्रद्धा-भक्ति है। श्रद्धेय मुनिराज ने उपस्थित लोगों को स्वरचित नया भजन सुनाते हुए फरमाया - “चन्द दिनों का रहा चौमासा, अब भी मौका है जागो।” ज्ञान पञ्चमी पर नन्दीसूत्र के वाचन के साथ श्रुतपञ्चमी का इतिहास और श्रुतपञ्चमी की महत्ता, इसकी विशद चर्चा की, साथ ही उपस्थित लोगों से भी 4 आगम का स्वाध्याय करवाया। इसके अतिरिक्त कार्तिक शुक्ला षष्ठी को संघनायक आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. का दीक्षा दिवस होने से एकाशन व्रत एवं 5-5 सामायिक करने का आह्वान किया। सभी का उत्साह अवर्णनीय है।

-प्रमोद मोदी

प्रताप नगर, जयपुर-सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में श्री जैन रत्न स्वाध्याय भवन प्रतापनगर में ज्ञान, दर्शन, चरित्र एवं तप की आराधना सतत गतिमान है। **चातुर्मासिक मिशन :** क्लियर हो विज्ञान को आगे बढ़ाते हुए श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने अक्टूबर माह के प्रारम्भ से ही प्रवचनों की शृङ्खला में नवपद ओली पर्व के नौ दिवस, अष्ट प्रवचन माता के आठ दिवस, उत्तराध्ययनसूत्र सप्ताह में मूल स्वाध्याय, विवेचन एवं प्रवचन, उत्तराध्ययन मूल पारायण (1 से 36 अध्ययन एक साथ), गुरु कुशलचन्द्र, गुरु रत्नचन्द्र, गुरु गजेन्द्र, गुरु हीरा, गुरु महेन्द्र पर दिवसवार नियमित प्रवचन किये। श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. ने नेमिकुमार चरित्र का नियमित वाचन एवं प्रवचन किया। प्रतिदिन प्रातःकालीन प्रार्थना भी सेवाभावी मुनिश्री द्वारा करायी जा रही है।

रविवारीय सामूहिक सामायिक कक्षा में 2 अक्टूबर को ‘वंदे जिनशासनम्’ विषय पर श्री धर्मेन्द्रकुमारजी जैन वरिष्ठ शिक्षक, आध्यात्मिक शिक्षा समिति द्वारा, 9 अक्टूबर को ‘धर्मावलम्बी बनने का सुगम उपाय : यतना’ विषय पर श्री मनोज कुमारजी जैन व्याख्याता, सेंट जेवियर स्कूल नेवटा एवं सह सम्पादक, जिनवाणी द्वारा, 16 अक्टूबर को ‘समभाव अपनाएँ और तनाव भगाएँ’ विषय पर श्रीमती शिपिकाजी जैन द्वारा, 23 अक्टूबर को ‘जैनधर्म में दिवाली’ विषय पर सुश्री जहानवीजी जैन, कम्प्यूटर साइंस इंजीनियर द्वारा कक्षा में वक्तव्य देकर युवा-युवतियों को प्रेरित किया गया। प्रत्येक रविवारीय कक्षा में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने सभी युवा-युवतियों को संक्षिप्त उद्बोधन देकर प्रेरणाएँ प्रदान की।

अक्टूबर माह में दर्शन के क्षेत्र में जाप के क्रम में मेरी भावना, रत्नाकर पच्चीसी, भक्तामर स्तोत्र, उवसगहर स्तोत्र, घंटाकर्ण स्तोत्र के जाप सम्पन्न हुए। धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर 3-4 अक्टूबर को सम्पन्न हुआ, जिसमें 12 वर्ष से अधिक आयु वाले 70 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। इस शिविर में श्रीमती खुशबूजी कर्णावट ने ‘आधुनिकता से आध्यात्मिकता की ओर’, श्री नमनजी डागा ने ‘जैनज्म एंड साइंस’, श्रीमती सेहलजी जैन ने ‘दस श्रावकों के जीवन परिचय’, श्री प्रकाशजी जैन-प्राचार्य ने ‘जैनधर्म का संविधान : आगम’, श्रीमती अरुणाजी कर्णावट ने ‘क्रोध से स्वयं को कैसे बचाएँ’, श्री निपुणजी डागा द्वारा ‘श्री फण्डामेन्टल ऑफ जैनज्म’, श्री जिनेन्द्रजी जैन द्वारा ‘कर्म-प्रकृति’ तथा श्री धर्मेन्द्रकुमारजी जैन द्वारा ‘नैतिक शिक्षा’ विषय पर बच्चों को ज्ञानार्जन कराया। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म. सा. ने बच्चों को प्रेरक उद्बोधन दिया तथा बच्चों ने अपनी जिज्ञासा के समाधान प्राप्त किये। सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म. सा. ने मंगल पाठ सुनाया।

श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म. सा. की प्रेरणा से एवं संघ की प्रबल भावना से आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म. सा. के 60वें पावन दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में 16 सितम्बर, 2022 से ‘व्यसन मुक्ति संकल्प कार्यक्रम’ प्रारम्भ हुआ,

जिसमें गुरु भगवन्तों के पास आकर सैकड़ों बच्चों, युवा-युवतियों ने निर्व्यसनता के संकल्प लेना शुरू कर दिया। गुरु-भगवन्तों से प्रेरित होकर श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने भी स्कूल एवं कॉलेजों में अब तक 10 कार्यशाला सम्पन्न करवाई, जिनमें प्रशिक्षित उद्बोधनकर्ताओं ने व्यसन के भयावह दुष्परिणामों का बोध कराया तथा निर्व्यसनी सुखी जीवन की प्रेरणा की। अब तक 2400 से अधिक बच्चों ने व्यसन मुक्ति के संकल्प-पत्र भरे।

आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का 60वाँ पावन दीक्षा दिवस रविवार, 30 अक्टूबर 2022 को व्यसनमुक्ति संकल्प एवं सामूहिक एकाशन के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर संघ की प्रेरणा एवं गुरुभक्ति से जयपुर में 750 से अधिक सामूहिक एकाशन किये गये तथा सैकड़ों व्यक्तियों ने व्यसन मुक्ति के संकल्प लिये। सन्त-मण्डल ने आचार्यश्री के समाधि-भाव के कई उदाहरण सुनाए, उनकी संयम-जीवन यात्रा में अविस्मरणीय प्रेरक प्रसङ्गों पर प्रकाश डाला। धर्मसभा में लगभग 750 की उपस्थिति रही। धर्म श्रद्धालु प्रवचन सुनने में ध्यान मग्न रहे। श्रीमती शुभलाजी वीरवाल ने अठाई तप कर श्रद्धाभिव्यक्ति की।

सन्तों के मंगल पाठ के पश्चात् सात वर्ष आयु के बालक शाश्वत हिंगड़ ने सप्त कुव्यसन पर गाथा गान सुनाया। श्री जैन रत्न युवती मण्डल एवं श्राविका मण्डल प्रताप नगर के सत्प्रयत्नों से गुरु हीरा के जन्म, वैराग्य, दीक्षा, संयमी जीवन, भावी आचार्य पद घोषणा के विषय पर बच्चों ने सुन्दर प्रेरक अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत की। सभी के लिए एकाशन तप की सुन्दर व्यवस्था रही।

-ऋषभ कुमार जैन, मन्त्री

महासतीवृन्द के चातुर्मासों में धर्मसाधना

राधा निकुञ्ज-साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें पावन दीक्षा-दिवस पर दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें 29 अक्टूबर को आचार्यप्रवर के जीवन पर आधारित भजन-भक्ति का कार्यक्रम रखा गया। श्रावक-श्राविका एवं बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। तीनों ही श्रेणि में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कार प्रदान किया गया। 30 अक्टूबर को प्रवचन से पूर्व हीरा-चालीसा, हीराष्टक एवं गुरु-गुणगान हुए। लगभग 250 की उपस्थिति रही। 7 तैले, 20 एकाशन तैले के साथ लगभग 125 सामूहिक एकाशन तप की सुन्दर व्यवस्था रही। इसी माह श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन (हाउसिंगबोर्ड, सवाईमाधोपुर) ने मासक्षण की तपस्या की। मासक्षण के उपलक्ष्य में श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन एवं उनकी धर्मसहायिका श्रीमती कुमकुमजी जैन (श्यामपुरा वाले), मण्डी रोड़, सवाईमाधोपुर ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। आगामी 6 नवम्बर को प्रवचन के पश्चात् तपस्वी सम्मान-समारोह प्रस्तावित है। बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर बना हुआ है।

-प्रजन्तलाल जैन, मन्त्री

सरवाङ्ग-व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 का मंगलमय चातुर्मास धर्मध्यान, त्याग तपस्या, जप आदि धार्मिक क्रियाओं के साथ गतिमान है। आसोज माह में आयम्बिल-नीवी की लड़ी नियमित रूप से चली। नवपद आयम्बिल ओली पर्व के दिनों में पुरुषों एवं महिलाओं ने उत्साह-उमंग के साथ भाग लिया। नवपद ओली पर्व के दिनों में कुल 211 आयम्बिल-नीवी तप की आराधना हुई। वर्तमान में अभी भगवान महावीर स्वामी की अन्तिम देशना उत्तराध्ययनसूत्र का वाचन चल रहा है। साथ ही भगवान महावीर स्वामी की स्तुति पुच्छिसु णं के 108 पाठ का वाचन भी चल रहा है। प्रवचन में उपस्थिति सन्तोषजनक है। श्रावक एवं श्राविकाएँ लगभग 70-80 हो जाती हैं।

-वीरेन्द्र कुमार कक्कड़, मन्त्री

नागपुर-व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में ABCD of your Life शिविर का वर्धमान नगर में 7 से 9 अक्टूबर, 2022 तक 15 वर्ष से ऊपर की युवतियों के लिए आयोजन किया गया, जिसमें 90 से अधिक युवतियों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ जलगाँव 61 युवतियों ने, तोण्डापुर, फतेपुर, मनमाड़,

जामनेर, नागपुर, पारशिवनी, वाशिम आदि स्थानों से भाग लिया। सभी शिविरार्थियों ने अनेक प्रकार के नियम ग्रहण किये। जैसे-रात्रिभोजन-त्याग, दान देना, सामायिक करना, जीवनपर्यन्त के लिए जमीकन्द त्याग, चाय का त्याग, बाजार के केक का त्याग, वेज-नॉनवेज मिश्रित होटल में भोजन नहीं करना, बड़ों को उल्टा जवाब नहीं देना, कॉस्मेटिक का त्याग आदि नियम लगभग सभी शिविरार्थियों ने ग्रहण किये। शिविरार्थियों की 8 टीम बनाई गई थी। प्रतिदिन 4 से 5 प्रवचन होता था। दोपहर में धार्मिक प्रतियोगिता होती थी। भोजन में भी लकड़ी के बुरादे से बर्तन माञ्जना सिखाया गया, जिससे पानी के अपव्यय से बचा जा सके। धोवन पानी बनाने की प्रेरणा भी दी गयी। शिविर में महासतीवृन्द के साथ श्रीमती विनीताजी सुराणा-चेन्नई, निवेदिताजी बागमार-बैंगलोर, श्री शुभमजी बोहरा, श्री मनोजजी संचेती एवं सौ. किरणजी बोरा-जलगाँव का पढ़ाने एवं व्यवस्था के कार्यों में विशेष योगदान रहा। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नागपुर एवं रतनलाल सी. बाफना ट्रस्ट, जलगाँव की ओर से शिविर का आयोजन किया गया। श्री मनोजजी बोहरा, श्री महेन्द्रजी मुणोत, श्री महेन्द्रजी कटारिया, श्री नरेन्द्रजी, श्री गौतमजी सिंगी आदि कार्यकर्ताओं का भोजन एवं व्यवस्था के कार्य में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। -मन्वोज संचेती, जलगाँव

गंगावती-व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म. सा. आदि ठाणा-5 सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। तेले की लड़ी निरन्तर रूप से चल रही है। तीन दिन के लिए बच्चों का शिविर रखा गया। नवपद आयम्बिल ओली तप की आराधना के साथ-साथ पन्द्रह दिनों का चन्द्रकला तप भी करवाया गया। दीपावली से पूर्व प्रतिदिन सुबह नवयुवकों की कक्षा में वीरस्तुति (पुच्छिसु णं) एवं प्रवचन में उत्तराध्ययनसूत्र का विवेचन महासती श्री वर्षाश्रीजी म.सा. द्वारा किया गया। दीपावली की चतुर्दशी पर उत्तराध्ययनसूत्र का मूल 1 से 36 अध्ययन का वाचन किया गया। श्री भरतजी सालेचा एवं श्री राजेन्द्रजी चौधरी ने शीलव्रत के नियम लिए। दीपावली पर्व पर दो चोले एवं दो तेले हुए। भगवान महावीर के जीवन पर आधारित बच्चों द्वारा सुन्दर नाट्य प्रस्तुति की गई। बाहर गाँवों से जलगाँव, सूरत, कालाहस्ती, चेन्नई, विल्लीपुरम् एवं अनेक गाँवों से काफी संख्या में दर्शनार्थी बन्धुओं का आवागमन गतिमान है।

-कैलाश कोठारी, अध्यक्ष-नवयुवक मण्डल

ऊटी-व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-4 सुखसातापूर्वक विराज रहे हैं। नवपद ओली के नौ दिन तप, धर्मध्यान एवं श्रीपाल चारित्र के वाचन के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। बड़ी तपस्याएँ, सांकली तेला एवं एकाशन के सिद्धि तप की तपस्या निरन्तर गतिमान है। स्थानीय संघ के सदस्यों और विभिन्न क्षेत्रों से पधार रहे साधर्मिबन्धु महासतीजी म.सा. के दर्शन, वन्दन एवं जिनवाणी श्रवण का लाभ ले रहे हैं। महावीर निर्वाण कल्याणक से पूर्व 108 वीरस्तुति एवं उत्तराध्ययनसूत्र का मूल एवं अर्थ का वाचन चल रहा है।

-हीरालाल बोथरा (अध्यक्ष), जयचन्द कोटडिया (मन्त्री)

कुन्नूर-व्याख्यात्री महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 सुख-सातापूर्वक विराजमान हैं। 13 जुलाई से 20 अक्टूबर तक जो तपाराधना हुई वह इस प्रकार है-उपवास, नीवी, एकाशन, बियासन सैकड़ों हुए, बेला-30, तेला-70, चार-4, पाँच-9, सात-3, अठाई-60, नौ-7, ग्यारह-4, चौदह-1, सोलह-2, सतरह-1, उनतीस-1 तपस्याएँ हुई एवं लगभग 15 हजार सामायिक हुई। उपवास के सिद्धि तप तीन, आयम्बिल की अठाई-1, एकाशन की अठाई-25, नीवी के मासखमण-7, एकाशन के मासखमण-8 एवं 7 लड़ी निरन्तर चल रही है। 7 श्रावक-श्राविकाओं के एकान्तर तप चल रहा है। पर्युषण के आठ दिन एवं नवपद आराधना के नव दिन 12 घण्टे नमस्कार मन्त्र का जाप हुआ। पर्युषण में 8 दिन अलग-अलग विषयों पर प्रतियोगिता, 8 दिन में लगभग 400 संवर-पौषध हुए। 1 पचरंगी एवं 2 धर्मचक्र हुआ। महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा. की प्रेरणा से संस्कृति बहू

मण्डल का गठन हुआ। महासतीजी की प्रेरणा से 24 वर्षीय भाई श्री श्रेयांसजी बोधरा ने उपवास से सिद्धि तप किया, 14 वर्षीय प्रखरजी पीपाड़ा, 15 वर्षीय मानवजी बरड़िया, 17 वर्षीय बहन मोक्षाजी पीपाड़ा और 21 वर्षीय लक्षाजी पीपाड़ा ने अठाई तप किया, इन लघुउग्र के तपस्वियों की हम भूरि-भूरि अनुमोदना करते हैं। तप में अपनी शक्ति लगाने वाले युवारत्न श्री नवरत्नजी बाफना जिनकी उम्र 30 वर्ष, उन्होंने गुरु-चरणों में 36 उपवास की तपस्या की भेंट दी। युवारत्न श्री राजेशजी बाफना ने 38 की तपस्या की। अब तक 6 मासखमण पूर्ण हो चुके हैं। कई बड़ी तपस्याएँ अभी भी चल रही हैं। आचार्य भगवन्त के दीक्षा-दिवस के प्रसङ्ग से एकाशन का सिद्धि तप लगभग 70 भाई-बहिन कर रहे हैं। आचार्य भगवन्त के कृपाप्रसाद से क्षेत्र में धर्म ध्यान का ठाट लग रहा है। पर्वाधिराज पर्युषण में आठ दिन बाहर गाँव से भी धर्म-साधना करने मैसूरु, मट्टै, चेन्नई आदि क्षेत्रों से श्रावक-श्राविका पधारे। कई वर्षों बाद मिले चातुर्मास का लाभ सभी उठा रहे हैं। छोटा-सा संघ कुन्नूर तप-त्याग, साधना-आराधना से कोहिनूर बन गया। महासती मण्डल का पुरुषार्थ बहुत ही अनुमोदनीय है। हमारे संघ का यह एक ऐतिहासिक चातुर्मास है। तप-साधिका महासती श्री आराधनाजी म.सा. ने 31 उपवास की तपस्या की, दीक्षा के सात वर्षों में यह उनका पाँचवाँ मासखमण है।

-रणजीतजी चारेड़िया, मन्त्री

बजरिया-सवाईमाधोपुर-व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-8 सुखसातापूर्वक सामायिक स्वाध्याय भवन, इन्दिरा कॉलोनी, टोंक रोड़ पर विराज रहे हैं। ओजस्वी, प्रभावी, प्रेरणादायी प्रवचनों का श्रावक-श्राविकाओं द्वारा पूर्ण लाभ लिया जा रहा है। प्रातः-दोपहर में ज्ञानार्जन की कक्षाएँ नियमित रूप से चल रही हैं। पाठ लेने और सुनने का क्रम अनवरत गतिशील है। विशेष रूप से दोपहर में विशिष्ट श्रावक-श्राविकाओं की कर्मग्रन्थ की कक्षा चल रही है। अब तक 5 कर्मग्रन्थों का पूर्ण विवेचन हो चुका है। जैन इतिहास की जानकारी सभी को हो, इस भावना से प्रत्येक पक्ष में जैन इतिहास के प्रेरक प्रसङ्ग की पाँच-पाँच पुस्तकों की खुली पुस्तक परीक्षा आयोजित की जा रही है। विशेष स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया गया है। प्रवचन उपरान्त श्रावक-श्राविकाओं से दो-दो प्रश्न पूछे जाते हैं, उत्तरदाताओं को तत्काल पुरस्कृत किया जाता है। 24 सितम्बर को 'श्राविका गौरव दिवस' पर अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 16 सतियों और साध्वी प्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के जीवन सम्बन्धी लिखित परीक्षा आयोजित की गई। प्रति रविवार को प्रातः प्रार्थना बाद विभिन्न विषयों पर श्री जैन रत्न युवक परिषद् नगर परिषद् क्षेत्र की कक्षा आयोजित हो रही है। 21 सितम्बर को श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की नगर परिषद् क्षेत्रीय विशेष कक्षा आयोजित हुई। मंगलवार, बुधवार, गुरुवार की कक्षा भी चल रही है। नन्दीसूत्र कण्ठस्थ कराने के क्रम में ज्ञानाभ्यास जारी है। श्रद्धेय महासती मण्डल की प्रेरणा से एकाशन सिद्धि तप साधना श्रावक-श्राविकाओं द्वारा चालू की गई है जो गुरु हीरा के दीक्षा दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी, 30 अक्टूबर तक चलेगी। 41, 31, 15, 11, 9, 8, 5, 3 दिवस की तपस्याएँ हुई हैं। विशेष रूप से अठाई एवं नौ दिवसीय तपस्या बड़ी संख्या में हुई हैं। सवाई माधोपुर पोरवाल क्षेत्र में तपस्या का कीर्तिमान बना है। एकाशन, आयम्बिल, उपवास एवं तेले की तपस्या की लड़ी चल रही है। तेले और पचोले की तपस्या भी अच्छी संख्या में हुए हैं। गुरुदर्शन, वन्दन, जिनवाणी श्रवण एवं सांवत्सरिक क्षमापना हेतु महासती मण्डल की सेवा में स्थानीय तथा विभिन्न ग्राम-नगरों से श्रीसंघों और श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं का आगमन हुआ है। ज्ञानाराधना, तपाराधना की दृष्टि से चातुर्मास सफलता के साथ पूर्णता की ओर अग्रसर है। आगमानुसार प्रवचनों के माध्यम से महासती मण्डल द्वारा जीवन निर्माण के अनमोल सूत्र प्रदान किये जा रहे हैं। प्रवचनों की प्रशंसा दूर-दूर तक फैली है। सभी गुरु-भक्तों में उत्साह बना हुआ है।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.का 60वाँ दीक्षा-दिवस तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। तीन-तीन सामायिक, आयम्बिल, नीवी, उपवास, बेले, तेले, पचोले की तपाराधना हुई। सामूहिक तेले 65 एवं एकाशन की तपस्या बड़ी संख्या में हुई। महासती मण्डल द्वारा गुरु हीरा के व्यक्तित्व, कृतित्व और अनन्त उपकारों पर प्रकाश डाला गया। श्री मनीषजी जैन (लहसोड़ा) कोटा द्वारा 'धोवन पानी निर्दोष जिन्दगानी' विषयक महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। धर्मसभा में सवाई माधोपुर विधायक श्री दानिशजी अबरार ने मुखवस्त्रिका धारण कर दर्शन, बन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। सवाई माधोपुर विधायक श्री दानिशजी अबरार ने गुरुदेव के गुणगान कर आचार्य भगवन्त के दीर्घायु एवं शतायु होने की मंगल कामना की। नगर कांग्रेस अध्यक्ष श्री अनिलजी जैन 'वर्धमान' ने 'सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे' शुभभावना व्यक्त की। नन्दीसूत्र कण्ठस्थ करने वाले श्रावक-श्राविकाओं को वीर नाना परिवार सर्वश्री बाबूलालजी, कमलकुमारजी, विमलकुमारजी एवं टीकमचन्द्रजी जैन, उखलाणा-कोटा की ओर से पुरस्कृत किया गया। तेले की तपस्या करने वाले तपस्वियों को स्मृति-चिह्न श्री राधेश्यामजी, कुशलचन्द्रजी जैन गोटेवाला द्वारा प्रदान किये गये। श्राविका श्रीमती मीनाक्षी-पवनजी जैन (अलीगढ़) महावीर नगर-सवाईमाधोपुर द्वारा 21 उपवास के प्रत्याख्यान ग्रहण किये गये। शाखा उपाध्यक्ष श्री मोहनलालजी जैन सर्राफ द्वारा तपस्या की सामूहिक अनुमोदना करवाई गई। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ शाखा बजरिया की ओर से विधायक श्री दानिशजी अबरार एवं नगर कांग्रेस अध्यक्ष श्री अनिल कुमारजी जैन 'वर्धमान' का स्वागत अभिनन्दन किया गया। शाखा मन्त्री श्री पदमचन्द्रजी गोटेवाला ने सभी श्रद्धालुओं एवं वीर परिवारों का शाब्दिक बहुमान किया। जयघोष शाखा अध्यक्ष श्री मुकेश कुमारजी जैन पान वालों ने करवाया। इस अवसर पर वरिष्ठ श्रावक श्री गणपतलालजी जैन, श्री रतनलालजी जैन, क्षेत्रीय प्रधान श्री सुबाहुकुमारजी जैन सर्राफ, वीरपिता श्री महेन्द्र कुमारजी जैन-अलीगढ़, श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन, महावीरप्रसादजी जैन, शाखा संयोजक श्री लल्लूलालजी जैन आदि उपस्थित रहे।

- पदम चन्द जैन गोटेवाला, शाखा मन्त्री

रायचूर में मुमुक्षु सुश्री स्नेहाजी भण्डारी की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न

10 सितम्बर, 2022 दक्षिण की राजगृही नगरी रायचूरवासियों के लिए स्वर्णिम दिन रहा, जिस दिन रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा ने हमारे संघ पर महती कृपा कर मुमुक्षु सुश्री स्नेहाजी सुपुत्री श्रीमती सुनीता बाईजी-श्री ज्ञानचन्द्रजी भण्डारी, रायचूर की जैन भागवती दीक्षा 5 अक्टूबर, 2022 विजया दशमी को व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के मुखारविन्द से होने की रायचूर श्री संघ को स्वीकृति प्रदान की। इस घोषणा के साथ ही रायचूर संघ में खुशी की लहर दौड़ गई। इस दीक्षा के कार्यक्रम को सुन्दर एवं भव्य बनाने के लिए समस्त नगरवासी उत्साहित थे। मुमुक्षु सुश्री स्नेहाजी भण्डारी की जैन भागवती दीक्षा श्री संघ के अध्यक्ष श्री पारसमलजी सुखानी एवं दीक्षा समिति संयोजक श्री नरेन्द्रजी मूथा के नेतृत्व में पाँच दिवसीय कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुई।

1 अक्टूबर को नगरवासियों द्वारा मुमुक्षु का अभिनन्दन किया गया। इस कार्यक्रम से ही भागवती दीक्षा के कार्यक्रमों का शुभारम्भ हुआ। सम्पूर्ण समाज ने इस कार्यक्रम में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। सभी के मन में उत्साह था। 2 अक्टूबर प्रातः 11.00 बजे रक्षाबन्धन का आयोजन किया गया। इसमें नगर के सम्पूर्ण नवयुवकों ने मुमुक्षु के हाथों से राखी बँधवाई। इसी दिन दोपहर 2.00 बजे से महिला मण्डल, बहू मण्डल, बालिका मण्डल द्वारा गीत का आयोजन किया गया। इसमें नगर की सभी महिलाओं ने अति उत्साह से भाग लिया। 3 अक्टूबर दोपहर 3.00 बजे भक्ति-गीत का कार्यक्रम रखा गया था, इसमें भी महिला मण्डल की पूर्ण भागीदारी रही। 4 अक्टूबर मंगलवार मध्याह्न 2.00 बजे अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया गया। मञ्च पर रायचूर श्रीसंघ अध्यक्ष श्री पारसमलजी

सुखानी, दीक्षा समिति संयोजक श्री नरेन्द्रराजजी मूथा तथा मन्त्री श्री संजयजी संचेती मूथा के अलावा अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, दीक्षा समिति के संयोजक श्री कान्तिलालजी चौधरी एवं शासन सेवा समिति संयोजक श्री गौतमचन्द्रजी हुण्डीवाल उपस्थित थे। स्वागत भाषण श्री पारसमलजी सुखानी ने दिया। श्री गौतमचन्द्रजी हुण्डीवाल ने भी पधारे हुए सभी का स्वागत किया। उसके पश्चात् मुमुक्षु सुश्री स्नेहाजी भण्डारी का एवं परिवार का रायचूर श्रीसंघ एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से अभिनन्दन किया गया। अपने उद्बोधन में मुमुक्षु ने अपने विरक्त-जीवन के बारे में विस्तार से सभी को जानकारी दी। दीक्षा की आज्ञा देने के लिए अपने माता-पिता एवं परिवार का आभार व्यक्त किया एवं दीक्षा के सभी मांगलिक कार्यक्रमों को सफल एवं सुन्दर बनाने के लिए रायचूर श्रीसंघ को धन्यवाद अर्पित किया। उसके बाद बाहर गाँव से पधारे श्रावक संघ के प्रमुखों का रायचूर संघ द्वारा स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। अध्यक्षीय उद्बोधन श्री मनीषजी मेहता ने दिया।

5 अक्टूबर के दिन मुमुक्षु बहिन ने 41 गायों को अभयदान देते हुए अपने हाथों से तिलक कर और गुड़ खिलाकर कत्लखाने से छुड़वा कर गौशाला भेजा। शोभायात्रा जैन स्थानक से रवाना होकर नगर के प्रमुख मार्ग से होते हुए दीक्षा स्थल एसआरपीएस कॉलेज पहुँची। मुमुक्षु ने रथ से नीचे उतरकर पुनः व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन किए तथा वेश परिवर्तन एवं केश लुञ्चन के लिए चली गईं। वेश परिवर्तन कर जैसे ही मुमुक्षु दीक्षा सभा में पधारी जयघोष के नारों के साथ मण्डप गूँज उठा। सभी लोग मुमुक्षु के इस अलौकिक रूप के दर्शन कर अपने आप को कृतार्थ कर रहे थे।

जैसे ही व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. के द्वारा मुमुक्षु बहिन को दीक्षा प्रदान की गई, एक बार पुनः पाण्डाल जय-जयकार के नारों से गूँज उठा। उपस्थित सभी अपने आपको धन्य मान रहे थे कि वे आज एक ऐतिहासिक दृश्य के साक्षी बन रहे थे। दीक्षा के कार्यक्रम के पश्चात् सभी के लिए गौतम प्रसादी रखी गई थी। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने थाली को धोकर पीया। थाली धोकर पीने वालों को पुरस्कृत भी किया गया। बाहर गाँव से पधारे हुए सभी अतिथियों ने श्रीसंघ के इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस दीक्षा के कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाने में सम्पूर्ण रायचूर श्रीसंघ ने तन-मन-धन से अपनी सहभागिता दर्ज कराई तथा विशेषकर नवयुवकों में बहुत उत्साह था। महिला मण्डल, बहू मण्डल एवं बालिका मण्डल ने अपने परिवार की दीक्षा समझ कर सभी मांगलिक कार्यक्रमों को सफल बनाने में अपना सम्पूर्ण योगदान दिया। दीक्षा के पश्चात् सुश्री स्नेहाजी का नाम आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के संकेतानुसार महासती श्री चेष्टाश्रीजी म.सा. रखा गया।

-पारसमल सुखानी, अध्यक्ष

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षा-दिवस पर आयोजित कार्यक्रम

जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का कार्तिक शुक्ला षष्ठी, 30 अक्टूबर, 2022 को 60वाँ दीक्षा-दिवस उपस्थित हुआ। इस अवसर पर सन्तप्रवरों एवं महासती मण्डल के सान्निध्य में सिद्धितप, उपवास, एकाशन, बेला, तेला आदि अनेक विधि तपस्याएँ हुईं। देश में अनेक ग्राम-नगरों में पूज्यप्रवर का गुणानुवाद किया गया। कुछ रिपोर्ट प्रस्तुत हैं-

बीजापुर-श्रमण संघीय पूज्य महासती श्री सत्यप्रभाजी म.सा आदि ठाणा 5 के पावन सान्निध्य में व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक जिनशासन गौरव परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा का 60वाँ दीक्षा दिवस तप-

त्याग के साथ मनाया गया। प्रवचन में पूज्य महासतीजी ने महापुरुषों के गुणगान किये। श्री पारसमलजी बोथरा ने आचार्य भगवन्त के गुणगान किये। इस दिन करीब 50 एकाशन हुए। एकाशन का लाभ श्री मदनलालजी पारसमलजी शान्तिलालजी बोथरा परिवार ने लिया।

निष्ठा-रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 60वाँ दीक्षा दिवस समर्थ गच्छाधिपति परमपूज्य श्री उत्तमचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री अर्चनाजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय, एकाशन आदि विविध कार्यक्रमों से मनाया गया। महासतीजी ने आचार्यश्री के सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा और व्यसनमुक्ति के सन्देश के बारे में तथा धर्मस्थान में आकर सामायिक करने की प्रेरणा की एवं उनके जीवन पर प्रकाश डाला। आगम की आज्ञानुसार विचरण करने वाले ऐसे आचार्य भगवन्त की कथनी और करनी एक समान है। इसलिये अधिक से अधिक श्रावक-श्राविकाएँ आचार्य भगवन्त के मिशन को आगे बढ़ायें और संघ की शोभा बढ़ायें। श्री अशोकजी कर्णावट ने भी आचार्य भगवन्त के जीवन पर प्रकाश डाला और उनके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

-अशोक कर्णावट

जयपुर में व्यसनमुक्ति अभियान एवं जागरूकता रैली

पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 60वें दीक्षा-दिवस के उपलक्ष्य में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री जैन रत्न युवती मण्डल, जयपुर के द्वारा 10 से 30 अक्टूबर 2022 तक 'व्यसन-मुक्ति अभियान' का आयोजन किया गया। उसी क्रम में अब तक 9 वक्ताओं के द्वारा सुबोध शिक्षा समिति के अर्न्तगत सञ्चालित संस्थाओं में व्यसनमुक्ति पर आधारित प्रेरणादायी उद्बोधन दिया गया, जिसमें श्री मनीषजी मेहता कार्याध्यक्ष-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने बताया कि वर्तमान में नशा युवाओं को अपने आगोश में ले रहा है, इसलिए आवश्यकता है कि सभी को नशामुक्त बनाया जाये, श्री रितुलजी पटवा कोषाध्यक्ष-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल ने बताया कि- सभी प्रकार के नशे से मुक्त बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए, श्रीमती शिपिकाजी जैन ने बताया कि वर्तमान में प्रायः यह देखने में आ रहा है कि युवावर्ग भौतिकतावादी जीवन एवं पाश्चात्य जीवन शैली का अन्धानुकरण कर अपने जीवन को नष्ट कर रहा है, उन्हें कुव्यसनों की निवृत्ति के उपायों को अपनाकर एक श्रेष्ठ जीवन जीने की कला का अभ्यास करना चाहिए, श्रीमती नीलिमाजी गोखरू, श्रीमती शिखाजी जैन ने बताया कि वर्तमान परिदृश्य में श्री निपुणजी डागा ने कहा कि युवा वर्ग आधुनिक जीवन शैली को अपना कर अपने जीवन को नष्ट कर रहा है। उन्होंने कुव्यसनों की निवृत्ति के उपायों को अपनाकर एक श्रेष्ठ जीवन जीने की कला का ज्ञान कराया, श्री दिलीपजी जैन ने बताया कि कुव्यसनों को छोड़कर समाज को नशा मुक्त बनाया जाये, श्रीमती खुशबूजी कर्णावट ने कहा कि अगर भारत को फिर से सोने की चिड़िया बनाना है तो हमारी नींव, युवाओं को मजबूत बनना पड़ेगा। श्रीमती संगीताजी लोढ़ा ने स्पष्ट किया कि- नशा नरक का द्वार है, यह इस भव और पर भव दोनों को ही बिगाड़ देता है। जिनसे प्रेरित होकर 2400 बालक-बालिकाओं द्वारा व्यसनों का सेवन न करने का संकल्प लिया गया। आगे भी इस तरह वक्ताओं के द्वारा उद्बोधन कराने की सम्भावना है।

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, श्री जैन रत्न युवती मण्डल, जयपुर के द्वारा व्यसनमुक्ति अभियान को गति प्रदान करने हेतु गुरुवार, 20 अक्टूबर, 2022 को जयपुर में जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली एस. एस. जैन सुबोध बालिका विद्यालय, साँगनेरी गेट, जयपुर से प्रातः 10 बजे प्रारम्भ होकर जौहरी बाजार, बड़ी चौपड़, त्रिपोलिया गेट, चौड़ा रास्ता होती हुई लगभग 12.00 बजे

बापू बाजार पहुँची। जिसमें 700 से 800 छात्र-छात्राओं एवं संघ-समाज के 600 से 700 सदस्यों ने हिस्सा लिया। रैली में भाग लेने वाले सभी सदस्य व्यसनमुक्ति के विभिन्न नारों का घोष कर रहे थे। बालक-बालिकाओं द्वारा व्यसनमुक्ति के नारे लिखी तख्तियाँ एवं बैनर हाथ में थे। पूरी रैली की वीडियोग्राफी द्वारा यू-ट्यूब पर लाइव टेलिकास्ट किया गया।

-संजीव कोठारी, मन्त्री

रत्नसंघ के दो दिवसीय कार्यक्रम : गुणी-अभिनन्दन, कार्यकारिणी बैठक तथा आमसभा का अभूतपूर्व भव्य आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में गुणी-अभिनन्दन एवं सम्मान-समारोह का आयोजन शनिवार, 15 अक्टूबर 2022 को रामबाग, महामंदिर के विशाल प्रांगण में दोपहर 12.30 बजे प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जयपुर सीएसआर कमिश्नर संघनिष्ठ गुरुभक्त श्री महेन्द्रजी पारख पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने की। संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, गुणी-अभिनन्दन चयन समिति अध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी बोहरा, शासनसेवा समिति संयोजक श्री गौतमजी हुण्डीवाल, संघ के कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया, युवक परिषद् अध्यक्ष श्री विवेकजी लोढ़ा, मारवाड़ क्षेत्रीय प्रधान श्री अमरचन्दजी चौधरी, जोधपुर शाखा अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा तथा शाखा मन्त्री श्री नवरतनजी गिड़िया मञ्च पर आसीन हुए। कार्यक्रम में अल्पकाल के लिए अन्तरराष्ट्रीय उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री दलवीरजी भण्डारी का सान्निध्य भी सौभाग्य से प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ जोधपुर श्राविका मण्डल द्वारा किये गये मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् पधारे हुए अतिथियों के स्वागत में श्राविका मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया ने समारोह में पधारे सभी अतिथियों एवं संघ-सदस्यों का हृदय से स्वागत करते हुए गुणी-अभिनन्दन की पृष्ठभूमि पर अपने उद्गार रखे। गुणी-अभिनन्दन समारोह में विभिन्न वर्गों के अन्तर्गत वर्ष 2021 एवं 2022 हेतु चयनित महानुभावों का सम्मान किया गया, जो इस प्रकार है-

संघरत्न सम्मान- संघ के प्रति प्रदत्त समर्पित एवं अनमोल सेवाओं हेतु वर्ष 2021 हेतु संघ-संरक्षक तथा शासन सेवा समिति के सह-संयोजक श्री कैलाशजी हीरावत तथा वर्ष 2022 हेतु जयपुर शाखा अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत को संघरत्न सम्मान से सम्मानित किया गया। मञ्चासीन अतिथियों द्वारा माल्यार्पण तथा शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया एवं रजत पट्टिका तथा अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। श्री प्रमोदजी महनोत अपरिहार्य कारणों से उपस्थित नहीं हो सके थे।

आचार्य हस्ती-स्मृति सम्मान-वर्ष 2021 का आचार्यश्री हस्ती स्मृति-सम्मान प्रसिद्ध वैज्ञानिक अहमदाबाद के श्री नरेन्द्रजी भण्डारी को प्रदान करने की घोषणा की गयी, वे उस समय नासा में होने के कारण उपस्थित नहीं हो सके। वर्ष 2022 का सम्मान साहित्य प्रेमी जैनदर्शन के वैज्ञानिक जमशेदपुर के डॉ. जीवराजजी जैन को प्रदान किया गया। मञ्चासीन अतिथियों द्वारा माल्यार्पण तथा शॉल ओढ़ाकर बहुमान किया गया, साथ ही एक लाख रुपये की राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान-वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री उम्मेदमलजी जैन-जरखोदा, श्री राजमलजी संचेती-

अमलनेर को वर्ष 2021 तथा श्री पुखराजजी गिड़िया-जोधपुर, श्री सुरेशजी जैन-खेरली को वर्ष 2022 का वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान प्रदान किया गया।

विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान- सौ. अनिताजी लुंकड़-जलगाँव, श्रीमती कान्ताजी जैन-जयपुर को वर्ष 2021 तथा श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन-सवाईमाधोपुर, सौ. ज्योतिजी गादिया-भुसावल को वर्ष 2022 का वरिष्ठ महिला स्वाध्यायी सम्मान से सम्मानित किया गया।

विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान- श्री विनोदजी जैन-चेन्नई, श्री जिनेन्द्रजी जैन-मुम्बई को वर्ष 2021 तथा श्री महावीरजी रांका-पहुँना, श्री निर्मलजी बोहरा-चेन्नई को वर्ष 2022 का विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान दिया गया।

उपर्युक्त सभी स्वाध्यायी सम्मान सामायिक-स्वाध्याय के प्रचार-प्रसार एवं पर्युषण सेवा हेतु प्रदान किए गए। सभी का माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मान करने के साथ ही मञ्चस्थ अतिथियों द्वारा प्रत्येक को 21 हजार रुपये की राशि एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किए गए।

युवा प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान- प्रतिभा सम्पन्न श्री निर्मलजी चोरड़िया-पीपाड़ सिटी को चतुर्विध संघ सेवा हेतु, श्री नमनजी रूणवाल-बीजापुर को सीए की परीक्षा में अखिल भारतीय स्तर पर 44वाँ स्थान प्राप्त करने पर वर्ष 2021 का तथा श्री आयुष जी जैन-जयपुर को भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में 178वाँ स्थान प्राप्त करने पर, सुश्री दर्शना जी गोलेच्छा-पाली को राजस्थान ज्यूडिशियल सर्विस (RJS) सिविल जज कैडर-2021की भर्ती परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर वर्ष 2022 के लिए युवा प्रतिभा-शोध-साधना-सेवा सम्मान से सम्मानित किया गया। सभी चयनित प्रतिभाओं को माल्यार्पण एवं शॉल द्वारा सम्मानित करने के साथ रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

गुणी-अभिनन्दन- इसके अन्तर्गत अपनी अर्हनिश सेवाओं हेतु ऑस्टियोपैथी चिकित्सक श्री गोवर्द्धनजी पाराशर-जोधपुर को माल्यार्पण, शॉल तथा रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

न्यायमूर्ति श्री श्रीकृष्णमलजी लोढ़ा स्मृति युवा-शिक्षा-प्रतिभा सम्मान- इसमें श्रीमती अंशिमाजी भंडारी-पीपाड़ सिटी को मास्टर ऑफ कॉमर्स (एकाउण्ट्स) में स्वर्ण पदक प्राप्त करने पर वर्ष 2021 हेतु तथा श्रीमती सेहलजी जैन-जयपुर को एम.फिल में स्वर्ण पदक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में वर्ष 2022 हेतु युवा-शिक्षा-प्रतिभा सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें माला, चून्दड़ी के साथ ही 21 हजार रुपये की राशि तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

करुणा पुरस्कार- जयपुर के श्री उम्मेदमलजी जैन को उत्कृष्ट मानव-सेवा हेतु उल्लेखनीय सेवाएँ देने के उपलक्ष्य में करुणा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। माल्यार्पण एवं शॉल से बहुमान के साथ ही उन्हें 2 लाख रुपये की राशि का चैक प्रदान किया गया।

डॉ. बिमला भंडारी जैन रत्न शोध-सम्मान- इसमें डॉ. रुचिजी जैन-नई दिल्ली, श्री कालूरामजी बेनिवाल-दिल्ली, जीनतजहाँजी पठान, डॉ. वीरचन्द्रजी जैन-उदयपुर, डॉ. खुशबूजी सिंघवी-जोधपुर को वर्ष 2021 तथा श्री विकासजी जैन-ललितपुर, श्रीमती प्रीतिजी जैन-जयपुर को वर्ष 2022 हेतु जैनदर्शन के विषय में पी-एच.डी. करने हेतु माल्यार्पण, शॉल तथा 11000/- की राशि का चैक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

चातुर्मास सम्मान- विगत वर्ष 2021 में रत्नसंघीय संत-सतीवृन्द के चातुर्मास सम्पन्न हुए। उन संघों का भी माल्यार्पण, शॉल एवं स्मृति-चिह्न के माध्यम सम्मान किया गया।

दीक्षा आयोजन सम्मान- वर्ष 2021-22 में रत्नसंघीय दीक्षाएँ जिन स्थानों पर सम्पन्न हुई, उन संघों का भी माल्यार्पण, शॉल एवं स्मृति-चिह्न के माध्यम से सम्मान किया गया।

गुणीजनों को देख हृदय में, मेरे प्रेम उमड़ आवे

उपर्युक्त भाव के उद्गार समारोह में पधारे मुख्य अतिथि श्री महेन्द्रजी पारख ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज यहां गुणीजनों का सम्मान उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं के आधार पर किया जा रहा है। सेवा तीन प्रकार की होती है- 1. स्वयं सेवा, 2. प्रभु सेवा और 3. विश्व सेवा। इन गुणीजनों का सम्मान कर वस्तुतः संघ स्वयं सम्मानित हुआ है। अनन्त पुण्य के उदय से आचार्य भगवन्त का चातुर्मास जोधपुर को प्राप्त हुआ है। मुझ पर गुरुदेव का परम उपकार रहा है। मैंने एक वर्ष पूर्व गुरुदेव के मुखारविन्द से रात्रिभोजन-त्याग का नियम ग्रहण किया था जो आज भी निरन्तर चल रहा है। तनावरहितता, सजगता, प्रभु स्मृति और निमित्त भाव ये चार बातें मेरे जीवन को आगे बढ़ाने में सहायक हैं।

कार्यक्रम का सफल सञ्चालन सुश्राविका श्रीमती मीताजी मुल्तानी तथा युवक परिषद्, जोधपुर के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने किया।

सञ्चालन समिति तथा कार्यकारिणी बैठक का आयोजन-शनिवार, 15 अक्टूबर 2022 को रात्रि 8 बजे से माहेश्वरी भवन, रातानाड़ा में संघ की सञ्चालन समिति तथा कार्यकारिणी की संयुक्त बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा विभिन्न विषयों पर चर्चा के साथ ही संघहित में सुझाव भी प्राप्त हुए।

संघनिष्ठा दिवस के रूप में आमसभा का अद्भुत नज़ारा- इस बार आयोजित होने वाली आमसभा को संघ ने 'संघनिष्ठा दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय लिया। इस हेतु सभी शाखाओं तथा रत्नसंघीय परिवारों को विशेष प्रेरणा की गयी। देश के विभिन्न स्थानों से संघ-सदस्यों का आना शनिवार से ही प्रारम्भ हो गया। रामबाग का विशाल प्रांगण का विहंगम दृश्य सभी संघ-सदस्यों को सुन्दर लग रहा था। 16 अक्टूबर को दोपहर 12.30 बजे प्रांगण संघ-सदस्यों के आगमन से भर चुका था। एक तरफ संघ एवं संघीय संस्थाओं की जानकारी हेतु स्टॉल्स लगायी गयी, जिनका आगन्तुक सदस्यों ने अवलोकन किया।

आमसभा की अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने की। संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, शासन सेवा समिति संयोजक श्री गौतमजी हुण्डीवाल, संघ के कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, महामन्त्री श्री धनपतजी सेठिया, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी कुम्भट, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल अध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया, युवक परिषद् अध्यक्ष श्री विवेकजी लोढ़ा, स्वाध्याय संघ संयोजक श्री सुभाषजी हुण्डीवाल, शिक्षण बोर्ड संयोजक श्री अशोकजी बाफना, संस्कार केन्द्र संयोजक श्री राजेशजी कर्णावट, मारवाड़ क्षेत्रीय प्रधान श्री अमरचन्दजी चौधरी, चातुर्मास समिति उपाध्यक्ष श्री कुशलजी गोटेवाला, चिकित्सा समिति उपाध्यक्ष श्री मनमोहनजी कर्णावट, विहार समिति उपाध्यक्ष श्री पारसजी गिड़िया, मुमुक्षु समिति उपाध्यक्ष श्री प्रमोदजी लोढ़ा, संघ-सेवा सोपान समिति उपाध्यक्ष श्री सुशीलजी बाफना, सूचना एवं प्रौद्योगिकी संयोजक श्री विकासजी गुन्देचा, जोधपुर शाखा अध्यक्ष श्री सुभाषजी गुन्देचा तथा शाखा मन्त्री श्री नवरतनजी गिड़िया ने मञ्च को शोभायमान किया।

आमसभा का शुभारम्भ श्राविका मण्डल द्वारा कृत मंगलाचरण से हुआ। संघाध्यक्ष महोदय श्री प्रकाशजी टाटिया ने सभी संघ-सदस्यों का शब्दों से स्वागत किया तथा इस आमसभा को संघनिष्ठा दिवस के रूप में मनाने के उद्देश्य की जानकारी दी। विशिष्ट वक्ता श्री राजेन्द्रजी लुंकड़, ईरोड़ ने अपने विशेष वक्तव्य में संघ-सदस्यों को संघ से जुड़ाव, समन्वय तथा संघ-सेवा में निरन्तर सक्रियता रखने की प्रेरणा की।

आमसभा में इस बार गत वर्ष चयनित संघ-सेवियों का सम्मान भी किया गया, जो अग्रांकित है-

विशिष्ट चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवा- इस हेतु डॉ. राकेशजी हीरावत-जयपुर, डॉ. शरदजी डागा-जयपुर, डॉ. महेन्द्रजी लोढ़ा, भण्डारी हॉस्पिटल-जयपुर, श्रीमती श्वेताजी कर्नावट-जोधपुर, श्री धर्मेशजी लोढ़ा-चेन्नई, श्री राजीवजी जैन-जोधपुर तथा डॉ. सतपालजी को श्रमणोचित औषधोपचार में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया। श्री धर्मेशजी लोढ़ा-चेन्नई कारणवश कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके।

विशिष्ट तपस्या सम्मान- इस हेतु सुश्राविका श्रीमती बिन्दूजी मेहता द्वारा 150 दिवसीय दीर्घ तप-साधना करने के उपलक्ष्य में तथा निरन्तर 13 वर्षीतप करने के उपलक्ष्य में श्रीमती उषा जी लुणावत-अजमेर को सम्मानित किया गया। बिन्दू जी मेहता कार्यक्रम में किसी कारणवश उपस्थित नहीं हो सकी।

भामाशाह सम्मान- संघ में उदार हृदय से विशेष अर्थ सहयोग प्रदान करने हेतु श्री विनोदजी लोढ़ा-जयपुर, श्री राजीवजी डागा-ह्यूस्टन, श्री कस्तूरचन्दजी सुशीलजी बाफना-जलगाँव को सम्मानित किया गया। श्री राजीवजी डागा कारणवश कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके।

संघ में अर्थ सहयोग प्राप्त करने हेतु विशेष प्रयास करने हेतु सम्मान- इस हेतु श्री प्रमोदजी लोढ़ा-जयपुर तथा श्री अनिलजी सुराणा-मुम्बई को उनकी उत्कृष्ट सेवाओं हेतु सम्मानित किया गया।

विरक्त भाई-बहिनों की सार-सम्हाल करने हेतु सम्मान- इस हेतु श्री अरूणजी मेहता-जोधपुर तथा श्रीमती पुष्पाजी भंसाली-बैंगलूरु को सम्मानित किया गया।

विशिष्ट ज्ञानार्जन सम्मान- इसके अन्तर्गत पीपाड़सिटी के युवारत्न श्री संयमजी मेहता को 25 से अधिक थोकड़े कण्ठस्थ करने पर सम्मानित किया गया।

विशिष्ट बाल-प्रतिभा सम्मान- इसके अन्तर्गत जोधपुर के बालरत्न श्री रूहानजी मेहता को विशिष्ट ज्ञानार्जन करने के उपलक्ष्य में सम्मानित किया गया।

कार्यालय सहयोगी सम्मान- संघ एवं संघीय संस्थाओं के प्रधान कार्यालय में उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करने हेतु जोधपुर कार्यालय में कार्यरत श्री बसंतजी तथा जयपुर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल कार्यालय में कार्यरत श्री प्रहलाद नारायणजी लखेरा को सम्मानित किया गया।

संघ सहायक सम्मान- सन्त-सतीवृन्द की विहार सेवा में अपनी उल्लेखनीय सेवाएँ प्रदान करने हेतु संघ के संघ सहायक के रूप में कार्यरत श्री रामदीनजी जाखड़ को सम्मानित किया गया।

विशिष्ट वैयावच्च सेवा- श्री नवतरनजी बाफना-जोधपुर तथा श्री श्रीचन्दजी हींगड़-पाली को उनकी विशिष्ट वैयावच्च सेवा तथा गोचरी सेवा हेतु सम्मानित किया गया।

अन्य संघ-सेवा सम्मान- इसके अन्तर्गत संघ की गतिविधियों के प्रचार-प्रसार तथा ज्ञानार्जन हेतु ऑनलाइन माध्यमों से विशेष प्रयास हेतु जयपुर के श्री नमनजी डागा एवं श्री निपुणजी डागा को सम्मानित किया गया।

इसी के साथ गत वर्ष संघ की जिन शाखाओं में रत्नसंघीय चातुर्मास हुए तथा दीक्षा आयोजन हुए उन संघों को भी सम्मानित किया गया। सम्मान कार्यक्रम के पश्चात् उपस्थित संघ-सदस्यों से संघ हित में कई सुझाव प्राप्त हुए। कार्यक्रम का सञ्चालन संघ के संयुक्त महामन्त्री श्री प्रकाशजी सालेचा ने किया।

विशेष रूप से दोनों दिन जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., सरस व्याख्यानी, महान् अध्यक्षसायी भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. एवं प्रभृति सन्त-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन का सौभाग्य सभी संघ-सदस्यों को प्राप्त हुआ। भावी आचार्यप्रवर सहित मुनिवृन्द ने शनिवार को गुणीजनों का सम्मान तथा रविवार को संघ-निष्ठा विषय पर विशेष प्रवचन फरमाया।

आचाराङ्गसूत्र खुली पुस्तक प्रतियोगिता की तिथि तथा प्रश्नावली में आवश्यक संशोधन

प्रश्न पुस्तिका को पूर्ण कर जमा कराने की तिथि 15 मार्च 2023 (परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 85वाँ जन्म-दिवस) रखी गई है। आचाराङ्गसूत्र पुस्तक एवं प्रश्नपुस्तिका प्राप्ति तथा जमा कराने का स्थान- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज.) फोन 0291-2636763, 9413132362

विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में नेटबैंकिंग के द्वारा भेजी जायेगी। अतः प्रतियोगिता प्रतिभागी प्रश्न-पुस्तिका में अपना नाम, बैंक का नाम, बैंक खाता संख्या, आई.एफ.सी. कोड के साथ बैंक विवरण की जानकारी जैसे बुक पासबुक में मुद्रित (प्रिन्ट) हुआ है, वैसा ही साफ खुले अक्षरों में लिखकर भेजें। प्रतियोगिता से सम्बन्धित प्रश्न-पुस्तिका में संशोधन-

1. प्रश्नावली-3 का 5- 'अतिताप' की जगह 'अतिपात' पढ़ें।
2. प्रश्नावली-4 में चौथे प्रश्न में 'कारण' के स्थान पर 'चरण' पढ़ा जाये।
3. प्रश्नावली-5 का 5- 'आसक्ति' की जगह 'वस्तु' पढ़ें।
4. प्रश्नावली-6 का 24- 'व्याप्त' की जगह 'परिव्याप्त' पढ़ें।
5. प्रश्नावली-14 का 5- 'वल्लभी' के स्थान पर 'मथुरा' पढ़ें।
6. प्रश्नावली-14 में पेज संख्या-23 पर जैन प्रतीक के नीचे के बॉक्स में क्रमांक 2 के स्थान पर 25 पढ़ा जाये। साथ ही क्रमांक 11 में खाली बॉक्स 6 के स्थान पर 5 ही माने जाये।
7. प्रश्नावली-18 में प्रश्न संख्या 10 में पेज संख्या लिखने का एक बॉक्स Extra है।
8. प्रश्नावली-19 में पेज संख्या 29 पर पेज संख्या लिखने का एक बॉक्स Extra है।
9. प्रश्नावली-20 में 3 नम्बर के दिल में छठी पंक्ति में 'ब' के स्थान पर 'व' पढ़ा जाये।
11. प्रश्नावली-20 में 4 नम्बर के दिल में तीसरी पंक्ति में 'भि' के स्थान पर 'मि' पढ़ा जाये।
12. प्रश्नावली-20 में 4 नम्बर के दिल में सबसे नीचे 'ष' के स्थान पर 'श' पढ़ा जाये।

प्रश्नावली 13 (अन्त्याक्षरी) में सही अक्षर मिलान में आ रही कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए निम्नांकित प्रश्नों को बदला गया है। प्रतियोगियों से निवेदन है कि बदले हुए प्रश्नों का उपयोग करें।

प्रश्न-4 श्रमण भगवान महावीर कषायरूप भाव-शस्त्रों के उच्छेद से ही सकल कर्मों के क्या हुए हैं?

प्रश्न-14 भगवान कौनसा जीवन जीते थे?

प्रश्न-15 भगवान ने देखा स्त्रियाँ सभी कर्मों की जननी हैं, इसलिए उन्होंने स्त्रियों का क्या कर दिया था?

प्रश्न-16 क्या सेवन करने वाले को पथ्य का पालन अवश्य करना पड़ता है?

प्रश्न-17 केवल सन्देह की कुटिल वृत्ति हो, उसे कौनसा संशय कहा जाता है?

प्रश्न-18 उदर रोग के आठ प्रकार में से एक प्रकार कौनसा है?

प्रश्न-22 जो उपधि रहित है, उसे क्या कहते हैं?

प्रश्न-20 में उदाहरण में जो केवल मरण (1, 2, 3, 4, 5, 5) के अक्षर पाँच दिलों में दिये हैं, वे अतिरिक्त (Extra) हैं, उनका उपयोग नहीं करना है।

-श्वेता कर्नावट, महासचिव

जयपुर में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का मध्य राजस्थान सम्भाग का क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल तथा श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जयपुर के तत्त्वावधान में 28 सितम्बर 2022 को गुलाब विहार, प्रताप नगर, जयपुर में मध्य राजस्थान सम्भाग का क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में मध्य राजस्थान सम्भाग के नजदीकी क्षेत्र के जयपुर, अजमेर, दूदू, किशनगढ़, ब्यावर तथा आस-पास के ग्राम-नगरों की श्राविकाओं ने भाग लिया। क्षेत्रीय सम्मेलन में सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। प्रवचन के माध्यम से गुरु-भगवन्तों के मुखारविन्द से संघ-निष्ठा, गुरुभक्ति और संघ उन्नति में नारी के योगदान आदि विषयों पर उद्बोधन का लाभ प्राप्त हुआ।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया की अध्यक्षता में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में शासन सेवा समिति की सम्माननीय सदस्या डॉ. मंजुलाजी बम्ब, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय परामर्शदाता श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा, कार्याध्यक्ष श्रीमती संगीताजी बोहरा, श्रीमती मोनिकाजी डांगी, कोषाध्यक्ष श्रीमती बिंदुजी भाण्डावत, सचिव श्रीमती वनीताजी कांकरिया, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विवेकजी लोढ़ा, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मीनाजी गोलेच्छा, सचिव श्रीमती चन्द्रकान्ताजी लोढ़ा, युवती मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती विजेताजी लोढ़ा सहित कई गणमान्य सम्मानित वरिष्ठ श्राविकाओं की उपस्थिति रही। सभी शाखा के पधारे सदस्यों ने रिपोर्ट के माध्यम से अपनी गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। जयपुर युवती मण्डल द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न प्रोजेक्ट की जानकारी प्रदान की गई, जिसकी सभी ने सराहना की।

-श्वेता कर्नावट, महारसचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल का श्राविका संस्कार गौरव दिवस सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की 24 सितम्बर 1994 को स्थापना हुई, जिसके 28 वर्ष पूर्ण हुए। 24 सितम्बर 2022 को श्राविका गौरव दिवस पर श्राविका मण्डल की सभी शाखाओं में साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की जीवनी पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखा गया। प्रत्येक शाखा से शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रथम पुरस्कार 500/- द्वितीय 300/- तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को 200/- का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। सभी विजेता प्रतिभागियों की पुरस्कार राशि उनके बैंक खाते में भेजी जायेगी। अतः प्रतियोगिता प्रतिभागी अपना नाम, बैंक का नाम, बैंक खाता संख्या, आई.एफ.सी. कोड के साथ बैंक विवरण की जानकारी जैसे बुक पासबुक में मुद्रित हुआ है, वैसा ही साफ खुले अक्षरों में व्हाट्सअप नं. 9413132362 अथवा बैंक पासबुक की साफ फोटो भेजे।

श्राविका गौरव दिवस पर आयोजित प्रतियोगिता में अग्रांकित विजेता रहे- जोधपुर-प्रथम -श्रीमती कंचनजी रांका, शक्ति नगर, द्वितीय- श्रीमती सुशीलाजी गुलेच्छा, पावटा, तृतीय-श्रीमती सुनीताजी मेहता-सरदारपुरा। जयपुर-प्रथम- श्रीमती कान्ताजी मेहता, प्रताप नगर, द्वितीय- श्रीमती कविताजी बम्ब, प्रताप नगर, तृतीय -

श्रीमती शीलाजी, राधा निकुंज एवं श्रीमती सुशीलाजी, सांगानेर। अहमदाबाद-प्रथम-सुनिताजी कांकरिया, द्वितीय-प्रियाजी मादरेचा, तृतीय-अनीताजी धींग। बालोतरा-प्रथम-श्रीमती दीपिकाजी चौपड़ा, द्वितीय-श्रीमती पिकीजी बाफना, तृतीय-श्रीमती शोभाजी चौपड़ा। बजरिया-सवाई माधोपुर-प्रथम-श्रीमती रूपाजी जैन, द्वितीय-श्रीमती कमलेशजी जैन, तृतीय-श्रीमती अलकाजी जैन। नागौर-प्रथम-श्रीमती नीलमजी कांकरिया, द्वितीय-श्रीमती रेखाजी सुराणा, तृतीय-श्रीमती चंचलजी बेताला। गंजखेरली-प्रथम-श्रीमती मंजूजी सुरेशचन्दजी जैन, द्वितीय-सुश्री रियाजी सुरेशजी जैन, तृतीय-सुश्री यांशीजी महेशचन्दजी। दूदू-प्रथम-श्रीमती चन्द्रलताजी मेहता, द्वितीय-श्रीमती प्रमिलाजी मेहता, तृतीय-श्रीमती भावनाजी चीपड़। चौथ का बरवाड़ा-प्रथम-श्रीमती पिकीजी पवन कुमार जी जैन, द्वितीय-श्रीमती नीतूजी चन्द्रप्रभु जैन, तृतीय-श्रीमती प्रीतिजी जिनेन्द्रकुमारजी जैन। अजमेर-प्रथम-श्रीमती सरिताजी गोलेच्छा, द्वितीय-श्रीमती उपमाजी चौधरी, तृतीय-श्रीमती चन्द्राजी पोखरणा। मदनगंज-किशनगढ़-प्रथम-संजूजी लोढ़ा, द्वितीय-विभाजी लोढ़ा, तृतीय-नीतूजी मोदी। कोलकाता-प्रथम-प्रतिभाजी मेहता, द्वितीय-विमलाजी भंडारी एवं निर्मलाजी बोथरा, तृतीय-लीलाजी कटारिया। बँगलोर-प्रथम-श्रीमती प्रेमाजी बाफना, द्वितीय-श्रीमती सिमरनजी सांखला, तृतीय-श्रीमती पूजाजी गुन्देचा।

-श्वेता कर्नवट, महासचिव

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र की प्रचार यात्रा

2 अक्टूबर, 2022 को एक दिवसीय प्रचार-प्रसार यात्रा बाड़मेर एवं बालोतरा में आयोजित की गई। बाड़मेर में एक नई पाठशाला खोलने का निर्णय किया गया और अध्यापक फॉर्म भरवाया गया। श्राविकाओं को बाड़मेर के विभिन्न क्षेत्रों के छात्र-छात्राओं की संख्या के आधार पर संस्कार केन्द्र प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। इस मीटिंग में संस्कार केन्द्र के सह संयोजक श्री राजेशजी भण्डारी, सह सचिव श्री सुरेन्द्रजी कुम्भट, शिक्षण बोर्ड के प्रचार-प्रसार प्रभारी श्री जगदीशमलजी कुम्भट, जोधपुर श्राविका मण्डल की पूर्व उपाध्यक्ष श्रीमती सरलाजी भण्डारी एवं बाड़मेर स्थानीय संघ के अध्यक्ष-मन्त्री, श्राविका मण्डल के अध्यक्ष-मन्त्री एवं युवक परिषद् के पदाधिकारी उपस्थित रहे साथ ही सती-मण्डल के प्रवचन एवं दर्शन लाभ भी प्राप्त हुआ।

9 अक्टूबर, 2022 को बजरिया सवाईमाधोपुर में पल्लीवाल, पोरवाल क्षेत्र के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें अध्यापक निर्देशिका एवं सॉफ्टवेयर के बारे में सभी को जानकारी प्रदान की गई एवं विभिन्न सुझाव आमन्त्रित किए गए, जिसे पदाधिकारियों की मीटिंग कर उन पर विचार कर निर्णय किया जाएगा। इस कार्यशाला में, संस्कार केन्द्र के सह संयोजक श्री राजेशजी भण्डारी, सह सचिव श्री सुरेन्द्रजी कुम्भट, बजरिया संघ के अध्यक्ष-मन्त्री, श्राविका मण्डल के सदस्य एवं गणमान्य नागरिक भी उपस्थित रहे। इस कार्यशाला में संस्कार केन्द्र के 31 अध्यापक, 2 निरीक्षक भी उपस्थित रहे। सभी ने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की सुशिष्या महासती श्री पद्मप्रभाजी आदि ठाणा 8 के सान्निध्य में प्रवचन, दर्शन-वन्दन का लाभ लिया। महासतीजी ने संस्कार केन्द्र के अध्यापक/अध्यापिकाओं, निरीक्षकों एवं पदाधिकारियों के दायित्व एवं कर्तव्य के बारे में बताया। संस्कारों से भटक रहे बच्चों को कैसे संस्कारित करें, इस बारे में भी महासतीजी ने सभी को फरमाया। इस कार्यशाला में अंत में सह सचिव श्री सुरेन्द्रजी कुम्भट द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

शाम को सांय 7 बजे कुशतला में पाठशाला खोलने हेतु मीटिंग की गई एवं अध्यापक की नियुक्ति एवं छात्रों के फॉर्म आ जाने पर पाठशाला प्रारम्भ करने का निर्णय लिया जाएगा। इस मीटिंग में श्री सुरेशजी जैन एवं विभिन्न श्रावकगण उपस्थित रहे।

-महावीर कोठारी, सचिव

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी
छात्र-छात्रा संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण योजना
(प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ एवं समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। अनेक छात्र व्यावसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ ही छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रांजेक्शनस्लिप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-Name : **GAJENDRA CHARITABLE TRUST**, Account Type : *Saving*, Account Number : **10332191006750**, Bank Name : *Punjab National Bank*, Branch : *Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur*, Ifsc Code : **PUNB0103310**, Micr Code : **302022011**, Customer ID : **35288297** निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्यम 9461456489, 7976246596

(प्रतिवर्ष एक छात्रा के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (बालिका), मानसरोवर-जयपुर, संघ और समाज की प्रतिभाशाली छात्राओं के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 2017 से सञ्चालित संस्था है। यहाँ इस संस्था में वर्तमान में 40 अध्ययनरत छात्राओं को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क व्यवस्थाएँ प्रदान की जा रही हैं। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्राओं को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। संस्था को सुचारुरूप से चलाने एवं इन बालिकाओं के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्राओं के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में तथा उनके संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इसमें सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में क्रमिकरूप से प्रकाशित किये जा रहे हैं। संस्थान के लिए पूर्व छात्रों का एवं निम्नलिखित महानुभावों का सहयोग प्राप्त हुआ है-

- | | |
|---|------------|
| 11. श्रीमती सरलाजी जैन, न्यू जर्सी (यू.एस.ए.), पूजनीया मातुश्री स्व. श्रीमती पुष्पाजी स्व. श्री सरदारमलजी दुगड़ की पुण्यस्मृति में। | 1,20,000/- |
| 12. श्री सुमेरचन्दजी चोरड़िया, इन्दौर (मध्यप्रदेश) | 24,000/- |

खाते का विवरण:-Name : **SAMYAGGYAN PRACHARAK MANDAL**, Account Type : *Saving*, Account Number : **51026632997**, Bank Name : *SBI*, Branch : *Bapu Bazar, Jaipur*, Ifsc Code : **SBIN0031843** निवेदक : अशोक कुमार सेठ, मन्त्री। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क फोन नं. अनिल जैन 9314635755

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ- तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 18 अक्टूबर 2022 को आचार्यश्री गुमानचन्द्रजी म.सा की 221 वीं पुण्यतिथि जप-तप-त्यागपूर्वक स्वाध्याय भवन, साहूकारपेट में मनाई गई। स्वाध्यायी बन्धुवर श्री गौतमचन्द्रजी मुणोत ने आचार्यश्री के जन्म-वैराग्य भाव-गुरु सन्निधि- दीक्षा-शिष्य परम्परा का विस्तृत उल्लेख करते हुए गुणगान किये। स्वाध्यायी श्री महावीरचन्द्रजी तातेड़ ने जैनधर्म का मौलिक इतिहास के श्रुतधर खण्ड का वाचन किया। आर.नरेन्द्र कांकरिया ने बताया कि रत्नसंघ के प्रथम पट्टधर के रूप में आचार्यश्री गुमानचन्द्रजी म.सा ने अपने शिष्य रत्न श्री रत्नचन्द्रजी म.सा के सहयोग से राजस्थान की पावन धरा भोपालगढ़ में तेरह सन्तों के साथ इक्कीस बोलों की मर्यादा रखते हुए क्रियोद्धार किया। तीन मनोरथ चिन्तन, जैन संकल्प वाचन, व्रत-नियम-प्रत्याख्यान के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण कल्याणक पर भगवान महावीर की अन्तिम वाणी उत्तराध्ययनसूत्र के मूल का वाचन एवं विवेचन सुन्दर शैली में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री आर. वीरेन्द्रजी कांकरिया ने किया। श्रावक-श्राविकाओं की सामायिक परिवेश में प्रमोदजन्य उपस्थिति रही।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया

हस्तिनापुर-जैन गणित के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोधकार्य हेतु डॉ. अनुपमजी जैन की षष्ठीपूर्ति के अवसर पर उनके परिवार द्वारा घोषित वार्षिक महावीराचार्य पुरस्कार का क्रियान्वयन कोरोना महामारी के नियन्त्रित होने पर 2021 से प्रारम्भ किया गया। पुरस्कार के अन्तर्गत रुपये 25,000/- की सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति समर्पित की जाती है। 19 सितम्बर, 2022 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के सुरम्य परिसर में प्रथम पुरस्कार समर्पण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें 2021 के पुरस्कार हेतु प्रो. आर. सी. गुप्ता (झाँसी) एवं 2022 के पुरस्कार हेतु प्रो. एस. सी. अग्रवाल (मेरठ) के चयन की घोषणा पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी ने की।

-डॉ. अनुपम जैन

बधाई

जयपुर-राजस्थान संस्कृत अकादमी की पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की पूर्व अध्यक्ष, विदुषी डॉ. सुषमाजी सिंघवी को अहमदाबाद में अखिल भारतीय श्वेताम्बर मूर्तिपूजक तपागच्छ जैन महासंघ के द्वारा 16 अक्टूबर, 2022 को श्री जम्बूविजय शताब्दी साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान मुनि श्री जम्बूविजयजी द्वारा सम्पादित मल्लवादी क्षमाश्रमण के द्वादशारनयचक्र ग्रन्थ के हिन्दी अनुवाद कार्य के लिए प्रदान किया गया। यह अनुवाद प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर से प्रकाशित हुआ है।



चेन्नई-चेन्नई के मद्रास विश्वविद्यालय के जैन विद्या विभाग की शोधार्थिनी प्रीति दोशी शाह, बी. कॉम., एम.ए., ने श्रीमद् राजचन्द्र की एक अद्भुत रचना 'अपूर्व अवसर' पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। उन्होंने अपना शोधकार्य विभागाध्यक्ष डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन के मार्गदर्शन में किया है।



अलवर-श्री चिरागजी सुपुत्र श्री दिनेशजी जैन (हरसाना वाले) का तमिलनाडु में वैज्ञानिक पद पर चयन हुआ है। इससे पूर्व आप मुम्बई में जेटीओ के पद पर कार्यरत थे।

-सुमन जैन

दौसा-संघसेवी, अनुभवी कार्यालय सहयोगी श्री प्रहलादजी लखेरा को गत 20 वर्षों से जिनवाणी कार्यालय, जयपुर में विशेष उल्लेखनीय कार्य करने के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा 'संघ-सेवा-सम्मान-2021' से जोधपुर में 16 अक्टूबर को आयोजित संघनिष्ठा दिवस के अवसर पर सम्मानित किया गया।



श्रद्धाञ्जलि

चेन्नई-अनन्य गुरुभक्त संघ-सेवी सुश्रावक श्री महावीरचन्दजी भण्डारी का 26 अक्टूबर 2022 को देहावसान हो गया। आपकी सभी सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा-भक्ति थी एवं आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करते थे। चेन्नई में पधारने वाले संत-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में आप सदैव तत्पर रहते थे। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई पधारने पर आप सहित समस्त भण्डारी परिवार ने सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्मारोधना के साथ आतिथ्य-सेवा का लाभ प्राप्त किया था। पारिवारिक संस्कारों में संस्कारित भण्डारी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी भण्डारी परिवार सदैव समर्पित है। चेन्नई तथा जोधपुर दोनों स्थानों पर रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी प्रवृत्तियों में भण्डारी परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता है।



-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रुक्मणीदेवीजी धर्मसहायिका स्व. श्री धन्नालालजी कोठारी का 9 अक्टूबर, 2022 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपने नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय के साथ अनेक छोटी-बड़ी तपस्याएँ भी की। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के समर्पित परिवारों में से एक है।



-विनयचन्द डागा, कार्याध्यक्ष

आवासन-मण्डल, सवाईमाधोपुर-धर्मानुरागी सुश्राविका श्रीमती पिंकीजी धर्मसहायिका श्री रमनजी पुत्रवधू श्री रमेशचन्दजी जैन (डांगरवाड़ा वालों) का 25 सितम्बर, 2022 को 36 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सुशील एवं संस्कारशील श्राविका थीं। आप सामायिक-स्वाध्याय करने के साथ-साथ प्रतिक्रमण थोकड़े आदि की भी जानकार थीं एवं श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा में भाग लिया करती थीं। आप धार्मिक कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग लेती थीं। आपने तेला, अठाई एवं अन्य तपस्या भी की हैं।



-नरिलम्बर जैन

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री कमलेशजी जैन सुपुत्र स्व. श्री राजूलालजी जैन (अलीगढ़ वाले) का 12 अक्टूबर, 2022 को देवलोकगमन हो गया। आपकी सभी सन्त-सतियों के प्रति श्रद्धा थी। आप एवं आपके परिवार के सभी सदस्य धर्म के क्षेत्र में सदैव अग्रणी रहते हैं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।



जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विमलादेवीजी धर्मसहायिका श्री रिखबचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले), शान्तिनगर बजरिया का 21 सितम्बर, 2022 को देवलोकगमन हो गया। आप बहुत ही मिलनसार एवं शान्त स्वभाव की थी तथा प्रतिदिन सामायिक-स्वाध्याय करती थीं। आपके शीलव्रत के प्रत्याख्यान थे। आपका परिवार रत्नसंघ का समर्पित परिवार है। आप तीन पुत्र और एक पुत्री सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



जयपुर-धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती रूपलताजी धर्मसहायिका श्री लालचन्दजी जरगड़ (पुत्रवधू स्व. श्री बंशीलालजी-प्रेमकुमारीजी जरगड़) का 72 वर्ष की आयु में 3 अक्टूबर, 2022 को देहावसान हो गया। आपको परिवार में विरासत से धर्माधना के संस्कार मिले। तपस्या में आपने 31, 11, 9 उपवास, अठाई आदि अनेक प्रकार की तपस्याएँ कीं। आप निरन्तर धर्मध्यान एवं शास्त्र अध्ययन करती रहती थीं। कर्तव्यपरायणता, सेवा-भावना, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप देव-गुरु-धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित थीं। साधु-साध्वी की सेवा और वैयावच्च में सदैव अग्रणी रहती थीं। आप नित्य 5 सामायिक एवं दैनिक प्रतिक्रमण करती थीं। सदैव प्रवचन में जाती तथा आपने नवकारसी, पौरसी, उपवास, कल्याणक तप, बीस स्थानक तप, नवपद ओली, मासखमण और अनेकों बार पन्द्रह उपवास, अठाई, तेले तथा अनेक छोटे-छोटे तप किये। आप पिछले तीस वर्षों से चौविहार नियम एवं रात्रिभोजन-त्याग और 10 वर्षों से ब्रह्मचर्य व्रत का पालन कर रही थीं। आप बहुत समय से मासखमण आदि का पारणा कराने हेतु औषधि प्रदान करती थी। आप अपना भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं सभी सम्बद्ध संस्थाओं के सदस्यों की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।

दीक्षा दिवस गणिवर का

श्री मनमोहनचन्द बाफणा

(तर्ज :: फूल तुम्हें भेजा है...)

दीक्षा जयन्ती पाकर गुरुवर, वन्दन को स्वीकार करो, पूज्य गणिवर हम शिष्यों को, भव सागर से पार करो, आदिनाथ जन्मोत्सव शुभ दिन, खुशियाँ भर-भर लाया है, चन्दन माटी पीपाड़ की धरती, गाँधी कुल को दिपाया है, ज्योतिर्धर को पाकर हीरा, हस्ती गुरु ने उद्धार किया।। गुरु ने तराशा इतना उज्ज्वल, ज्ञान की पैनी धार से, स्वाध्याय में ऐसा गढ़ दिया, शास्त्रों की अमृत वाणी से, रत्न गणी सम चिन्तन पाया, संयम दिवस वह आज मिला।। ज्ञान, ध्यान संग आत्म साधना, वीतराग पथ पाया है, स्व चिन्तन में रमकर गुरु ने, मौन से गरिमा बढ़ायी है, स्वाध्याय संघ एवं ध्यान शिविर से, जग में महिमा छापी है।। रवि सम चमके गुरुवर ऐसे, ज्ञान प्रकाश का पार नहीं, शास्त्रों का है भरा खजाना, अमीरस की रस धार बही, आत्म रमण की अमृत बूँदे, गुरु देकर उद्धार करो।। दीक्षा दिवस की शुभ दिवस में, प्रभु से प्रार्थना करते हैं, युगों-युगों तक चमके हीरा, बढ़के ज्योति प्रकटायी है, गणी चरणों में लख-लख वंदन, रत्नवंश जय जयकार है।।

-128/376, एच 2 ब्लॉक, जैन सदन, किंदवई नगर, कानपुर (उत्तरप्रदेश)

मुझे ज्ञान दो, वरदान दो प्रभु

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

मुझे ज्ञान दो, वरदान दो प्रभु, साधना करता रहूँ।
कष्ट, परीषह गर जो आए, समभाव से सहता रहूँ।।
मुझे ज्ञान दो, वरदान दो प्रभु ...।।टेरे।।
मञ्जिलों की ओर मेरे, ये कदम बढ़ते रहें,
मेरे अधरों पर सदा ही, नाम प्रभुवर का रहे।
बस एक चिन्तन है यह मेरा, सद्राहों पर चलता रहूँ,
मुझे ज्ञान दो, वरदान दो प्रभु ...।।1।।
बहुत भटका हूँ जहाँ मैं, शान्ति को पाया नहीं,
गफलतों में ही रहा मैं, निज घर में आया नहीं।
मन को साधूँ ज्ञान से मैं, प्रमाद से बचता रहूँ,
मुझे ज्ञान दो, वरदान दो प्रभु ...।।2।।
व्रत, नियमों की है महिमा, महत्त्व कुछ समझा नहीं,
मात्र जिनवाणी है ऊँची, और कुछ अच्छा नहीं।
जिनवचनों में हो श्रद्धा, प्रभु आज्ञा में चलता रहूँ,
मुझे ज्ञान दो, वरदान दो प्रभु ...।।3।।
धर्म करणी हो सदा ही, वक्त को खोऊँ नहीं,
भव मानव का मिला है, अनजान बन सोऊँ नहीं।
आत्मा का ध्यान बस हो, पाप से डरता रहूँ,
मुझे ज्ञान दो, वरदान दो प्रभु ...।।4।।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

- 8000/- मण्डल सत्साहित्य की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक**
- 825 श्री संदीपजी मुणोत, धुले (महाराष्ट्र)
- 1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक**
- 16349 श्री प्रकाशचन्दजी खिंवरसा, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- 16350 श्री नानेशजी पगारिया, पाली (राजस्थान)
- 16351 श्री शान्तिमलजी भंसाली, बालोतरा (राजस्थान)
- 16352 श्री अरविन्दजी मेहता, जोधपुर (राजस्थान)
- 16353 श्री संदीपजी मुणोत, धुले (महाराष्ट्र)
- 16354 श्री राजेन्द्रजी कांकरिया, धुले (महाराष्ट्र)
- 16355 श्री सुरेशचन्दजी लोढ़ा, मुम्बई (महाराष्ट्र)
- जिनवाणी प्रकाशन योजना हेतु साभार**
- 100000/-श्री सन्देशजी, हेमचन्दजी डूंगरवाल, मालेगाँव-धुले की ओर से सप्रेम।
- 100000/-मैसर्स सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट एवं मैसर्स किरोड़ीमल उमरावमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई
- जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार**
- 25000/-श्री नीरजजी जैन, कुन्नूर-नीलगिरि, स्वयं के 36 उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में।
- 21000/-श्री बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजेन्द्रजी बाघमार, मैसूर, पूज्य पिताजी श्री सोहनलालजी बाघमार के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।
- 11100/-श्री राजेन्द्रजी चोरड़िया, बेंगलोर, सुपुत्र चि. हर्षजी संग सौ.कां. दीक्षिताजी सुपुत्री श्री इन्दरचन्दजी डूंगरवाल बेंगलोर के शुभ-विवाह 04 जुलाई 2022 को सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।
- 11000/-न्यू कोचेटा टैक्सटाइल्स, ग्राम-दांता (आखिरी) गीगल, किशनगढ़-अजमेर की ओर से सप्रेम।
- 11000/-श्री हस्तीमलजी, नेमीचन्दजी, श्रीपालजी डोसी, मेड़तासिटी, श्रीमती मंजूजी डोसी धर्मपत्नी श्री नेमीचन्दजी डोसी के संथारा सीझने के उपलक्ष्य में।
- 5100/- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, मेड़तासिटी, अध्यक्ष श्री जबरचन्दजी चोरड़िया, मन्त्री श्री हस्तीमलजी डोसी, मेड़तासिटी, चातुर्मास के उपलक्ष्य में।
- 3000/- श्री शान्तिनगर श्रीसंघ, बेंगलोर की ओर से सप्रेम।
- 2100/- श्री सुगनचन्दजी, संदीप कुमारजी बोथरा (हीरादेसर वाले), चेन्नई की ओर से सप्रेम।
- 2100/- श्री अशोक कुमारजी, मनीष कुमारजी जैन, कुन्हारी-कोटा, सुपौत्र चि. निर्वेदजी जैन के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।
- 2100/- श्रीमती मदनकं वरजी-हुकमीचन्दजी डोसी, शान्तिनगर-बेंगलूरु, सुपुत्र श्री विनोद कुमारजी (सी.ए.) की 16 नवम्बर, 2022 को 11वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में।
- 1100/- कोचेटा परिवार, मदनगंज-किशनगढ़, चि. सुनीलजी एवं गौतमजी कोचेटा के 9 उपवास की तपस्या के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री सुभाष कुमारजी, अशोक कुमारजी, राजकुमारजी, मनोज कुमारजी बरड़िया, मदनगंज-किशनगढ़, श्रीमती मधुजी बरड़िया के मासक्षमण के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री राजेन्द्रजी, सौरभजी, हर्षजी चोरड़िया, बेंगलोर की ओर से सप्रेम।
- 1100/- श्री महेन्द्रजी गांग, सूरत, जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री रिखबचन्दजी, गौतम कुमारजी, पारसचन्दजी, शीतलकुमारजी जैन (श्यामपुरा वाले), सवाई माधोपुर, सुश्राविका श्रीमती विमलादेवीजी जैन का 21 सितम्बर को देहावसान होने की पुण्यस्मृति में।
- 1100/- श्री रवीन्द्रजी, आनन्दजी, मोहितजी जैन (चकेरी वाले), सवाईमाधोपुर, सुश्रावक श्री जगदीशजी जैन (मास्टर साहब) की 23 अक्टूबर, 2022 को प्रथम पुण्यतिथि की पुण्यस्मृति में।
- गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन हेतु**
- (1) श्री रितुलजी सुपुत्र स्व. श्री राजेन्द्रजी पटवा, जयपुर
- (2) श्री सोहनलालजी, बुधमलजी बाघमार, कोसाणा-मैसूरु, (स्व. श्री अभिषेकजी बाघमार की स्मृति में)।
- (3) श्रीमती चेतनाजी भोजराजजी बोथरा, मुम्बई
- (4) श्री धीरेन्द्रजी सुपुत्र श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, मुम्बई

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले अधिकतम 20 वर्ष की आयु के श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है। उत्तर प्रदाता अपने नाम, पते, आयु तथा मोबाइल नम्बर के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड आदि का भी उल्लेख करें।

Believe in yourself

Marry Ellen Joseph

Believing in yourself
standing for what you believe in
regardless of the odds against you
and the pressure that tears at your resistance
means courage

Keeping a smile on your face
when from the inside you feel like dying
for the sake of supporting others
means strength

Stopping at nothing
and doing what in your heart
you know is right
means determination
Doing more than is expected
to make another's life a little more bearable
without uttering a single complaint
means compassion

Helping a friend in need
no matter the time or effort
to the best of your ability
means loyalty

Giving more than you have
and expecting nothing
but gratitude in return

means selflessness

Holding your head high
and being the best you know you can be
when life seems to fall apart at your feet
and facing each difficulty with
the confidence that time will bring
you better tomorrows and never giving up
means believing in yourself

समय के साथ बदलती हैं कुछ बातें

श्रीमती निधि दिनेश लोढ़ा

बात उस समय की है जब हम एक छोटे से गाँव में रहते थे। 80 और 90 के दशक में कारें बहुत कम होती थीं। उस समय हमारे गाँव में शायद एक-दो कारें होंगी।

मेरा ननिहाल अजमेर में था और मेरे नानाजी के पास एक चमचमाती सफेद रंग की अम्बेसेडर कार थी। कई बार गर्मी की छुट्टियों में नानाजी हमें लेने उसी अम्बेसेडर कार से आते थे। हम भी बैठकर फूले नहीं समाते, मानो कोई किला ही फतह कर लिया हो।

कुछ सालों के बाद हम भीलवाड़ा आ गये। यहाँ घर का पिछला हिस्सा पापा ने किराये पर देने के लिए बनाया था। किरायेदार भी रहने आ गये, लेकिन वे हमारे लिये सिर्फ किरायेदार नहीं, बल्कि परिवार का ही हिस्सा

थे, या यूँ कहूँ हमारे परिवार का अभिन्न अंग बन गये थे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

कुछ समय के पश्चात् उनके पास आई मारुति 800 कार। वे आस-पास कहीं भी जाते, बाजार, मेला या मन्दिर अक्सर हमें भी साथ ले जाते। जब हम कहते कि सब कैसे बैठेंगे तो आण्टीजी हँसकर कहते— ‘कितनी-सी देर का तो रास्ता है, थोड़ा आगे-पीछे होकर बैठ जायेंगे। सबके साथ जाने का मजा अलग ही है। साड़ियाँ हो या कपड़े, उनको लेने हो या हमें, पर हम सब जाते साथ-साथ। मुझे अक्सर उनकी गोद में बैठना पड़ता, वे हँसकर कह देते कि ये तो बहुत दुबली-पतली है बैठ जाओ, हमारे पैर भी दब जायेंगे।

समय बीत गया और आज अम्बेसेडर कार लगभग लुप्त हो गई है। एक समय उस कार को सड़क का राजा कहा जाता था। चाहे कपड़ों में सल पड़ जाये, पर सबके साथ उस कार में फँस-फँस के जाना भी अच्छा लगता था।

अब सबके पास बड़ी-बड़ी और बेहतर गाड़ियाँ हो गई हैं, लेकिन अब अपनों से ज्यादा चिन्ता कपड़ों की होती है कि कपड़ों में कहीं सलवटें न पड़ जाये और चिपक-चिपक के मुश्किल से बैठना किसी को भी पसन्द नहीं। सच कहूँ तो मुझे भी नहीं। शायद अम्बेसेडर कार की ही तरह अपनापन भी थोड़ा लुप्त हुआ है, जमाने की हवा सबको लगती ही है, किसी को कम तो किसी को अधिक। पर जब बैठे-बैठे पुराने दिनों को याद करते हैं तो लगता है साधन भले ही कम थे, पर प्यार बहुत था।

हमें विकास कर आगे ही बढ़ते रहना है या अपनापन भी समेटकर साथ रखना है, निर्णय हम सब स्वयं करें।

-बरी 2402, इण्डियाबुल्स ब्लू, डॉ. ई. मोस रोड, वर्ली नाका, मुम्बई-400018 (महाराष्ट्र)

प्रतिक्रमण-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- प्रतिक्रमण करने से क्या-क्या लाभ हैं?

उत्तर- 1. लगे दोषों की निवृत्ति होती है। 2. प्रवचन माता की आराधना होती है। 3. तीर्थङ्कर नाम कर्म का उपार्जन होता है। 4. व्रतादि ग्रहण करने की भावना जगती है। 5. अपने दोषों की आलोचना करके व्यक्ति आराधक बन जाता है। 6. इससे सूत्र की स्वाध्याय होती है। 7. अशुभ कर्मों के बन्धन से बचते हैं।

प्र. 2- पाँच प्रतिक्रमण मुख्य रूप से कौनसे पाठ से होते हैं?

उत्तर- मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण-अरिहंतो महदेवो, दंसण समकित के पाठ से। अन्नत का प्रतिक्रमण-पाँच महाव्रत और पाँच अणुव्रत से। प्रमाद का प्रतिक्रमण-आठवें व्रत एवं 18 पापस्थान के पाठ से। कषाय का प्रतिक्रमण-अठारह पापस्थान के पाठ, क्षमापना पाठ और इच्छामि ठामि के पाठ से। अशुभ योग का प्रतिक्रमण-इच्छामि ठामि, अठारह पाप स्थान के पाठ और नवमें व्रत से होते हैं।

-‘श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र’ पुस्तक से

अभी बाकी है वह दिवाली

श्री तरुण बोहरा ‘तीर्थ’

अनेकों दिवाली बीत चुकी हैं..

यह दिवाली भी बीत गई पर..

अभी बाकी है वह दिवाली।

अभी जिज्ञासा का नन्हा दीप जला है ..

केवलज्ञान का सूर्य चमकाने वाली..

अभी बाकी है वह दिवाली।

अभी कुछ पुण्य से पाई है यह लक्ष्मी ..

मोक्ष लक्ष्मी को दिलाने वाली..

अभी बाकी है वह दिवाली।

अभी पापों की कड़वाहट मिट रही है ..

अध्यात्म अमृत के मिठास वाली..

अभी बाकी है वह दिवाली।

अभी स्पर्श हुई है समता की कुछ बूँदें ..

समभाव की बरसात वाली..

अभी बाकी है वह दिवाली।
अभी तो बस चिंगारी लगी है भीतर में..
सम्यक् पराक्रम के विस्फोट वाली..

अभी बाकी है वह दिवाली।
अभी कुछ इच्छाओं का निर्वाण हो रहा है ..
सम्पूर्ण तृष्णा के निर्वाण वाली..

अभी बाकी है वह दिवाली।
अभी तीर्थ की पावन शुरुआत हुई है ..
वीर को महावीर बनाने वाली...

अभी बाकी है वह दिवाली।
- 'जिनशासन', 14, अग्रहारम स्ट्रीट, चिन्तादरीपेट,
चेन्नई-600002 (तमिलनाडु)

Everyone Loves his Life

Compiled

Once there was a king. He had given punishment of hanging till death to some culprits after seven days. Due to this all the prisoners were unhappy. One afternoon the prince went for a round in the jail. There he saw that all the prisoners were unhappy. The prince requested the king to do something to make these people happy. King tried a lot of different ways to make them happy. All of them were fed 32 tasty food items and given good clothes to wear. At last he also gave a lot of jewellery, but still they were not happy. The day of the punishment arrived. The Prince became very sad and the king did not know what to do? In the end he said that no one will be hanged to death. All the prisoners were very happy. And so was the prince.

Moral : When death is near, none of the worldly things give us happiness. Everyone loves his life. Therefore we should save as many lives as possible.

भाई बहनों कृपया ध्यान दें

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

संस्कारों की सौरभ लेकर, जीवन को महकाना है,

विनय, विवेक का परिचय देकर, अनुशासन में रहना है।
हित की बातें कहें बड़े तो, उस पर ध्यान लगाना है,
स्वच्छन्दता को नहीं अपनाना, मर्यादा में रहना है॥

संस्कारों की सौरभ लेकर.....॥1॥
जीवन के हर क्रदम-क्रदम पर, सहनशीलता रखना है,
कड़वे घूँट भी पीने पड़ें तो, समभावों में रहना है।

गिलाशिकवा कभी न करना, मन विपरीत हो कार्य कोई,
आदर्शों को अपना करके, जीवन श्रेष्ठ बनाना है॥

संस्कारों की सौरभ लेकर.....॥2॥
साधन बढ़ गए भौतिकता के, घर-घर में अम्बार है,
नहीं शान्ति है जीवन में, जीवन बना बेज़ार है।

मोबाइल के मायाजाल में, आज ज़िन्दगी फँसी हुई,
बच सको जितना भी बचना, इसमें ही बस सार है॥

संस्कारों की सौरभ लेकर.....॥3॥
-जनता साड़ी सेक्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स, स्टेशन
रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

शाकाहार के आठ दोहे

डॉ. दिलीप धींग

सभ्यता की सुबह है, संस्कृति का सत्कार।
परम्परा की श्रेष्ठता, जय-जय शाकाहार॥1॥
मानवता का धर्म है, प्राणिमात्र से प्यार।
ऋषि-मुनि सब कह गए, कर लो शाकाहार॥2॥
सहनशीलता का जनम, शान्ति का आधार।
मानवता का मान है, सात्त्विक शाकाहार॥3॥
घटती है उत्तेजना, बढ़ता धैर्य अपार।
टल जाती है आपदा, जब हो शाकाहार॥4॥
मानव के अधिकार की, बातों का सत्कार।
मूक प्रजा को भी मिले, जीने का अधिकार॥5॥
दिल दहले मन रो पड़े, नयना अश्रुधार।
कत्लघरों का रोज ही, सुनकर हाहाकार॥6॥
कटते-मरते जीव की, जो निकले चीत्कार।
क्रूर कुटिल इंसान को, करती है धिक्कार॥7॥
जंगल में परिषद् जुटी, सबका एक विचार।

मानव नामक जानवर, है सबमें खूँखार!!॥८॥
-उमराव सदन, 53, डोरेनगर, उदयपुर-313002
(राजस्थान)

संवाद-नाटिका

किसी का मज़ा, किसी को सजा आहें उनकी, वाहवाही हमारी

श्रीमती सुमन कोठारी

“अन्तर्मन में दीपक का जलना।

अध्यात्म के आलोक में साक्षात्कार है करना।”

दीपावली का त्यौहार जगमगाती दीपमालाओं की रोशनी के माध्यम से हम सब में नया जोश, नई उमंग, नई आशाओं को प्रदीप्त करने का संदेश लेकर आता है। इसके आगमन की तैयारी सभी जन जोर-शोर से करते हैं। लेकिन क्या इस उत्साह, उमंग एवं जोश में कहीं हम ऐसा तो नहीं कर रहे, जिससे अनर्थ हो रहा हो?

“किसी को मज़ा, किसी को सजा।”

“आहें उनकी, वाहवाही हमारी”

संवाद नाटिका प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे इन निरपराध प्राणियों के करुण क्रंदन से हमारा और आप सबका हृदय भी करुणा से भर उठे।

दृश्य प्रथम-मैना-मिट्टू भैया! मिट्टू भैया!

तोता-क्या मैना बहन! बोलो क्या बात है?

मैना-भैया (दुःखी मन से) एक तेज आवाज़ से मेरा अण्डा घोंसले से नीचे गिर गया है।

तोता-क्या कहूँ मैना बहन, मेरा भाई भी अभी तक नहीं आया है।

मैना-आज का दिन तो हम मूक प्राणियों के लिए वज्रपात का दिन है।

तोता-हाँ बहन! मनोरञ्जन के मद में ये मानव दिवाली की रोशनी में हमारी चिन्ता का ही निर्माण करते हैं।

डरा-सहमा बैठा है दुबका हुआ सा बन्दर

(अचानक पटाखों की आवाज़ से उछलकर आता है और सहमा-सहमा बोलता है)

बन्दर-खरगोश दादा! हमने ऐसे कौनसे कर्म किये हैं कि कभी ये मनुष्य हमें अपने सौन्दर्य-प्रसाधनों के लिए उपयोग में लेकर वेदना पहुँचाते हैं और कभी मौज-मस्ती के लिए इन पटाखों तथा बम के रूप में हमारे जीवन का अन्त कर देते हैं।

दृश्य द्वितीय-दो जने-अरे! बच्चों तुम लोग यह क्या बना रहे हो और ये तुम्हारे हाथों में क्या हो गया? बच्चों के हाथों में घाव हो रहे हैं एवं पट्टियाँ बँधी हैं।

बच्चे-बाबूजी! हम लोग पटाखे एवं बम बना रहे हैं। यह कार्य करने से ही हमारा पेट भरता है। बम बनाते-बनाते हमारे हाथ छिल गए हैं बाबूजी!

उनकी आँखें भर आयीं।

बाबूजी-तो क्या तुम लोग पढ़ने भी नहीं जाते?

बच्चे-नहीं साहब! हमारे नसीब में पढ़ाई कहाँ है। (वे रोने लगे।)

दृश्य तृतीय-रीटा-अरे बहन! तुम इस बार दीपावली कैसे मना रही हो? मैंने अपने लिए नई ड्रेस बनवायी है और पापा-मम्मी को कह दिया है, मेरे लिए 1,000 लड़ी वाले बम एवं अनार पटाखा जरूर लाना।

मीता-हाँ! हाँ! मैंने भी नया सूट सिलवाया है, फिर हम लक्ष्मीजी का पूजन करेंगे। मम्मी कहती है इससे हमारे घर में लक्ष्मी अर्थात् पैसे आयेंगे। मेरी बहुत-सी सहेलियाँ आयेंगी, हम सब मिलकर पटाखे छुड़ायेंगे।

बहुत-सी सहेलियाँ-बड़ा मजा आएगा।

गीता-अरे सुनो सुनो! अपनी जो दोस्त है न मीना, उसके कपड़ों में पटाखे छुड़ाते वक्त आग लग गई। वह अस्पताल में आईसीयू में है, चलो उसकी तबीयत पूछने चलते हैं।

सब दोस्त हॉस्पिटल जाती हैं।

अरे! अरे! यह क्या हो गया!!! (वह वेदना से छटपटा रही थी और देखते ही देखते मृत्यु को प्राप्त हो गयी। सब सखियों के हृदय काँप उठे)

दृश्य चतुर्थ-(तभी टी.वी. पर समाचार आते हैं)

समाचार प्रस्तोत्री—नमस्कार! आज के मुख्य समाचार, कल शाम मुम्बई शहर में पटाखों के कारण एक तार ने आग पकड़ ली और आग ने भयंकर रूप धारण कर लिया। तीन मकान ने आग पकड़ ली, 20 लोगों की मृत्यु एवं 50 घायल हो गए।

जयपुर शहर में 25 बच्चे बम से घायल होकर अस्पताल में भर्ती हैं। दिल्ली में भी एक फैक्ट्री में रॉकेट गिरने से आग लग गई। 'समाचार समाप्त हुए'

दृश्य पाँच—मालती—हाँ हाँ दोस्त! मैं भी अज्ञानतावश हर वर्ष ऐसे ही दीपावली मनाती थी, लेकिन जब मेरी दादी माँ एवं मम्मी मुझे महाराज साहब के पास दर्शन कराने के लिए ले गए, उन्होंने हमें बड़े प्यार से समझाया।

महाराज साहब—तुम सब बहुत अच्छे बच्चे हो, मेरी बात ध्यान से सुनो। जैसे हमारे जीव होता है, हमें कोई कष्ट देता है, थप्पड़ मारता है, तो हमें बहुत दुःख होता है वैसे ही एकेन्द्रिय से पञ्चेन्द्रिय तक सभी जीवों को कष्ट होता है।

बच्चों! क्या हम उन्हीं शान्तिनाथ भगवान के अनुयायी हैं, करुणा के अवतार नेमिनाथ, अहिंसा का सन्देश देने वाले भगवान महावीर के भक्त हैं?

दृश्य छह—भगवान शान्तिनाथ के पूर्व भव मेघरथ राजा की कथा उनके आँखों के सामने आ गयी। मेघरथ राजा एक दिन राज सभा में सिंहासन पर बैठे थे। तभी एक घायल कबूतर उनके सामने आकर गिरता है। वह काँप रहा था।

कबूतर—राजन्! मुझे अभयदान दीजिए, मुझे बचाओ।

मेघरथ राजा—तुम निर्भय हो जाओ, तुम मेरी शरण में आये हो (थोड़ी देर में एक बाज़ आया)।

बाज़—राजन्! इस कबूतर को मुझे दे दीजिए, यह मेरा शिकार है। मुझे इसका मांस चाहिए।

राजा—नहीं, इसकी रक्षा करना मेरा धर्म है। यह मेरा शरणागत है।

बाज—यह मेरा भोजन है, इससे मेरी भूख शान्त होगी।

राजा—तुम्हें मांस चाहिए तो कबूतर जितना मांस में अपने शरीर का देता हूँ।

बाज—ठीक है राजन्! तराजू एवं छुरी मँगवाइये।

संवादकर्ता—तराजू के एक पलड़े में कबूतर को बैठाया गया और दूसरे में राजा अपने शरीर का मांस काट-काट कर रखने लगा, कबूतर का पलड़ा भारी होता गया और सब तरफ हाहाकार मच गया।

तभी वह बाज एवं कबूतर अपने असली देव रूप में प्रकट हुए।

दो देव—धन्य हो राजन्! धन्य हो आपकी करुणा! इन्हीं मेघरथ राजा ने कबूतर को बचाकर तीर्थकर गोत्र बाँधा था। वे 16वें तीर्थकर शान्तिनाथजी बने।

एक बच्ची—मम्मी! तो क्या हम लक्ष्मी पूजन भी नहीं करेंगे, दीपावली नहीं मनाएँगे।

मम्मी—बच्चों ऐसा नहीं है हम दीपावली अवश्य मनाएँगे, जैसी दीपावली भगवान महावीर ने मनाई थी, जैसा उन्होंने फरमाया था।

देवी-देवताओं का पूजन मिथ्यात्व का पोषण करने वाला है, संसार को बढ़ाने वाला है, हमें ऐसी रोशनी जीवन में करनी है जो स्थायी हो, शाश्वत हो, क्षणिक न हो। हम अपने हृदय में ज्ञान का, करुणा का, दया का ऐसा दीप जलाएँ, जिससे अनन्त जन्मों का अज्ञान एवं मिथ्यात्व रूपी अन्धकार दूर हो जाय।

सच्चे अर्थों में हम भी भगवान महावीर तथा गौतम स्वामी की तरह निर्वाण एवं केवलज्ञान रूपी दीपक को प्रज्वलित कर सच्चे अर्थों में दीपावली मना सकें।

सब मिलकर—चलो चलें, आज हम सब मिलकर महाराज साहब के दर्शन करने चलते हैं एवं संकल्प लेंगे कि हम पटाखे नहीं छुड़ाएँगे।

भगवान पार्श्वनाथ की अनुकम्पा

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 दिसम्बर, 2022 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपना नाम, आयु, मोबाइल नम्बर तथा पूर्ण पते के साथ बैंक विवरण-बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस. कोड इत्यादि का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

गाँव के बाहर बहुत लोग जा रहे थे। सबको कुतूहल हो रहा था। बात कुछ ऐसी थी कि गाँव के बाहर कमठ नाम का तापस धूनी लगाकर बैठा था।

उसके सिर पर जटा थी और शरीर पर राख लगाई हुई थी। चारों ओर जलती हुई ज्वालाओं के बीच में एक मात्र लंगोट पहनकर वह बैठा था और अग्नि की आतापना ले रहा था। उस तापस को देखकर लोग नमन कर रहे थे। तापस भी हाथ उठाकर सबको आशीर्वाद दे रहा था।

उस समय भगवान पार्श्वनाथ अपनी बाल्य अवस्था में थे। वे जन्म से ही मति, श्रुत और अवधि इन तीन ज्ञान के धारक थे। अवधिज्ञान के द्वारा उन्हें लगा कि वहाँ जाने से उपकार होगा, अतः वे भी वहाँ गये। बालक पार्श्वनाथ का हृदय उस अज्ञानी तापस के तप से दुःखी था, कारण जलती हुई धूनी में जो लकड़ियाँ डाली गई थीं, उनके बीच में एक ज़िन्दा नाग जल रहा था। बालक पार्श्वकुमार ने अपने अवधिज्ञान द्वारा इस अनर्थ को देखा। उनके हृदय में अनुकम्पा का स्रोत बहने लगा।

पार्श्वकुमार ने उस तापस के पास जाकर कहा- “अरे तापस! आप यह क्या कर रहे हैं? तुम्हारी धूनी की लकड़ियों के बीच में ज़िन्दा नाग जल रहा है। यह तो घोर हिंसा है। यह तप सच्चा तप नहीं है। इससे तो लाभ के

बदले हानि ही हो रही है।”

पार्श्वकुमार का यह कथन सुनकर और अपना अपमान समझकर तापस गुस्से में जोर से बोला- “ऐ लड़के! क्या बकवास करता है? यह तप, ध्यान, आतापना तेरी समझ के बाहर है। यह बच्चों का काम नहीं है। छोटे मुँह बड़ी बात मतकर। यह तो हम जैसे बड़े अनुभवी और ज्ञानियों का ही काम है, तेरे जैसे अबोध का नहीं।”

पार्श्वकुमार ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया और अपने सेवकों के द्वारा धूनी में से लकड़ी निकलवाकर कटवाई। उस लकड़ी में से तड़पता हुआ अधजला नाग निकला। यह देखकर तापस का मुँह फीका पड़ गया और वह गुस्से में लाल-पीला होता हुआ अपने अपमान का बदला लेने के भाव रखकर वहाँ से भाग गया।

पार्श्वकुमार ने अधजले नाग के पास जाकर नमस्कारमन्त्र सुनाया। इस तरह नाग का ध्यान नमस्कारमन्त्र सुनने में तल्लीन हो गया और मन ही मन उसने पार्श्वकुमार का उपकार माना। मृत्यु के समय उसका चित्त समता और धर्मध्यान में रहने से, वह मृत्यु पाकर भवनपति नाम के देवों के इन्द्र ‘धरणेन्द्र’ के रूप में उत्पन्न हुआ।

कमठ तापस आयुष्य पूर्ण करके, मृत्यु पाकर मेघमाली नाम का देव बना।

पार्श्वकुमार बड़े हुए। उनके पिताजी ने उन्हें राज्य सौंपा, लेकिन उन्होंने स्वीकार नहीं किया और एक वर्ष तक दान देकर दीक्षा अङ्गीकार की। इस दान को वर्षीदान कहते हैं।

एक बार भगवान पार्श्व कायोत्सर्ग करके ध्यान में खड़े थे। उस समय उस मेघमाली देव को (पूर्वभव का तापस) पूर्व का वैर याद आया और द्वेषभाव से उसने भगवान को अनेक प्रकार की घोर यातनाएँ तथा उपसर्ग देने शुरू किये।

आकाश में बिजली चमकाई और भयंकर गर्जना के साथ जोरदार बारिश बरसाने लगा। उसके कारण जमीन पर बहुत जोर से पानी बहने लगा। वह पानी एकत्र होकर थोड़ी ही देर में भगवान के कान तक पहुँच गया। लेकिन भगवान ध्यान से विचलित नहीं हुए। उनका ध्यान अविचल और एकाग्रतायुक्त था। इतनी ही देर में धरणेन्द्रदेव का आसन चलायमान हुआ और उन्होंने अवधिज्ञान से मेघमाली द्वारा भगवान को तकलीफ देते देखा।

धरणेन्द्र शीघ्र गति से वहाँ आये और वैक्रिय रूप धारण करके ध्यानस्थ भगवान के सिर के ऊपर नाग के फण से छत्र बनाया फिर भगवान के पैर के नीचे लम्बी हण्डी वाले कमल की रचना की, जिससे भगवान को पानी स्पर्श न हो सके। ऐसी घटना घटने के बावजूद भी भगवान किसी के ऊपर राग या द्वेष किये बिना अपने ध्यान में लीन रहे।

धरणेन्द्र देव ने मेघमाली देव को कठोर शब्दों में फटकारते हुए कहा—“अरे दुष्ट! तू यह क्या कर रहा है? इन तीन लोक के नाथ को कष्ट देकर क्यों पाप कर्मों से भारी बन रहा है? तू तेरी माया जल्दी समेट ले।”

मेघमाली देव धरणेन्द्र की वाणी सुनकर भयभीत हो गया। उसने तुरन्त ही अपनी सारी माया समेट ली। उसके बाद उसने भगवान से माफी माँगी और वहाँ से चला गया।

श्री पार्श्वनाथ भगवान वर्तमान चौबीसी में तेईसवें तीर्थङ्कर हुए हैं। भगवान महावीर स्वामी के माता-पिता त्रिशलादेवी-सिद्धार्थ राजा भी भगवान पार्श्वनाथ के ही अनुयायी थे।

- 'जैन पाठ्यक्रम पुस्तक - 1' पुस्तक से

- प्र. 1 भगवान पार्श्वनाथ बालक थे, तब उन्हें कितने ज्ञान थे?
- प्र. 2 मेघमाली को धरणेन्द्र का भय क्यों लगा?
- प्र. 3 गाँववासियों के कुतूहल का क्या कारण था?
- प्र. 4 पार्श्वकुमार ने तापस के यज्ञ को सच्चा क्यों नहीं बताया?
- प्र. 5 वर्षीदान किसे कहते हैं?
- प्र. 6 भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से हमें क्या प्रेरणा मिलती है? संक्षेप में लिखिए।

TRUE WORDS

HOW TO SUCCEED IN LIFE?

- Talk - Softly;
- Eat - Sensibly;
- Breathe - Deeply;
- Sleep - Sufficiently;
- Dress - Smartly;
- Act - Fearlessly;
- Work - Patiently;
- Think - Creatively;
- Behave - Decently;
- Earn - Honestly;
- Save - Regularly;
- Spend - Intelligently.

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2022] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2022 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'हिन्दी भाषा का सम्मान' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	सुहानी सुराणा, अजेमर (राजस्थान)	24
द्वितीय पुरस्कार-300/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	23.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	मौलिक जैन, जयपुर (राजस्थान)	23
सान्त्वना पुरस्कार (5) - 150/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	साक्षी भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	नमन श्रेणिक छाजेड़, नाशिक (महाराष्ट्र)	22
	काव्य जैन, जोधपुर (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी अक्टूबर, 2022 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर, 2022)

- प्र. 1. भगवान महावीर की क्षमाशीलता के कोई दो उदाहरण लिखिए।
- प्र. 2. "सद्गुणों के विकास से ही मानव महान बनता है।" कथन को स्पष्ट कीजिए।
- प्र. 3. 'सोन पापड़ी' कहानी में निहित सन्देश लिखिए।
- प्र. 4. प्रतिक्रमण में 'इच्छामि ठामि' के पाठ का क्या महत्त्व है ?
- प्र. 5. What activities can we inculcate in our children towards Jain values?
- प्र. 6. आतिशबाजी को समय, शक्ति और धन की बर्बादी क्यों कहा है ?
- प्र. 7. जैनधर्म के अनुसार दीपावली कैसे मनानी चाहिए ?
- प्र. 8. राजा इलंगो के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।
- प्र. 9. बच्चों को डराने की अपेक्षा किस पर अधिक ध्यान देना चाहिए और क्यों ?
- प्र. 10. Make sentences using given each words-spiritual, multiplied, encourage and virtues.

बाल-जिनवाणी [अगस्त-2022] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2022 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	कविश जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	38
द्वितीय पुरस्कार-400/-	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	37
तृतीय पुरस्कार- 300/-	निकिता जैन, मसूदा (राजस्थान)	36
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	सुदर्शन कुमार जैन, चौथ का बरवाड़ा (राजस्थान)	35
	नमन जैन, आवासनमण्डल-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)	35
	हार्दिक भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	35

बाल-जिनवाणी, बाल-स्तम्भ के पाठक ध्यान दें

बाल-जिनवाणी एवं बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रत्येक अंक में दिए जा रहे प्रश्नों के उत्तर प्रदाताओं से निवेदन है कि वे अपना नाम, पूर्ण पता, मोबाइल नम्बर, बैंक विवरण-(खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड, बैंक का नाम इत्यादि) भी साथ में स्पष्ट एवं साफ अक्षरों में लिखकर भिजवाने का कष्ट करें ताकि आपका पुरस्कार उचित समय पर आपको प्रदान किया जा सके। जिन्हें अब तक पुरस्कार राशि प्राप्त नहीं हुई है, वे श्री अनिल कुमारजी जैन से (मो. 9314635755) सम्पर्क कर सकते हैं।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

☎ 7506357533 📞 : 9022786523, 022-26287187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details Is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संचयनिक, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	GOLD MEMBER (RS. 75000)
श्रीमान् मोफतराज जी मुण्णोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्युस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी क्वाड, चैन्नई। श्रीमती इन्द्राबाई सूरजमल जी भण्डारी, चैन्नई (निमाज-राज.)।	श्रीमती पुष्पाबाई सुभाषचन्द्र जी बागरेचा, शिरपुर (महा.)
DIAMOND MEMBER (RS.200000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् प्रकाशचन्द्र जी भण्डारी, हरलूर रोड, बेंगलोर M/s Prithvi Exchange (India) Ltd., Chennai श्रीमान् सुगनचन्द्र सा सरोजाबाई जी मुथा, डबल रोड, बेंगलोर	श्रीमान् वृलीचन्द्र बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् वृलीचन्द्र जी सुरेश जी क्वाड, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नाट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकम्बर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजयकुमार जी मुक्केश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडू। श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, नेहरू पार्क, जोधपुर। श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, अयेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले) श्रीमान् गुप्त सहयोगी, तिरुवल्सुवर (तमिलनाडू)। श्रीमती कंचनजी बापना, श्री संजीव जी बापना, कलकत्ता (जोधपुर वाले) श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जागृति मन्द, हन्वीर (मध्य प्रदेश)
SILVER MEMBER (RS.50000)	
श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोधरा, जलगांव (घोपालगढ़) श्रीमान् अमीरचन्द्र जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती बीना सुरेशचन्द्र जी मेहता, उमरगांव (घोपालगढ़ वाले)। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, जबलपुर श्रीमान् प्रकाशचन्द्र शायरचन्द्र जी मुथा, औरंगाबाद (महा.) श्रीमती लाडकंदर जी धर्मपत्नी श्रीमान् अमरचन्द्र जी साह, विजयनगर, राजस्थान श्रीमान् पारसमलजी सुशीलजी बोहरा, तिरुवन्नमलई (तमिलनाडू) श्रीमान् सिद्धार्थजी भण्डारी, जागृति मन्द, हन्वीर (मध्य प्रदेश)	

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

“छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करके का, लाभ बढ़ा गुरु भाइयों की शिक्षा में सहयोग करके का”

जिनवाणी प्रकाशन की योजना के लाभार्थी बनें

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा जिनवाणी पत्रिका के प्रकाशन हेतु एक योजना प्रारम्भ की गयी है। जिसके अन्तर्गत प्रतिमाह एक-एक लाख रुपये की राशि प्रदान करने वाले दो महानुभावों के द्वारा प्रेषित प्रकाश्य सामग्री एक-एक पृष्ठ में प्रकाशित की जाती है। इसके साथ ही वर्ष भर उनके नामों का उल्लेख भी जिनवाणी में किया जाता है। सन् 2020 की जुलाई से अनेक महानुभाव इस योजना में जुड़े हैं, उन सबके हम आभारी हैं।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से बैंक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप एवं जमाकर्ता का पेन नं., मण्डल कार्यालय को प्रेषित करने की कृपा करें, जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके। 'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है।

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री प्रकाशचन्द्रजी हीरावत, जयपुर (राजस्थान)
- (2) श्री अनिलजी सुराणा, वैल्लूर (तमिलनाडु)
- (3) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (4) श्री प्रेमचन्द्रजी, अजयजी, आलोकजी हीरावत, जयपुर-मुम्बई
- (5) सतीशचन्द्रजी जैन (कंजोली वाले), जयपुर।

वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु लाभार्थी

- (1) श्रीमती शान्ताजी, प्रदीपजी, मधुजी मोदी, जयपुर।
- (2) श्री तेजमलजी, अभयमलजी लोहा, नागौर-जयपुर।
- (3) न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, जोधपुर।
- (4) श्री कनकराजजी कुम्भट, जोधपुर।
- (5) श्री पूनमचन्द्रजी जामड़ (किशनगढ़ वाले), जयपुर।
- (6) श्री सुशीलजी बाफना, जलगाँव।
- (7) श्री सोहनलालजी, गौतमचन्द्रजी हुण्डीवाल, चेन्नई।
- (8) मैसर्स अमरप्रकाश फाउण्डेशन प्रा. लि., चेन्नई।
- (9) श्री सुबाहु कुमारजी, मनोजजी, मनीषजी (सी.ए.) जैन, बजरिया-सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
- (10) श्री श्रीपाल मलजी-श्रीमती मधुजी, श्री चिरागजी-श्रीमती लक्ष्म्याजी सुराणा (नागौर वाले), चेन्नई

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596



CLUB REGALIA

AT NAVKAR CITY



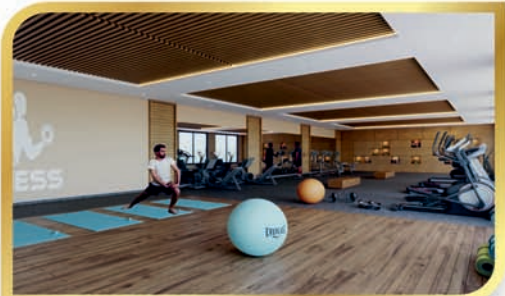
SWIMMING POOL

AMENITIES

- NON-ALCOHOLIC CLUB
- 100%VEGETARIAN CLUB
- INDOOR SQUASH COURT
- SPA & WELLNESS CENTRE
- OUTDOOR SWIMMING POOL
- INDOOR BADMINTON COURT
- MULTI-CUISINE RESTAURANT
- OUTDOOR BANQUET LAWN
- INDOOR BANQUET HALL
- BILLIARDS LOUNGE
- KID'S POOL AREA
- BOWLING ALLEY
- MUSIC ROOM
- LIBRARY
- SALON



KID'S PLAY ROOM



INDOOR GYMNASIUM



8504 000 222



Near DPS Circle, Navkar City, Jodhpur (Raj.)

Disclaimer: Visual representations shown are only informative and indicative of the envisaged developments subject to variation and modification made by the company as approved by the competent authorities



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138





**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with



This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन